आर.एन.आई. नं. 3653/57 डाक पंजीयन संख्या RJ/JPC/M-21/2012-14
मुद्रण तिथि दिनांक 5 से 8 अप्रेल, 2013
वर्ष : 71 ★ अंक : 04 ★ मूल्य : 10 रु.
डाक प्रेषण तिथि 10 अप्रेल, 2013 ★ चैत्र, 2069

ISSN 2249-2011

हिन्दी मासिक

जिनवाणी

गुरुद्वय हीराचन्द्र-मानचन्द्र दीक्षा अर्द्धशताब्दी

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
जयपुर

मंगल-मूल, धर्म की जननी, शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी, फिर प्रगटी यह 'जिनवाणी'॥

जय गुरु हीरा जय गुरु हस्ती जय गुरु मान

नीति और ईमानदारी से प्राप्त धन समाज में प्रतिष्ठा दिलाता है।
- आचार्य श्री हीरा

U TURN
अहिंसा तीर्थ अभियान
मानवीय आहार शाकाहार

बीमारियों को निमंत्रण मांसाहार से

हृदय रोग, किडनी, माइग्रेन तथा अनेकों दोष
मानसिक बीमारियों के मुख्य कारणों में से
एक है मनुष्य का मांसाहारी होना

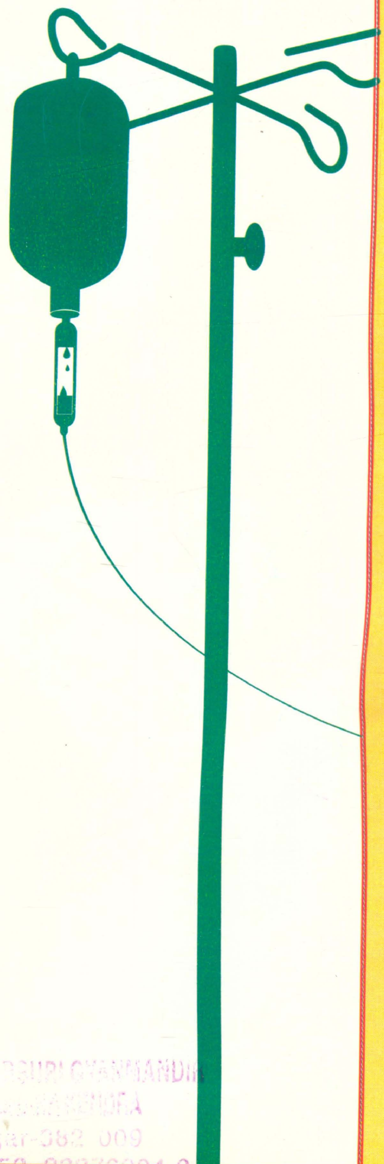

शाकाहार अपनाओ,
संसार में सुख-शांति बरसाओ

रतनलाल सी. बाफना
शाकाहार प्रचारक

रतनलाल सी. बाफना ज्वेलर्स
जलगाव • औरंगाबाद • नासिक

जनहितार्थ प्रकाशित

ACHARYA SRI KAILASSAGARSURI GYANMANDIR
Koba, Gandhinagar-382 009

Jai Guru Heera Jai Guru Hasti Jai Guru Maan

।। जैनं जयति शासनम् ।।

दान से पुण्य होता है, पर संयम से कर्मों की निर्जरा होती है ।
दान हृदय की सरलता है, पर संयम हृदय की शुद्धता है ।।

DP Exports is leading Indian firm specializing in import, export and manufacture of diamonds and jewellery. We offer a wide range of rough diamonds, along with a specialization in the field of manufacturing polished diamonds and jewellery.

timeless jewels
unmatched quality
flawless craftsmanship

Dharamchand Paraschand Exports

1301, Panchratna, Opera House, Mumbai - 400 004. India.
t: +91 22 2363 0320 / +91 22 4018 5000
f: +91 22 2363 1982 email : dpe90@hotmail.com

।। महावीराया नमः ।।

जय गुरु हस्ती

जय गुरु हीरा जय गुरु मान

जिस दिन श्रद्धा जग जायेगी, अनमोल-दुर्लभ परम अंग रूप मानव जीवन को समर्पण करते देर नहीं लगेगी। श्रद्धा है तो प्राण अर्पण भारी नहीं लगेगा।

-आचार्य श्री हीरा

With Best Compliments From :

S. .D. GEMS &
SURBHI DIAMONDS

Prakash Chand Daga

Virendra Kumar Daga (Sonu Daga)

202, Ratna Deep, Behind Panchratna, 78- J.S.S. Road, Mumbai- 400 004
Ph. : (O) 022-23684091, 23666799 (R) 022-28724429
Fax : 022-40042015 Mobile : 098200-30872
E-mail : sdgems@hotmail.com

Jai Guru Hasti

Jai Guru Heera *Jai Guru Maan*

व्यसनी से उसी प्रकार बचना चाहिये, जिस प्रकार छूत के रोगी से बचा जाता है।

- आचार्य श्री हीरा

With Best Compliments from :

Basant Jain & Associates, Chartered Accountants
BKJ & Associates, Chartered Accountants
BKJ Consulting Private Limited
Megha Properties Private Limited
Ambition Properties Private Limited

601, Dalamal Chambers, New Marine Lines, Mumbai-400020

बसंत के. जैन

अध्यक्ष : श्री जैन रत्न युवक परिषद, मुम्बई

ट्रस्टी : गजेन्द्र निधि ट्रस्ट

Tel. : (O) 22018793, 22018794 (R) 28810702

जिनवाणी हिन्दी-मासिक

卐 **संरक्षक**
अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ
घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.), फोन-2636763

卐 **संस्थापक**
श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़

卐 **प्रकाशक**
विनयचन्द डागा, मंत्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
दुकान नं. 182-183 के ऊपर, बापू बाजार,
जयपुर-302003(राज.)
फोन-0141-2575997, फैक्स-0141-2570753

卐 **प्रधान सम्पादक**
प्रो. (डॉ.) धर्मचन्द जैन
श्रीमती शरदचन्द्रिका मुणोत सामायिक-स्वाध्याय
भवन, नेहरू पार्क, जोधपुर-342003 (राज.)
फोन : 0291-2626279
E-mail : jinvani@yahoo.co.in

卐 **सह-सम्पादक**
नौरतन मेहता, जोधपुर
डॉ. श्वेता जैन, जोधपुर

卐 **भारत सरकार द्वारा प्रदत्त**
रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57
डाक पंजीयन सं.-RJ/JPC/M-21/2012-14
ISSN 2249-2011

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

जे केई सरीरे सत्ता,
वण्णे रूवे य सव्वसो।
मणसा कायवक्केणं,
सव्वे ते दुक्खसंभवा।।

-उत्तराध्ययन सूत्र, 6.12

जो इस शरीर में मूर्च्छित होकर,
मन-वचन-काय से प्रीति धरें।
वर्ण-रूप में सर्वभाव से,
मोहित हो दुःख की वृद्धि करें।।

अप्रेल, 2013
वीर निर्वाण संवत्, 2539
चैत्र, 2069

वर्ष 71 अंक 4

सदस्यता शुल्क

त्रिवार्षिक : 250 रु.	स्तम्भ सदस्यता : 21000/-
आजीवन देश में : 1000 रु.	संरक्षक सदस्यता : 11000/-
आजीवन विदेश में : 12500 रु.	साहित्य आजीवन सदस्यता- 4000/-

एक प्रति का मूल्य : 10 रु.

शुल्क भेजने का पता- जिनवाणी, दुकान नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-03 (राज.)
फोन नं.0141-2575997, 2571163, फैक्स : 0141-2570753, E-mail:sgpmandal@yahoo.in
ड्राफ्ट 'जिनवाणी' जयपुर के नाम बनवाकर उपर्युक्त पते पर प्रेषित किया जा सकता है।

मुद्रक : दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जयपुर, फोन- 0141-2562929

नोट- यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो।

विषयानुक्रम

सम्पादकीय-	सामूहिक रात्रिभोज का औचित्य?	-डॉ. धर्मचन्द जैन	7
अमृत-चिन्तन-	आगम-वाणी	-संकलित	11
	वाग्वैभव(14)	-आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.	12
प्रवचन-	चार संज्ञाएँ और आर्त्तध्यान-रौद्रध्यान	-आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.	13
	बहरेपन का सदुपयोग	-आचार्यप्रवर श्री आनन्दऋषि जी म.सा.	19
	विनय से जीतें अहंकार को	-आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.	20
अमृत-महोत्सव-	प्रकाशमान संयमतीर्थ आचार्य श्री हीरा	-मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनिजी म.सा.	31
	आचार्य हीरा के विविध अभियानों में प्रमुख है सामूहिक रात्रिभोज का त्याग	-डॉ. धर्मचन्द जैन	26
प्रासङ्गिक-	अपरिग्रह सिद्धान्तः सामाजिक न्याय का अमोघ मंत्र	-डॉ. कमलचन्द सोगानी	35
	तीर्थंकर महावीर का मानवजाति को अवदान	-डॉ. दिलीप धींग	39
संगोष्ठी-आलेख-	समतावादी समाज-संरचना में जैन श्रावक-व्रतों की भूमिका	-डॉ. जिनेन्द्र जैन	45
दीक्षा अर्द्धशती -	गुणसमुद्र आचार्य श्री हीरा	-श्रीमती अंशु संजय सुराणा	56
	व्यसन-फैशन के त्याग की प्रेरणा	-श्रीमती शांता नाहर	94
अंग्रेजी-स्तम्भ-	Significance of the six Avashyakas (essentials)(3)	-Dr Priyadarshana Jain	59
तत्त्व-बोध-	जिज्ञासा-समाधान	-संकलित	75
युवा-स्तम्भ-	धर्म एवं पाप का फल	-आचार्य श्री विजयरत्नसुंदरसूरिजी	78
नारी-स्तम्भ-	एक कदम संस्कारशाला की ओर	-श्री पीयूष जैन	82
स्वास्थ्य-स्तम्भ -	स्वर का हमारे जीवन पर प्रभाव	-डॉ. चंचलमल चोरडिया	84
बाल-स्तम्भ -	किशोर मन की जिज्ञासाएँ (3)	-श्री मनोहरलाल जैन	91
कविता/गीत-	ज्यूं चमके चाँद सितारा	-श्रीमती एस. उषा चोरडिया	18
	जीवन-बोध क्षणिकाएँ	-श्रद्धेय श्री यशवन्त मुनि जी म.सा	34
	युगद्रष्टा आचार्यश्री हस्ती गुणगान	-पूज्य आचार्य श्री विजयराज जी म.सा.	38
	महावीर अपने भक्तों का, यह हाल देख लीजिये	-श्री मोहन कोठारी 'विनर'	44
	वीर प्रभु जयन्ती मनाते चलो	-श्री शशि कुमार बोहरा	58
	त्याग के गुण हम गायें	-श्री गणेशमुनि शास्त्री	67
	बिखराव होता है	-श्री मगनचन्द जैन	74
	गुरु हीरा-मान-स्तुति	-श्री राकेश जैन	83
	ज़ोड़ लीजिए	-श्री निर्मलकुमार जामड़	124
विचार-	ज़िन्दगी	-सुश्री रिंकल जैन	55
	लोकोक्तियाँ पूर्णतः सच नहीं होती	-आचार्य श्री कनकनन्दी जी	100
प्रेरक-प्रसंग-	शास्त्रवाचन अमृत है, तो ज़हर भी है	-श्री जशकरण डागा	77
परिचर्चा-स्तम्भ-	संवाद (3)	-संकलित	89
युवक-परिषद्-	आओ स्वाध्याय करें प्रतियोगिता परिणाम(31)	-श्री नमन मेहता	95
श्राविका-मण्डल-	मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता परिणाम(36)	-संकलित	97
साहित्य-समीक्षा-	नूतन साहित्य	-डॉ. धर्मचन्द जैन	101
समाचार विविधा-	समाचार-संकलन	-संकलित	103
	साभार-प्राप्ति-स्वीकार	-संकलित	126

सम्पादकीय

सामूहिक रात्रिभोज का औचित्य?

❖ डॉ. धर्मचन्द जैन

आधुनिक युग में व्यक्ति की व्यस्तता बढ़ती जा रही है। उससे कोई यह कहे कि रात्रि में भोजन करना धर्म की दृष्टि से उचित नहीं, इसलिए तुम रात्रि-भोजन का त्याग कर दो, तो प्रायः सुझाव को वह स्वीकार नहीं करेगा। उसकी दिनचर्या बदल रही है- प्रातः नाश्ता एवं दोपहर बाद दो बजे भोजन करता है, अतः शाम का भोजन रात्रि में ही करना अपनी विवशता मानता है। ऐसा बड़े शहरों की संस्कृति में शुमार होता जा रहा है, जिसका अनुकरण गाँवों के लोग भी करने लगे हैं। इसी प्रकार विवाहादि के समारोहों का आयोजन भी अधिकतर रात्रि में होता है। मुख्य भोज का समय रात्रि में ही प्रारम्भ होता है तथा पचासों और सैकड़ों की संख्या में व्यंजन सजाए जाते हैं। बिठाकर जिमाने की प्रथा समाप्त सी हो गई है। स्वयं जाकर एक प्लेट में विभिन्न सजी टेबलों से कोई भोजन लेकर आता है तो जरूरत से अधिक प्लेट भर लेता है। खड़े-खड़े भोजन करता है। कभी भीड़ में भोजन की प्राप्ति भी मुश्किल लगती है तो कभी पारस्परिक टक्कर से कपड़े खराब हो जाते हैं। पेट में भूख हो न हो व्यक्ति व्यंजनों को देखकर अधिकाधिक व्यंजन चखने और खाने की लालसा में अपने पेट को सज़ा देता रहता है। बैठकर भोजन करने में जो आनन्द आता है तथा जो सन्तुष्टि प्राप्त होती है, वह खड़े रहकर करने में नहीं। जब कोई परोसकर भोजन कराता है तो उसमें परोसने वाले का प्रेम भी अनुभूत होता है, किन्तु पंक्ति में खड़े होकर हर टेबल पर घूमकर कई लोग अनादर पूर्वक भी देर तक भोजन करते रहते हैं।

रात्रि में समय की कोई सीमा नहीं होती, कोई दस बजे, ग्यारह बजे भी विवाह समारोह में भोजन के लिए पहुँचते रहते हैं। आयोजक उनकी सेवा में एवं स्वागत में द्वार पर खड़े रहते हैं। आजकल लिफाफों की भी प्रथा बढ़ गई है। एक जमाना था जब लड़की के विवाह समारोह में गाँव का व्यक्ति अथवा रिश्तेदार प्रेमपूर्वक किसी प्रकार की भेंट दिया करता था, किन्तु आज लड़के का विवाह हो अथवा जन्म-दिन के भोज का आयोजन हो, मकान का मुहूर्त्त हो अथवा शादी की वर्षगांठ, हर आयोजन में रुपयों के लिफाफे देना आवश्यक सा हो गया है। एकाध व्यक्ति ही ऐसे होते हैं जो कुछ उत्सवों एवं आयोजनों में लिफाफा लेने से मना करते हैं। लिफाफों में रखी गई राशि के आधार पर लोगों की क्षमता, प्रेम एवं दृष्टि का मूल्यांकन किया जाता है। कहीं कहीं यह भी देखा जाता है कि हमारे आयोजन में अमुक व्यक्ति ने इतनी राशि का लिफाफा दिया था, हम भी उतनी राशि का

लिफाफा उसे दें। इस सामाजिक स्वरूप में एक ओर जहाँ आयोजक को लिफाफों की आय का लोभ जागा है, वहाँ दूसरी ओर व्यंजनों की संख्या बढ़ रही है।

सामूहिक भोज में प्रति व्यक्ति का खर्च बहुत बढ़ गया है। गाँवों में जहाँ एक व्यक्ति के भोजन का खर्च सौ रुपये आता है वहाँ महानगरों में एक हजार रुपये तक आ रहा है। अधिक एवं स्वादिष्ट व्यंजन खिलाकर प्रशंसा सुनने की अभिलाषा भी प्रायः हर व्यक्ति की रहती है। समाज में प्रतिष्ठा का यह एक आधार बनता जा रहा है कि किसने कितने मधुर, नमकीन, अम्लीय आदि षड् रसों का सेवन कराया है। इस प्रदर्शन में पाण्डाल की विशालता, मंच की सजावट, केटरिंग की व्यवस्था, जगमगाती रोशनी का प्रयोग, महंगी कालीन, सजे-धजे किराए के सेवक आदि को देखकर लोग एक दूसरे के आयोजन की तुलना करते रहते हैं। यह बात सच है कि काली कमाई का पैसा कीर्ति का साधन बनाया जा रहा है। व्यक्ति या तो अपनी सुख-सुविधा बढ़ाने में मुद्रा का व्यय करता है या फिर, अपनी प्रतिष्ठा का संवर्द्धन करने में उसे लगाता है। अपने धन के द्वारा समाज में रचनात्मक कार्य करने से यदि स्वतः प्रतिष्ठा मिलती है तो वह धन का सदुपयोग कहा जा सकता है, किन्तु अल्पकालिक प्रदर्शन एवं आडम्बर में बहाए गए रुपये समाज को दिग्भ्रमित कर उस प्रकार के आकर्षक आयोजन करने की ललक पैदा कर देते हैं।

यही कारण है कि आज समाज में देखा-देखी के कारण अनेक लोग पिसते जा रहे हैं। ऐसे कम ही लोग हैं जो अपनी चादर के अनुसार पैर पसारते हैं। देखा-देखी के चक्कर में वे कर्ज लेकर भी फीकी नहीं लगने देते हैं। इसलिए समाज की सामाजिक प्रणाली इस प्रकार की होनी चाहिए, जिसमें सभी लोगों का सरलता से निर्वाह हो सके। इसलिए सबसे पहले आवश्यकता है व्यंजनों की सीमा अधिकतम 20 तय की जाए, मिठाई की भी संख्या दो-तीन कर दी जाए, इसके साथ ही नियमों का उल्लंघन करने वाले आयोजक के विवाह-भोज में सम्मिलित न होने का संकल्प किया जाए। अलीगढ़-रामपुरा में आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. से जब वार्ता हो रही थी तो उन्होंने उल्लेख किया कि मैसूर में समाज ने नियम बनाया कि सामूहिक भोज में व्यंजन नहीं बनाए जायेंगे, किन्तु किसी धनिक ने समाज की इस मर्यादा की परवाह न करते हुए 18 व्यंजन तैयार करवाए। समाज के अग्रणी लोगों ने जब यह देखा कि यहाँ नियमों का उल्लंघन हुआ है तो समाज में से कोई भी व्यक्ति उस भोज में सम्मिलित नहीं हुआ। इस प्रकार कठोरता से सामाजिक नियमों की पालना करने पर ही समाज अपने लक्ष्य की ओर आगे बढ़ सकता है। आज कई शहरों में नियम बनते हैं और टूट जाते हैं, क्योंकि लोग नियमों के प्रति सजग नहीं हैं तथा अग्रणी भूमिका निर्वाह करने से बचते हैं। प्रत्येक शहर में समाज के चार-पाँच लोगों की ऐसी समिति होनी चाहिए, जो भोजन प्रारम्भ होने से पूर्व इसकी जाँच करे कि सामूहिक भोज का आयोजन समाज के

नियमानुसार हुआ है।

रात्रि के सामूहिक भोज में उपर्युक्त दोष तो हैं ही, कुछ अन्य दोष भी हैं, उनमें एक तो यह कि रात्रिकालीन भोजन में जो भोजन बच जाता है, उसका सदुपयोग नहीं हो पाता है। बहुत सा भोजन प्रातःकाल तक उपयोग योग्य नहीं होता, अतः उसे किसी जरूरतमन्द को न देकर नालियों में बहा दिया जाता है। प्राणदायक कीमती अन्न का इस प्रकार विनाश आर्थिक एवं सामाजिक दृष्टि से तो निन्दनीय है ही, राष्ट्रहित की दृष्टि से भी उसे उचित नहीं कहा जा सकता। नालियों में फैंका गया भोजन नालियों एवं गटर को भी अवरुद्ध करता है तथा छोटे-छोटे जीवों की उत्पत्ति एवं हिंसा का भी निमित्त बनता है।

भारतीय संस्कृति में अन्न को प्राण कहा गया है। यहाँ कण-कण को चुगकर चिड़िया अपना पेट भरती है। जैन परम्परा में तो जिस थाली में भोजन करते हैं उसको धोकर पिया जाता है, फिर उसी परम्परा में सैकड़ों लोगों के पेट भरने योग्य जितना अन्न नालियों में बहा दिया अथवा फेंक दिया जाए तो क्या उसे विवेक युक्त कार्य कहा जाएगा एवं प्रतिष्ठा का माध्यम माना जाएगा? हिंसा के आधार पर प्रतिष्ठा समाज की मूल्यविहीन सोच हो सकती है, जो उसे पतन के गर्त्त की ओर धकेलती है।

रात्रि भोज में सूक्ष्म जीवों का अतिपात होना अथवा उनकी हिंसा होना विद्युत् की रोशनी में स्वाभाविक है। संध्या के समय एवं उसके पश्चात् इन सूक्ष्म जीवों का संचरण बढ़ जाता है, जो भोजन को दूषित करता है तथा भोजनकर्ता को भी हिंसा के दोष से प्रदूषित करता है। जैन धर्म में जहाँ अहिंसा का सूक्ष्म विवेचन है वहाँ धार्मिक दृष्टि से सामूहिक रात्रि-भोज को तथा रात्रि में बने भोजन को कदापि उचित नहीं कहा जा सकता।

आध्यात्मिक दृष्टि से जैन धर्म कहता है कि सभी जीव चेतनाशील हैं। ज्ञान, दर्शन से युक्त हैं तथा जीना चाहते हैं, अतः उनके प्रति मनुष्य को आत्मवद् भाव रखकर उनकी रक्षा करनी चाहिए। जैन साधु साध्वी इस हिंसा से बचने के लिए जहाँ पूर्ण साधना करते हैं वहाँ उनके उपासक गृहस्थों का भी कर्तव्य बनता है कि वे भी सामूहिक रात्रि भोज के आयोजन का दृढ़ संकल्प के साथ त्यागकर स्थूल हिंसा से बचते हुए, सभी प्राणियों के प्रति आत्मौपम्य भाव की रक्षा कर सकते हैं। रात्रि-भोजन को स्वेच्छा से स्वीकार करना-जैनत्व का लक्षण नहीं हो सकता, इसलिए सबसे पहले यह धारणा बननी चाहिए कि सामूहिक रात्रि-भोजन को हम स्वेच्छा से बन्द करें तथा दिन के भोजन को अपनाएँ। कुछ दशकों पूर्व शहरों में तथा कुछ वर्षों पूर्व ग्रामों में सामूहिक रात्रिभोजन का प्रचलन नहीं था।

सम्प्रति सामूहिक रात्रिभोज के कई कारण हैं, उदाहरण के लिए रात्रि में सबके आगमन का सम्भावना अधिक रहती है, फेरों का समय रात्रि का होता है, आदि। किन्तु इन कारणों का निवारण संभव है। फेरे रात्रि की बजाय दिन में किए जा सकते हैं। ऐसे उदाहरण

कई समारोहों में देखे भी गए हैं। आवश्यक होने पर दिन के भोज में भी निकट के रिश्तेदार एवं समाज के लोग उपस्थित होते ही हैं। अनावश्यक भीड़ को जुटाना आवश्यक नहीं है। भारत सरकार के एक केन्द्रीय मंत्री ने तो यह भी विचार दिया है कि विवाह समारोह दिन में हो तथा बाराती सीमित संख्या में जाएं एवं मात्र अल्पाहार ग्रहण करें। भारत सरकार द्वारा ऐसी स्थिति लाने से पूर्व ही जैन समाज को दिन के एक समय के भोज को ही स्थान देना चाहिए।

शहरी संस्कृति हो या गाँव की संस्कृति, प्रातःकाल भारी नाश्ता न कर भोजन ही किया जाए तो सायंकालीन भोजन सूर्यास्त के पूर्व किया जाना सम्भव है। यदि व्यक्तिगतरूप से फिर भी यह सम्भव न हो तो कम-से-कम सामूहिक भोज में तो रात्रि में भोजन न किया जाए। दृढ़ संकल्प के समक्ष यह क्रान्तिकारी कदम व्यक्ति को दीर्घकालीन सुफल प्रदान करेगा, इसमें संशय नहीं है। कई लोग रात्रि-भोजन का दैनिक जीवन में त्याग रखते हैं एवं विवाहादि समारोहों के रात्रिभोज की छूट रखकर उसमें सम्मिलित हो जाते हैं, किन्तु यह उचित नहीं है। जब वे सामूहिक रात्रिभोज का त्याग करेंगे तो इससे सामाजिक स्वरूप बनेगा, जिसका समाज पर सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा।

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी महाराज सामूहिक रात्रि-भोज त्याग को जैनत्व की पहचान, अहिंसक आचरण तथा सामाजिक-परिष्कार की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण मानते हैं। इसे सामूहिक स्तर पर अपनाए जाने से समाज के आमजन को आर्थिक एवं सामाजिक दृष्टि से राहत का अनुभव होगा एवं वे रात्रिभोज के कारण होने वाले विविध खर्चों एवं दोषों से बच सकेंगे। समाज को ऊँचा उठाने का यह भी एक उपाय है कि समाज में होने वाले व्यर्थ खर्चे को रोका जाए तथा उसका उपयोग समाज के शैक्षिक एवं आध्यात्मिक पक्ष को समृद्ध करने में किया जाए।

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. ने पोरवाल क्षेत्र के चौथ का बरवाड़ा, अलीगढ़-रामपुरा, कुश्तला, चोरू, पंचाला, सूरवाल, बजरिया, आदर्शनगर, आवासन मण्डल, सवाईमाधोपुर आदि के जैन श्रावकों के समक्ष जब अपनी बात रखी तो इन ग्राम-नगरों के सभी जैन गृहस्थों ने अपने हस्ताक्षरों के साथ आचार्यप्रवर की सेवा में यह संकल्प प्रस्तुत किया कि वे लोग न तो विवाहादि में सामूहिक रात्रिभोज का आयोजन करेंगे और न ही उसमें सम्मिलित होंगे। आधुनिक युग में पोरवाल समाज के सैकड़ों गृहस्थों द्वारा ऐसा संकल्प सामाजिक, धार्मिक, आध्यात्मिक, आर्थिक एवं नैतिक दृष्टि से सराहनीय कदम है। आचार्यप्रवर हीरा की प्रेरणा आदेशवत् स्वीकार कर पोरवाल समाज अपनी पूर्व परम्परा के गौरव को पुनः स्थापित कर रहा है तथा सम्पूर्ण भारत में गौरवशाली जैन समाज के रूप में उभर रहा है, यह प्रमोदकारी है, क्योंकि इसका लाभ कतिपय वर्षों में समाज के समक्ष स्वतः अभिव्यक्त होने लगेगा। ★

अमृत-चिन्तन

आगम-वाणी

समाधारणता की त्रिसूत्री

प्रश्न- मणसमाहरणयाए णं भन्ते! जीवे किं जणयइ?

उत्तर- मणसमाहरणयाए णं एगग्गं जणयइ। एगग्गं जणइत्ता नाणपज्जवे जणयइ। नाण-पज्जवे जणइत्ता सम्मत्तं विसोहेइ, मिच्छत्तं च निज्जरेइ।।

प्रश्न- वयसमाहरणयाए णं भन्ते! जीवे किं जणयइ?

उत्तर- वय-समाहरणयाए णं वय-साहारण-दंसण-पज्जवे विसोहेइ। वय-साहारण-दंसण-पज्जवे विसोहेत्ता सुलह-बोहियत्तं निव्वत्तेइ, दुल्लह-बोहियत्तं निज्जरेइ।।

प्रश्न- काय-समाहरणयाए णं भंते! जीव किं जणयइ?

उत्तर- काय-समाहरणयाए णं चरित्त-पज्जवे विसोहेइ। चरित्त पज्जवे विसोहेत्ता अहक्खाय-चरित्तं विसोहेइ। अहक्खाय-चरित्तं विसोहेत्ता चत्तारि केवलिकम्मंसे खवेइ। तओ-पच्छा सिज्झइ, बुज्झइ, मुच्चइ, परिनिव्वाएइ, सव्वदुक्खाणमंतं करेइ।।

पद्यानुवादः-

भन्ते! मन आगम-भावों में, धारण कर प्राणी क्या पाता?
श्रुत में मन को स्थिर करने से, एकाग्रभाव थिर हो जाता।।
पा करके एकाग्रभाव वह, ज्ञान-पर्यवों को पाता।
जिससे सम्यग्-दर्शन विशुद्ध हो, मिथ्या-दर्शन हट जाता।।
भन्ते! स्वाध्याय निरत वाणी से, प्राणी क्या जग में पाता?
वाक्-साधारण-दर्शन-पर्यव को, विशुद्ध है कर जाता।
दर्शन-पर्यव को कर विशुद्ध, वह सुलभबोधिता पा लेता।
दुर्लभ-बोधि-कर्म निर्जर कर, भव-अटन अल्पतम कर देता।।
भन्ते! कायिक समाधारणा, से प्राणी क्या है पाता?
संयम में काया-धारण से, चारित्र-शुद्धि है कर पाता।
वीतराग-पद पा करके, फिर यथाख्यात शोधन करता।
जिससे केवलिसत्क चतुष्टय, कर्मों का क्षय कर देता।
फिर बनता है शुद्ध, बुद्ध, पद मुक्त अन्त में है पाता।
पाता पद निर्वाण अन्त में, अन्त दुःखों को कर जाता।

-उत्तराध्ययन सूत्र, उनतीसवाँ अध्ययन, सम्यक्त्व पराक्रम, गाथा-56-58

अमृत-चिन्तन

वाग्वैभव (14)

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.

- दोषों की शुद्धि करने के लिए प्रतिक्रमण आवश्यक है।
- स्वभाव से परभाव में जाना अतिक्रमण है, परभाव से पुनः स्वभाव में लौटना प्रतिक्रमण है।
- भूलें तीन प्रकार की हैं- अज्ञानजन्य अज्ञात भूलें, आवेशपूर्ण भूलें एवं योजनाबद्ध भूलें।
- प्रतिक्रमण बिना जानकारी के किया जाए तब भी स्वाध्याय है।
- एक-दूसरे की स्वतंत्रता में बाधक नहीं बनकर अपनी चर्या कायम रखना अनुशासन है।
- जहाँ छलना की जाती है, वहाँ उद्दण्डता है। अपनी गलती स्वयं स्वीकार करे, यह अनुशासन है।
- "वरं मे अप्पा दंतो" अपना अनुशासन खुद करो।
- तृष्णा और असन्तोष के भाव दुःख के कारण हैं।
- जैसा भी है मेरा पुत्र है, जैसी भी है मेरी घरवाली है, मेरी पुत्रवधू है, सबके प्रति सहिष्णुता के भाव, सद्भाव रखने चाहिये।
- ग्रहण किये हुए व्रतों के पालन में जो कष्ट, पीड़ा या संकट आते हैं, उन्हें समभावपूर्वक सहन करने का नाम है परीषह।
- कर्मों को समता के साथ भोगेंगे तो नये कर्मों से बचे रहेंगे।
- जड़ और चेतन का भेद ज्ञानी करता है।
- जिन्हें अहं न छुए, वे सच्चे साधक कहलाते हैं।
- मोक्ष-मार्ग में ज्ञान और क्रिया रूपी दोनों पैर बराबर बढ़ते रहने चाहिये। एक में अधिकता और दूसरे में न्यूनता होगी तो साध्य प्राप्त नहीं हो सकेगा।
- आचरण पक्ष दुःख-दुविधा झेलने की शक्ति से निखरता है।
- कषायों का शमन करना सबसे बड़ा व्रत है।
- सुनने वाले करोड़ों हैं, ग्रहण करने वाले लाखों हैं, चिन्तन करने वाले सैकड़ों हैं, पर जीवन में उतारने वाले सैकड़ों भी नहीं हैं।
- जब अन्तरंग में सहज सरलता होती है, वहाँ धर्म टिकता है।

-हीरा प्रवचन-पीयूष भाग-3 से संकलित : श्री पी. शिखरमल सुराणा, चेन्नई

प्रवचन

चार संज्ञाएँ और आर्त्तध्यान-रौद्रध्यान

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा.

चार संज्ञा

जैन आगमों में बताया है कि प्राणी में चार प्रकार की भावनाएँ प्रबल होती हैं, जिन्हें संज्ञा कहा है- आहार संज्ञा, भय संज्ञा, मैथुन संज्ञा और परिग्रह संज्ञा। स्थानांग (4.4) में कहा है- **चत्तारि सण्णाओ - आहारसण्णा, भयसण्णा, मेहुणसण्णा, परिग्गहसण्णा।**

सामान्यतः हर एक संसारी प्राणी में ये चार प्रकार की संज्ञाए पाई जाती हैं, किन्तु किसी-किसी में किसी विशेष संज्ञा की प्रबलता होती है। जिस प्राणी में आहार संज्ञा की प्रबलता होती है, उसमें आहार-सम्बन्धी लालसा तीव्र होती है, वह सतत भोजन-सम्बन्धी चिंतन करता रहता है, अमुक प्रकार का स्वादिष्ट रसयुक्त भोजन करता है। अतः कहता है- ''अमुक मसाले मिलाओ, अमुक चीज लाओ।'' वह वस्तुओं के रसों के नाना प्रकार के संयोग मिलाकर उन्हें स्वादिष्ट बनाकर खाने का शौकीन होता है, जब तक स्वादिष्ट भोजन नहीं मिलता, उसकी चिंता करता है, और मिल जाता है तो बड़ी गृद्धि और लोलुपता के साथ खाता है। भोजन करते-करते उसकी भावधारा इतनी आर्त्तध्यान में डूब जाती है कि वह अनेक कर्मों का बंध कर लेता है। आर्त्तध्यान से रौद्र ध्यान भी उत्पन्न हो जाता है। लेकिन प्रारम्भ इसका आर्त्तध्यान से होता है- ''प्रारम्भ में मनुष्य भूख से छटपटाता है, भूख हो तो कोई बात सुहाती नहीं है।''

आप देखते हैं- कभी-कभी बच्चा खाने की किसी वस्तु के लिए हठ पकड़ लेता है, चॉकलेट या बर्फ के लिए जिद्द पकड़ लेता है तो रोने लगता है, हाथ-पाँव पटकता है, मिट्टी में लोटने लग जाता है- फिर उसे कोई चीज लाकर दो, तब भी नहीं लेता, फैंक देता है, पहले वस्तु की प्राप्ति की तीव्र इच्छा को आहार की संज्ञा दी, अब इसमें क्रोध भी आ मिला, आर्त्तध्यान के साथ रौद्रध्यान की भावनाएँ आने लग गई, वह रूठकर कभी-कभी घर से भाग जाता है, सिर फोड़ लेता है, कपड़े फाड़ लेता है और अनेक प्रकार की हानि करने लग जाता है।

इसी प्रकार भय संज्ञा भी प्रारम्भ में आर्त्तध्यान का रूप ग्रहण करती है। प्राणी भय के मारे डरता है, कांपने लगता है, अपनी जान बचाने की चिंता करता है, किन्तु आगे जाकर जब बचाव का कोई उपाय नहीं देखता, तो रौद्र बन जाता है। सोचता है, अमुक मुझे मार रहा है और बचने का कोई उपाय नहीं है। तो उसे मारकर ही मरना चाहिए, इस प्रकार के

रौद्र संकल्प से भयभीत व्यक्ति उल्टा आक्रमण करता है। कई बार देखते हैं- सांप उछल कर मनुष्य को काट लेता है। सपेरे लोग कहते हैं- ''सांप मनुष्य से डरता है, वह पहले नहीं काटता, उसे तो अपनी जान बचाने की चिंता रहती है, किन्तु जब उसे लगता है कि मनुष्य मुझे मारने आ रहा है, तब वह उछलकर उसे काटता है।'' तो पहले भय आर्त्तध्यान का रूप था, आगे जाकर रौद्र ध्यान का रूप धारण कर लेता है।

इसी प्रकार मैथुन संज्ञा है। काम से पीड़ित मनुष्य प्रारम्भ में उस वस्तु को प्राप्त करने के लिए सोच करता है, उसके वियोग में तड़पता है। अतः आचारांग में कहा है- **''कामकामी खलु से अयं पुरिसे, सोयइ झूरइ, तिप्पइ परितप्पइ।''**

रामचरित्र में आता है कि सीता को प्राप्त करने की चिन्ता में रावण रात-दिन चिंतित रहता था। उसका रूप विद्रूप हो गया। शोक में डूबे रहने से उसका मुख विवर्ण हो गया, तेज लुप्त हो गया। उसे बस एक ही ध्यान था। सीता के साथ कैसे सुख भोगूँ? उसे कैसे अपने अनुकूल करूँ? आज भी सुनते हैं कई मजनूं ऐसे होते हैं, जो अपनी किसी प्रेमिका को प्राप्त करने का प्रयत्न करते हैं, और प्रयत्न में सफल न होने पर ज़हर खाकर मर जाते हैं, गाड़ी के नीचे सोकर खत्म हो जाते हैं। ये आर्त्तध्यान की परिणतियां हैं। ये ही आगे जाकर रौद्र ध्यान का रूप धारण करती हैं, तब फिर मार-काट, संघर्ष, युद्ध और भयंकर नर-संहार होते हैं। कवि ने कहा है- बात युद्ध की तीन हैं, जर, जोरू, जमीन। जर- अर्थात् धन, जोरू यानी स्त्री और जमीन-भूमि। बस संसार में आज तक हुए हजारों युद्धों के कारण खोजने पर प्रायः ये ही तीन प्रमुख कारण सामने आयेंगे। पशुओं में और मनुष्यों में ही क्या, देवताओं में भी मैथुन संज्ञा बड़ी प्रबल होती है। उपनिषद् में बताया है कि प्रजापति ने असुर-सुर और मानवों को तीन 'द' कहे। असुरों से कहा- तुम क्रूर हो, अतः दया करना सीखो, मनुष्यों से कहा- ''तुम्हारे में लोभ की भावना प्रबल है, अतः तुम दान करना सीखो।'' और देवताओं से कहा- ''तुम में इंद्रिय-लोलुपता अधिक है, विषयेच्छा बड़ी तीव्र है, अतः इन्द्रियों का दमन करना सीखो।''

सूत्रों में आता है, देवता भी एक दूसरे की देवी को चुराकर ले जाते हैं। देवी के वियोग में छह छह महीने तक शोक करते रहते हैं। आर्त्तध्यान करते हैं, और फिर एक दूसरे से युद्ध भी करते हैं।

चौथी संज्ञा है-परिग्रह। धन-संपत्ति और वैभव की आसक्ति से युक्त होकर प्राणी अनेक दुःख उठाता आया है। किसी-किसी में यह परिग्रह संज्ञा इतनी प्रबल देखी जाती है कि पास में अपार संपत्ति होते हुए भी वे रात-दिन धन-धन, टका-टका करते रहते हैं। मम्मण सेठ जैसे- जिसके भौंहरे में हीरों-रत्नों के दो-दो बैल खड़े हैं, फिर भी अंधेरी

अमावस्या की बरसाती रात में नदी के किनारे जाता है, और बाढ़ में आई उफनाती नदी में से लकड़ियाँ बीन-बीन कर सिर पर गट्ठर बांध कर लाता है, उन्हें बाजार में बेचकर कौड़ी-कौड़ी जोड़ता है। उससे करता क्या है? पेट नहीं भरता है? पेट भरने के लिए तो कोई कमी नहीं है। किन्तु उस एक बैल का सींग पूरा करता है जिसका समूचा शरीर तो हीरों और रत्नों का बन गया है, केवल एक सींग और पूरा हो जाये तो उसकी दो बैलों की जोड़ी तैयार हो जाए। यह परिग्रह संज्ञा का विकट रूप है। परिग्रह की लालसा भी प्रारम्भ में चिन्ता, शोक और आर्त्त की चिनगारी बनकर उठती है और धीरे-धीरे भयानक ज्वाला बनकर रौद्र रूप धारण कर लेती है।

ये चारों संज्ञाएँ प्राणी के मन में मोहनीय एवं वेदनीय कर्म के उदय से उत्पन्न होती हैं, और फिर आर्त्तध्यान के रूप में बढ़ती हैं। आर्त्तध्यान की सीमाओं को लांघती हुई आगे जाकर रौद्र ध्यान का उग्ररूप धारण कर लेती हैं।

समता का स्रोत

आर्त्तध्यान के चौथे भेद में यह बात आपके समक्ष आयी कि विषय-भोग, धन-वैभव आदि की तीव्र अभिलाषा उसकी प्राप्ति की चिंता और प्राप्त हुई सामग्री के संरक्षण की चिंता- इससे समूचा संसार दुःखी हो रहा है। मनुष्य असह्य वेदना, अपमान और भूख-प्यास सहनकर इन भोगों को प्राप्त करता है, और प्राप्त करने के बाद उनके संरक्षण की चिंता करता है- इस प्रकार उसके हाथ में क्या आता है? आप तो वैश्य हैं। एक-एक पाई का हिसाब लगाते हैं। जरा सोचिए! धन कमाने और उसकी रक्षा करने में अधिक समय दुःख का अनुभव होता है या सुख का? सच्चे दिल से यदि हिसाब जोड़ने बैठेंगे कि दुःख अधिक मिला या सुख? तो शायद दुःख का पलड़ा ही भारी रहेगा। उन दुःखों, चिंता और भय के ढेर के सामने सुख तो एक बिन्दु भर नज़र आयेगा और वह भी पता नहीं आयेगा कि नहीं। कभी-कभी धन के वियोग से, घाटा लगने से हार्टफैल होने की घटनाएँ सुनते हैं। कइयों को इतना बड़ा-धक्का लगता है कि बस जीते जी मुर्दा बन जाते हैं। अरे! भाई जिस धन को आपने कमाया है, वह जाते ही आपकी ज़िन्दगी खत्म कर दे, आपके सुख-चैन छीन ले जाए-यह क्या? इतनी ममता, इतनी आसक्ति किस काम की? यह आसक्ति ही तो मनुष्य के प्राण हरती है। विषय-भोग जब छूटते हैं तो मनुष्य अत्यंत कष्ट का अनुभव करने लगता है।

कुमारपाल चरित्र में एक स्थान पर आता है कि कुमारपाल जब राजा नहीं बना था तो सिद्धराज से छिपकर रहता था। वह एक बार किसी जंगल से पार हो रहा था, एक वृक्ष के नीचे विश्राम करने बैठा। उस वृक्ष के निकट ही एक बिल था, उसमें से एक चूहा निकला। चूहे ने मुँह में एक सोने की मोहर दबा रखी थी। वह बाहर आया, इधर-उधर देखा और उस

मोहर को रखकर फिर भीतर गया और फिर एक मोहर लाया। कुमारपाल बैठा-बैठा देख रहा था कि यह क्या तमाशा है? चूहा भीतर जाता है और एक मोहर लेकर बाहर निकल आता है। उन मोहरों का ढेर लगाता है, फिर उन मोहरों के ढेर पर बैठकर नाचता है, उछलता है, पाँव ऊँचे कर के जैसे आनन्द विभोर हो रहा है। थोड़ी देर उछल-कूद कर भीतर जाता है, फिर बाहर आता है और फिर भीतर जाता है।

कुमारपाल के मन में आया- इस चूहे के पास कितना खजाना भरा है, देखूँ जरा? वह उठा और उन मोहरों को गिना। इक्कीस मोहरें थी, कुमारपाल ने उनमें से बीस मोहरें उठाकर अपने पास छिपालीं और दूर जाकर छिपकर चूहे की प्रतिक्रिया देखने लगा। चूहा भीतर से निकला, देखा- "मोहरें गायब! उद्भ्रांत-सा हो गया। इधर-उधर भटकने लगा, सिर पटकने लगा, पाँवों से सिर पीटने लगा और थोड़ी देर पागल-सा हुआ भटकने के बाद वहीं खत्म हो गया।" चूहे की यह दशा देखी तो कुमारपाल पश्चात्ताप करने लगा। सोचा- "अहो! मैंने हास्य विनोद के लिए इस चूहे को कितनी पीड़ा और संताप पहुँचाया है? यह अपने धन की क्षति देखकर पागल होकर मर गया। इसकी हत्या का निमित्त मैं बना हूँ।" सम्राट् बनने के बाद उसने आचार्य हेमचन्द्र से इस हिंसा का प्रायश्चित्त भी लिया और इस घटना की स्मृति में वहाँ एक 'मूषिका विहार' का निर्माण भी करवाया।

मैं बता रहा था कि मनुष्य और देव ही क्या, तिर्यंच में भी अपनी वस्तु का मोह कितना तीव्र होता है कि उसका वियोग होने पर वह छाती पीट कर मर जाता है। तो इस तीव्र आकांक्षा या लालसा के वश जो आर्त्तध्यान होता है, मन पीड़ा और वेदना से संत्रस्त होता है, उससे बचने का कोई उपाय भी है या नहीं? यह प्रश्न भी हमारे सामने आता है। यद्यपि यहाँ आर्त्तध्यान का ही वर्णन है और उससे चारों भेदों पर विस्तार के साथ विचार भी किया गया है। उसी के अन्तर्गत हमें यह विचार भी करना है कि विषय भोग की लालसा कैसे कम की जाय, उसके वियोग की चिंता का भार हलका कैसे हो, जब वह छूटे तो हमारा मन उससे दुःखी न हो, इसका क्या उपाय है?

इन तीनों रोगों की एक दवा है-समता। मन में यह चिन्तन किया जाये कि संसार में भोग्य पदार्थ असीम हैं, कोई भी व्यक्ति उन सब को प्राप्त करके भोग नहीं सकता, अतः जो प्राप्त हुआ है अथवा पुण्य संयोग से जो प्राप्त हो जायेगा, उसी में संतोष किया जाये और विषय-तृष्णा को शांत किया जाय। यह पहला चिन्तन हो।

भौतिक वस्तु नश्वर है, जो काम-भोग प्राप्त हुए हैं। वे क्षीण भी होंगे- क्योंकि पुद्गल का स्वभाव ही है- गलन-मिलन। जो आता है वह जाता है। वस्तु का संयोग होगा तो वियोग भी होगा। फिर वियोग पर चिन्तित क्यों होना- यह तो स्वाभाविक क्रम है। इसे चक्रवर्ती और तीर्थंकर भी नहीं बदल सकते। यह दूसरा चिन्तन हो।

भोग सामग्री छूटने पर मन को दुःख न हो। इसका उपाय है हम पहले ही उसे छोड़ दें। जो वस्तु जाने वाली है, उसे पकड़कर रखने का प्रयत्न नहीं करें, किन्तु उसका सदुपयोग किया जाय। धन आया है वह जायेगा, किन्तु आप यदि उसका सदुपयोग कर लेंगे उससे कोई सत्कार्य कर लेंगे तो आपके मन को शांति प्राप्त होगी। आप सोचेंगे- ''चलो इस क्षण भंगुर धन से एक महान कार्य हो गया।'' इस प्रकार प्राप्त काम-भोगों को सत्कर्म का साधन बनाया जाय, और उसे सत्कर्म में व्यय किया जाय।

कहते हैं, अमरीका का धनकुबेर राकफेलर पहले बहुत ही चिड़चिड़ा, चिंताशील और धन का अत्यन्त लोभी था। एकबार उसका कोई जहाज अन्न से भरा हुआ कहीं जा रहा था। वह जहाज समुद्र में तूफान से घिर गया, राकफेलर को समाचार मिला तो वह अर्ध विक्षिप्त होकर अपने साझीदार के पास दौड़ा। घबराये हुए राकफेलर को साझीदार ने सान्त्वना दी, पर उसका दिल नहीं शान्त हो रहा था तो उसने कहा- ''आओ चलें, नौका में बैठकर कुछ देर दिल बहला लेवें। इस पर राकफेलर चिढ़ उठा और कहा- ''मेरी तो जान जा रही है और तुम ऐसे समय में भी नौका विहार की बात करते हो'' साझीदार ने उसे बहुत सान्त्वना दी। कहते हैं इस स्वभाव के कारण अपार संपत्ति होते हुए भी वह कभी चैन की नींद नहीं सो सका। कभी सुख से खाना भी नहीं खा सका और जवानी में भी उसके शरीर की हालत यह हो गई कि साठ-सत्तर वर्ष का जर्जर बूढ़ा दिखने लगा। वह स्वयं भी यह सोचता कि मैं अब ज्यादा दिन नहीं जी सकूँगा। किन्तु उसकी स्थिति में एक दिन आमूलचूल परिवर्तन आ गया। डेल कार्नेगी नामक एक प्रसिद्ध मानस-चिकित्सक ने उसकी अन्तर-वृत्तियों की परीक्षा की। धीरे-धीरे उसके स्वभाव में परिवर्तन लाने की चेष्टा की। धन से उसकी आसक्ति हटने लगी। वह दान करने लगा, गरीबों को बांटता, असहायों को देता। अनेक शिक्षण संस्थाओं में धन लुटाता और इस दानवृत्ति के कारण उसके जीवन में आनंद एवं प्रसन्नता चमकने लगी। उसका स्वास्थ्य सुधरने लगा और वह जवानी में बूढ़ा दीखने वाला बुढ़ापे में फिर नई जवानी का अनुभव करने लगा। संसार प्रसिद्ध 'राकफेलर फाउंडेशन' नाम से कई करोड़ डालर की संपत्ति से उसने स्थापना की जिससे शिक्षा, विज्ञान एवं सेवा-चिकित्सा कार्यों में आज भी प्रतिवर्ष करोड़ों रुपये खर्च किये जाते हैं।

यह वर्तमान संसार का ही एक उदाहरण है कि आर्त्तध्यान के कारण जिसका जीवन अत्यन्त नीरस और दुःखमय बन गया था, उसी हृदय में जब दान के संकल्प जगे, सेवा की भावना उठी तो उसका जीवन ही बदल गया। चिंताएँ काफूर हो गईं और सुख का स्वर्ण प्रभात सामने हंस उठा।

बंधुओं! मैंने बताया था कि आर्त्तध्यान को विजय करने का यही उपाय है कि हम

अपनी मनोधारा को दूसरा मोड दे दें। धन पर से अपनी ममता कम कर दें, संसार के लिए, जीवदया के लिए, ज्ञान के प्रसार के लिए, दुःखी एवं संतप्त जीवों की पीड़ा मिटाने के लिए उसका उपयोग करना सीखें।

विषय सामग्री की अल्पता में भी सुख का अनुभव किया जा सकता है। पूणियां श्रावक का जीवन-दर्शन हमारे सामने है। धन के अभाव में भी मनुष्य समभाव रखकर शांति एवं सुख प्राप्त कर सकता है, तथा धन का सद्भाव होने पर उसका सत्कर्म में उपयोग करके उसकी चिंता से छुटकारा पा सकता है।

इस प्रकार आर्त्तध्यान के चार भेद आपको बताये गये हैं। इनके कारणों को आपने समझा है, और उसके निवारण का संक्षिप्त उपाय भी साथ में बताया गया है। निवारण के विशेष उपाय की चर्चा यथावसर की जाएगी।

ज्यूं चमके चाँद सितारा

श्रीमती एस. उषा चोरडिया

(तर्ज:- जहाँ डाल-डाल पर ....।)

सौम्यमूर्ति हँसमुख मंडल, ज्यूं चमके चाँद सितारा,
पूज्य हीरा गुरु हमारा, पूज्य मान गुरु हमारा,
संत शिरोमणि महायशस्वी, चिंतामणि रत्न सा प्यारा,
पूज्य हीरा गुरु हमारा, पूज्य मान गुरु हमारा।।

व्यसन-मुक्त हो सारा देश, यह नारा जग को दीना,
इनके नाम में ऐसी बरकत, भर जाये भंडारा-2।
महावीर की बगिया के अंदर ये, चमका अद्भुत तारा,
पूज्य हीरा गुरु हमारा, पूज्य मान गुरु हमारा।।1।।

विश्व-विभूति बन चारों ओर, सौरभता महकायी,
धरती-अम्बर और चाँद-सितारे, जाते इनपे बलिहारी,
आज आपके दीक्षा-दिवस पर, झूमे जग यह सारा,
पूज्य हीरा गुरु हमारा, पूज्य मान गुरु हमारा।।2।।

सौम्यमूर्ति हँसमुख मंडल ज्यूं, चमके चाँद सितारा,
पूज्य हीरा गुरु हमारा, पूज्य मान गुरु हमारा।।

-कार्याध्यक्ष, श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, चेन्नई शाखा

प्रवचनांश

बहरेपन का सदुपयोग

आचार्य श्री आनन्दऋषि जी

एक बहरा वृद्ध व्यक्ति प्रतिदिन एक महात्मा का प्रवचन सुनने जाया करता था। उसके कान में बड़ी कठिनाई से जोर से बोला हुआ एकाध शब्द ही प्रवेश कर पाता था। महात्मा प्रतिदिन उस वृद्ध को बड़े उत्साहपूर्वक सभा में उपस्थित देखते थे। वे जानते थे कि वृद्ध को सुनाई नहीं पड़ता। अतः एक दिन उन्होंने इशारे से वृद्ध को अपने पास बुलाया और खूब जोर से पूछा- ''क्या आपको प्रवचन के शब्द सुनाई पड़ते हैं?''

वृद्ध ने सहज भाव से उत्तर दिया-''नहीं।''

महात्मा ने दूसरा प्रश्न उसी प्रकार से पूछा-''फिर आप प्रतिदिन प्रवचन सुनने के लिए यहाँ आकर क्यों बैठते है।?''

महात्मा के प्रश्न के जवाब में उस धर्मप्रिय व्यक्ति ने बहुत सन्दर उत्तर देते हुए कहा- ''महात्मन्! इस स्थान पर शास्त्र-वाचन होता है तथा जिनवाणी गूँजती रहती है। इसलिए किसी अन्य स्थान पर बैठने की अपेक्षा मुझे यहाँ बैठने से अधिक शान्ति मिलती है।''

''यहाँ बैठने का दूसरा कारण यह है कि शास्त्रों में कहा है-''महाजनो येन गतः सः पन्थाः'' अर्थात् घर के बड़े व्यक्ति जैसा करते हैं, उनकी देखा-देखी परिवार के अन्य व्यक्ति भी वैसा ही करने लगते हैं। यही कारण है कि मेरे यहाँ आने से मेरी पत्नी, पुत्र-पुत्रियाँ आदि सभी प्रतिदिन यहाँ आकर भगवान् की वाणी श्रवण करते हैं। अगर मैं यहाँ आना छोड़ दूँ, तो वे भी नहीं आएँगे। मेरे प्रतिदिन आने के कारण उनके हृदय में भी जिनवाणी एवं धर्मकथा के प्रति श्रद्धा और रुचि बनी रहती है तथा कुछ न कुछ शिक्षा लेकर ही वे लौटते हैं और उससे परिवार का वातावरण शांतिमय बना रहता है।''

''मेरे यहाँ आने का तीसरा कारण और भी है। वह यह है कि भगवान के वचन मैं सुन नहीं पाता, फिर भी उनके स्पर्श से मेरे अंग तो पवित्र होते ही हैं। ठीक उसी प्रकार, जिस प्रकार सर्प का विष मंत्रों से उतारा जाता है। उन मंत्रों को सर्प के द्वारा काटा हुआ व्यक्ति समझता नहीं, फिर भी उनसे शरीर में व्याप्त हुआ विष उतर जाता है। फिर आप ही बताइये क्या मेरा यहाँ प्रतिदिन आना कम लाभदायक है?''

महात्मा उस बहरे, किन्तु ज्ञानवान एवं बुद्धिमान व्यक्ति की बात सुनकर अत्यन्त प्रभावित हुए और मन ही मन उसकी भूरि-भूरि प्रशंसा करने लगे। वृद्धावस्था में इन्द्रियाँ क्षीण होने के बावजूद ज्ञानी और समझदार व्यक्ति अपनी क्षीण इन्द्रियों का भी उचित उपयोग करते हैं। इसी प्रकार कई व्यक्तियों की शारीरिक विकलांगता या कमी उनकी सफलता में बाधा नहीं बनती है।

-सौजन्य : आनन्दतीर्थ प्रतिष्ठान

प्रवचन

विनय से जीतें अहंकार को

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.

आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. द्वारा 30 अगस्त 1996 को महावीर भवन, लाखन कोटड़ी, अजमेर में दिये गये प्रवचन का आशुलेखन श्री धर्मपाल मेहता, अजमेर तथा संपादन श्री पुखराज मोहनोत, जोधपुर द्वारा किया गया है।-**सम्पादक**

संयम-साधना से अष्ट-कर्म-कारा को तोड़कर शाश्वत एवं अविचल पद प्राप्त करने वाले सिद्ध भगवंतों, बाहर-भीतर यथाख्यात चारित्र जैसा कहते वैसा आचरण करने वाले अनन्तज्ञानी अरिहन्त भगवन्तों, संयम की साधना करते हुए समर्पणशील जीवन से श्रद्धा व विश्वास का भाव जगाने वाले संत-भगवंतों के चरणों में कोटि-कोटि वंदन!

तीर्थंकर भगवंत प्रभु महावीर का यह जिनशासन ज्ञान से, श्रद्धा से, संयम व समर्पण की निर्मल भावना से आज भी जयवन्त है। प्रभु की आदेय-अनमोल वाणी से जीवन-निर्माण के जो सूत्र बताए गए हैं, लगभग अढ़ाई हजार वर्ष से अधिक व्यतीत हो जाने पर भी पुरातन नहीं हुए हैं, बल्कि सदा नवीन हैं। जीवन-निर्माण के इन्हीं सूत्रों में एक सूत्र 'विनय' है। प्रभु ने विनय को प्राणी-जीवन के यथोचित निर्माण का प्रथम चरण बतलाया है और सभी सद्गुणों का आधार सिद्ध किया है। बताया है कि जैसे दानदाता की लक्ष्मी प्रशंसित होती है, क्षमाशील व्यक्ति की मधुरवाणी दिल हरण करने वाली होती है, सरल-मना लोगों की सरलता से भरपूर/सराबोर प्रत्येक आचरण मनमोहक होता है, ठीक इन्हीं की तरह विनयशील मानव की हर पल की हर-एक क्रिया जन-जन के मन को मुग्ध करने वाली होती है।

विश्व के समस्त धर्मों में दया को धर्म का मूल माना गया है। विनयी व्यक्ति करुणा व दया को जानने वाला व पालने वाला होता है। बिना दया के विनय नहीं और बिना विनय के दया नहीं हो सकती।

विनयी की भाषा का एक-एक शब्द पल्लवित व पुष्पित पूर्ण खिले हुए सौन्दर्य एवं सौरभयुक्त कमल की तरह होता है। सरोवर में खिले हुए सुगंधित कमल-पुष्पों के चतुर्दिक् रस-लोलुप भंवरे जिस तरह आकर्षित होकर मंडराते रहते हैं, ठीक वैसे ही विनयी व्यक्ति की चित्ताकर्षक बातों के प्रति आस-पास के सभी लोग मुग्ध बने रहकर उसे सुनने के लिए प्रतिपल लालायित रहते हैं।

विनयी की वेशभूषा आकाश में चमकने वाले सूर्य की जैसी शोभा देने वाली होती

है। आभूषण नहीं होते उनके शरीर पर, लेकिन चेहरे की चमक ही आभा देकर व्यक्ति-मात्र को प्रभावित करने वाली होती है। शारीरिक-कांति से वह स्वयं अन्यान्य से बहुत ही अलग, अद्वितीय सौन्दर्य की अनुभूति देने वाला होता है। ये ही वे कारण हैं, जिनसे विनयी व्यक्ति सदैव शांति की अनुभूति करता है और अविनयी सदैव विपत्ति (दुःख) का भागी होता है।

जैसे बातों, कथाओं, उपदेशों में लोकोक्तियाँ हों तो उनकी शोभा में अभिवृद्धि हो जाती है, ठीक वैसे ही व्यक्ति में विनय का गुण हो तो समाज में स्वतः उसकी सज्जनता की शोभा बढ़ती है, प्रतिष्ठा में प्रसार होता है। प्रभु की वाणी को, तीर्थंकरों के उपदेश को विनयी अहोभाव से ग्रहण करने वाला होता है। **'विनयाद् याति पात्रताम्'** से स्पष्ट है कि सीखने व ग्रहण करने की पात्रता विनयी व्यक्ति में ही हो सकती है।

जिसमें विनय नहीं, उसमें रहता है अहं, मान, अभिमान। ऐसा व्यक्ति शिक्षाओं को हृदयंगम करना तो दूर, उसे स्मृति में रखने में भी समर्थ नहीं हो पाता। अपने अंतिम उपदेश में प्रभु महावीर ने उत्तराध्ययन सूत्र में फरमाया है- **"अह पंचहिं ठाणेहिं, जेहिं सिक्खा न लब्भइ। थंभा कोहा पमाएणं, रोगेणालस्सएण वा"** पाँच कारणों से शिष्य (व्यक्ति) शिक्षा प्राप्त नहीं कर सकता। अहंकार, क्रोध, प्रमाद, रोग और आलस्य शिक्षा में बाधक हैं। अहंकार अर्हता नहीं देता। अर्हता के बिना व्यक्ति अर्हं के पथ पर नहीं चल सकता, अर्हं बनने योग्य शिक्षाओं, उपदेशों को धारण नहीं कर सकता।

विनयी व्यक्ति ही कर्म खपाने वाला होता है, क्योंकि-**"विणयमूले धम्मे पण्णत्ते।"** ज्ञाताधर्म में प्रभु कहते हैं- धर्म का मूल ही विनय है। इसी तरह प्रश्नव्याकरण सूत्र में जिनवाणी उद्घोष कर रही है- **'विणयो वि तवो, तवो वि धम्मो'** अर्थात् विनय एक तरह का तप है और आभ्यंतर तप होने से वह श्रेष्ठ धर्म है। स्थानांग सूत्र के टीकाकार भी यही बताते हैं-

जम्हा विणयइ कम्मं, अट्ठविहं चाउंरतमोक्खयं।
तम्हा उ वयंति विउ, विणयं ति विलीणसंसारा।।

विनय आठ कर्मों को दूर करता है। इससे चार गति के अंत रूप मोक्ष की प्राप्ति होती है। इसीलिए सर्वज्ञ सर्वदर्शी प्रभु इसे विनय का नाम देते हैं, विनय कहते हैं।

समस्त सांसारिक जीव आठ कर्मों के कारण ही चारगति -चौरासी लाख जीवयोनि में अनंत काल से संसरण कर रहे हैं। मन-वचन-काय इन त्रियोगों के परिणामों से जीव कर्मबन्ध करता है। समय आने पर अपने बंधे हुए कर्मों का परिणाम जीव को भोगना पड़ता है। क्रोध, मान, माया, लोभ-कषाएँ हैं, जो योगों के परिणाम हैं और ये कषाएँ संसार मे

वृद्धि कराती हैं। स्थानांग सूत्र के माध्यम से विनय द्वारा अष्ट कर्मकारा तोड़ने की, विनयी द्वारा कर्म खपाने की बात आपके सामने रखी गई। इसी स्थानांग-सूत्र के पहले स्थान में प्रभु ने एक सूत्र दिया है- ''कर्म-वेदन'' का। कहा गया है-''एगा वेया''।

वेया अर्थात् वेदना। इसका तात्पर्य है-''कर्म फल का अनुभव करना। शुभ या अशुभ कर्मों के उदय होने पर जीव जिस सुख या दुःख की अनुभूति करता है, वह सुख-दुःख रूप कर्मफल भोगना ही वेदना है। यह जीव संसार में रहता हुआ निरंतर प्रतिक्षण, प्रतिपल ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय आदि आठ कर्मों का वेदन कर रहा है, भोग रहा है और निर्जरा कर रहा है। यदि जीव मिथ्यात्वी है तब भी, सम्यक्त्वी है तब भी, देश विरति श्रावक या सर्वविरति श्रमण है तब भी, इन सभी के निरंतर आठ कर्मों का वेदन (वेद) हो रहा है। जीव के संचित्त कर्म अपनी अवधि पूर्ण होने पर जब पकते हैं तब उनमें अपना फल देने की शक्ति प्रकट हो जाती है। उस शक्ति का व्यक्त होना कर्म का परिपाक है और यही कर्मोदय है। उदय में आकर कर्म अपना फल देकर नष्ट हो जाते हैं। कर्मों का इस प्रकार नष्ट होना ही कर्म की निर्जरा कहलाती है। इस प्रकार जो कर्मों की निर्जरा होती है उससे पूर्व कर्म-फल भोगते समय जीव के परिणामों में जैसे-जैसे भाव रहते हैं, वे भाव नवीन कर्मों का सर्जन करते हैं। इस प्रकार पूर्व के कर्म भोगने और नवीन कर्म जमा करने का यह चक्र निरंतर चलता रहता है, कभी रुकता नहीं।

गुरुदेव एक दृष्टांत फरमाया करते थे। नदी के बहते हुए पानी का दृष्टांत। आपने भी देखा होगा नदी में बहते पानी को। बहते पानी के जलकण प्रतिपल अपना स्थान छोड़कर आगे बढ़ जाते हैं। उनका स्थान पीछे आने वाले नये जलकण ले लेते हैं। पहले जो जलकण बह रहा था, वह दूसरा था। अब जो बह रहे हैं, वे दूसरे हैं। आगामी क्षणों में जो बहेंगे वे भी दूसरे होंगे। जलकण बदल रहे हैं पर जलधारा, नदी का पानी निरन्तर बह रहा है। हमारे कर्मों के उदय और वेदन का क्रम भी इसी तरह निरंतर है अर्थात् पहले भी था, आज भी है और कर्म-कारा टूटती नहीं, उस समय तक यह गतिमान रहेगा। जिन कर्मों का वेदन कुछ समय पूर्व किया, वे कर्म अब नहीं रहे। अब जिन कर्मों का भोग कर रहे हैं, वह भोगना अगले क्षण नहीं रहेगा, अपितु अन्य कर्म अपना फल देंगे और जीव उनका वेदन करेगा, उन्हें भोगेगा।

गाँवों में खेती करने वाले किसान कुओं से पानी निकालने के लिए रँहट चलाते हैं। ज्यों-ज्यों रहट फिरता है, त्यों-त्यों कुएँ में पड़ी घटमाल चलती है। घटमाल में एक के बाद एक बंधे हुए घट पानी कुएँ से लेकर ऊपर आते हैं। ऊपर खाली होकर फिर नीचे जाते हैं। फिर पानी से भरकर ऊपर आते हैं। यह क्रम निरन्तर चलता रहता है। कर्मों का

आवागमन भी इसी प्रकार का है। पीड़ा देने वाले कर्म वेदना का अनुभव कराते हैं। जीव उन कर्मों के फल को भोगता है। कर्मों के फल को भोगते हुए जीव पुनः नवीन कर्मों का बंध करता रहता है। यह क्रम जीवात्मा के साथ निरंतर अनादि-काल से चल रहा है।

तीन योग अर्थात् मन, वचन और काया के परिणामों तथा क्रोध, मान, माया, लोभ इन चार कषायों की तीव्र-मंदता के निमित्त से कर्म पुद्गलों का आत्मा के साथ बंधना कर्म-बंधन है। योग के बिना कर्म जीव की ओर आकर्षित नहीं होता और कषाय के बिना वह आत्मा के साथ ठहर नहीं सकता। बंधे हुए कर्मों में से शुभ या पुण्य कर्म जीव को सुख का वेदन कराते हैं और अशुभ व पाप कर्म जीवों को दुःख की अनुभूति कराते हैं। वेदना का अर्थ है-"अनुभव करना।" उदय का जब तक खयाल रहता है और जब तक कर्मों का उदय है, तब तक वेदना है। जब तक वेदना है, तब तक निर्जरा है। यह जीव कहाँ तक कर रहा है कर्मों का वेदन? कितने गुणस्थान तक होती है-आठ कर्मों की निर्जरा? दसवें गुणस्थान 'सूक्ष्म-संपराय' तक आठों कर्मों का उदय है और निर्जरा है। इसके पश्चात् ग्यारवें गुणस्थान "उपशांत मोहनीय" में मोहनीय कर्म का उपशमन हो जाता है। बारहवें क्षीण मोहनीय नामक गुणस्थान में मात्र सात कर्मों (मोहनीय को छोड़कर) का उदय रहता है। उसके बाद ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय और अंतराय- इन तीनों के चले जाने से केवल अघातिया (वेदनीय, आयुष्य, नाम व गोत्र) कर्म शेष रह जाते हैं।

यदि भेद करने की दृष्टि से कहें तो वेदन के दो भेद किए गए हैं- (1) आभ्युपगमिकी वेदना और (2) औपक्रमिकी वेदना।

आभ्युपगमिकी वेदन में जीव अपने पूर्व में बंधे हुए कर्मों को स्वयं स्वीकार करता हुआ उन्हें उदयावलिका में लाकर उनकी उदीरणा करके उनको भोग लेता है, वेदन कर निर्जरित कर लेता है। उदीरणा का तात्पर्य है- जिन संचित कर्मों का अभी तक उदय नहीं हुआ है, उनको पुरुषार्थ पूर्वक नियत समय से पूर्व फल देने के योग्य कर देना। यह भी कहा जा सकता है कि जो कर्म समय पाकर उदय में आने वाले हैं, उनका विशेष प्रयत्न एवं पुरुषार्थ से उदय में लाकर नष्ट कर देना उदीरणा है। अतः निश्चित है कि इसमें जीवात्मा स्वेच्छया कर्म-वेदन करता है। उदीरणा के लिए तपस्या प्रमुख साधन है। साधक उपवास, बेला, तेला, अट्ठाई, मासक्षमण आदि तप करता है और स्वेच्छा से संचित्त कर्मों को उदय में लाकर भोग लेता है। कितने ही साधक इसके लिए उष्ण-शीत आदि की आतापना लेते हैं। धन्ना-शालिभद्र के चरित्र में आपने सुना होगा। वे सभी तरह से सुखी व सम्पन्न थे, फिर भी घर-परिवार त्यागकर स्वेच्छापूर्वक साधना के लिए बढ़ गए। जिन्हें गृहत्याग से पूर्व जीवन में कभी भूखे रहने या प्यासे रहने का कोई अवसर नहीं मिला था, मुनि बनने के

पश्चात् वे ही आत्म-साधनार्थ अन्न, पानी-रस परित्याग आदि बाह्य एवं स्वाध्याय, ध्यान आदि आभ्यंतर तप करने लग जाते हैं। भूख-प्यास आदि परीषहों के विजेता बन तीव्र शीत व उष्ण आदि की आतापना द्वारा कर्म-वेदन कर कर्मों की निर्जरा करते हैं। ऐसे साधकों का समता, क्षमा, उपसर्ग-विजय, तप, प्रायश्चित्त, प्रतिक्रमण आदि द्वारा पूर्वबद्ध संचित कर्मों को उदय में आने से पूर्व ही भोग लेना आभ्युपगमिकी वेदन है।

दूसरा वेदन औपक्रमिक को बताया गया है। पूर्व में संचित जो कर्म उदय में आते हैं, उन्हें उपक्रम से भोगना औपक्रमिक-वेदन है। पूर्वबद्ध कर्मों के फलस्वरूप उनके उदय में आने पर जीव रुग्ण बन जाता है, शारीरिक व मानसिक पीड़ा भोगता है, किसी भी कारण से कोई अंग कट जाता है, फट जाता है, शरीर के किसी भाग में तीव्र दर्द होता है- ऐसे अनेक तरह से कष्ट सहन करना, दुःख भोगना उपक्रम से कर्म का वेदन करना है।

कुछ लोगों को बीमारी होती नहीं है, पर वे बीमारी या अन्य किसी कष्ट, दुःख, पीड़ा को स्वयं बुलाते हैं। दोस्तों-सहेलियों को बुलाने वाले बहुत से मिल जायेंगे। अनेक व्यक्ति ऐसे भी मिलेंगे जो निमंत्रण देकर वेदना को बुलाते हैं। जान-बूझकर और प्रसन्नता के साथ वेदना को निमंत्रित करते हैं। 'कैसे करते हैं?'- यह भी जान लीजिए। मर्यादा और प्रकृति के विपरीत जब-जब खाया-पीया जाएगा तब-तब रोगादि की वेदना को न्यौता होगा। कुछ लोगों का शरीर मोटा है, वजन बहुत अधिक है, उनकी टांगें ऊपर के शरीर का बोझ तक सहन नहीं कर पाती, फिर भी उन्हें खाने के समय दोनों वक्त चावल चाहिए, आलू चाहिए, बेसन के पकवान चाहिए। वे इनके बिना भोजन में तृप्ति का अनुभव नहीं कर पाते। इन सबके बगैर उन्हें भोजन फीका-फीका और अरुचिकर लगता है। इनके अतिरिक्त कुछ व्यक्ति हैं जो भूख से अधिक और शारीरिक आवश्यकता से ज्यादा भोजन करते हैं। पेट पूरा भरा है, पर कोई स्वादिष्ट वस्तु सामने आ जाती है तो उनसे रहा नहीं जाता। वे उसे खाने से परहेज नहीं कर पाते। उसे खाते हुए वे जरा भी हिचकिचाते नहीं हैं। कुछ लोग ऐसे भी हैं जो असमय में भोजन करने की आदत से मजबूर हैं। उनका खाने के लिए कोई नियत समय नहीं है। देर रात को खाने वाले भी बहुत हैं। दिन व रात में कई-कई बार खाने वाले भी अनेक मिल जायेंगे। देर रात खाकर, खाते ही बिस्तर पर सो जाने वाले भी यहाँ काफी संख्या में होंगे।

ये सभी प्रवृत्ति के विरुद्ध, स्वाद के वशीभूत हो समय-असमय भक्ष्य ही नहीं अभक्ष्य खाद्य-पदार्थों व पेयों का भी सेवन कर लेते हैं। ये हैं वे लोग जो वेदना को बुलाते हैं, न्यौता देते हैं, निमंत्रण भेजते हैं। इसका परिणाम भी वे भोगते हैं। कभी उन्हें अजीर्ण होता है, कभी आफरा आता है, कभी अन्य-अन्य रोग घेरते हैं। कई बार भयंकर पीड़ाएँ

उभर खड़ी होती हैं तो कई बार वे दर्द से बिलबिलाते रहते हैं।

जैसा कि कहा गया था- मन, वचन और काया के परिणामों की धारा के बिना कर्म पुद्गल जीव की ओर आकर्षित नहीं होते और क्रोधादि कषायों की तरतमता के बिना कर्म आत्मा के साथ ठहर नहीं सकते। कर्म आत्मा के साथ जुड़ते हैं, एकमेक होकर ठहरते हैं तभी कर्मबंध होता है। उदय में आकर कर्म के वेदन का, वेदनाओं के प्रकट होने का मुख्य कारण कषाएँ हैं। इन कषायों के वशीभूत बनकर प्राणी कर्मबंध व कर्मवेदन करते हैं। विश्व के समस्त जीवों को यह कषाय का महाभयंकर रोग लगा हुआ है। कषाय में प्रथम स्थान क्रोध का है, पर गौर करने से सही सिद्ध होगा कि क्रोध से भी अधिक अहित मानव का मान करता है। व्यक्ति के क्रोध का तो अन्यान्य को स्पष्ट भान होता है पर मान....? मान की पहचान कठिन है। अहंकार, अभिमान, दर्प, गर्व, घमण्ड, मद आदि पारिभाषिक शब्द हैं मान के। मान के इतने रूप हैं कि उससे बड़े-बड़े साधक भी धोखा खा जाते हैं। क्रोध कड़वा, विषैला ज़हर है पर मान.......? मान मीठा ज़हर है जो व्यक्ति के विनाश का कारण बनकर भी पर्दे में रहता है। वह आत्मा का घात और विनाश करता है, पर इस तरह कि जो कुछ हो रहा है, उसका आभास तक जीवात्मा को नहीं होने देता। **(क्रमशः)**

'स्वप्निका' से अपना स्वप्न करें साकार

अनादिकाल से भवभ्रमण करते भव्य जीव का एक ही स्वप्न है- भव परम्परा का अन्त, अक्षय अव्याबाध सुख, मोक्षस्थान की प्राप्ति। च्यवन, जन्म, दीक्षा, कैवल्य व परिनिर्वाण अनन्त पुण्यशाली तीर्थंकर भगवंतों के मनाये जाते हैं, क्योंकि इनके साथ पुनरावृत्ति नहीं, अनादि की कर्म जंजीरों से मुक्त होने के साक्ष्य हैं, प्रतीक हैं। जिनशासन प्रभावक ज्योतिर्धर आचार्य भगवंतों एवं महापुरुषों के ऐसे प्रसंग भव-परम्परा की समाप्ति से जुड़े हैं। जिनशासन गौरव, आगमज्ञ परमपूज्य आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. एवं पंडितरत्न आत्मार्थी परम पूज्य उपाध्याय श्री मानचन्द्र जी म.सा. की निरतिचार निर्मल संयम-साधना के 50 वर्ष पूर्ति के अवसर पर प्रकाशित 'स्वप्निका' पुस्तिका उन महासाधकों के चरणों में तो समर्पित है ही, साथ ही भव्य जीवों को उनके अनादिकालीन 'स्वप्न' सिद्धि-प्राप्ति की ओर प्रगतिमान करने में प्रेरणा-ज्योति स्वरूप है। इसमें पावन प्रेरणा है- परम इष्ट स्थान पर विराजित महापुरुषों के यशस्वी संयम-जीवन पर गुणाभिनन्दन को, स्वयं छोटे-छोटे ही सही डगर भरते हुए उन आत्मगुणों को विकसाने की, प्रगट करने की। हम आप सब अपने जीवन में इन आत्मगुणों के अर्जन व प्रगटीकरण की ओर बढ़ें, हम अपने 'स्वप्न' को साकार करने की ओर निरन्तर आगे बढ़ें, यही मंगल मनीषा है।

-गुरुचरणरजकृपाकांक्षी ज्ञानेन्द्र बाफना

अध्यक्ष-अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

आचार्यप्रवर से वार्ता

आचार्य हीरा के विविध अभियानों में प्रमुख है सामूहिक रात्रि-भोज का त्याग

डॉ. धर्मचन्द जैन

जिनशासन गौरव, आगममर्मज्ञ पूज्य श्री हीराचन्द्र जी महाराज ने रत्नसंघ के अष्टम पट्टधर के रूप में अपने पूज्य गुरुदेव आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी महाराज के यश को अपनी आचारनिष्ठा एवं लोकोपकारिता से निरन्तर दीप्तिमान बनाया है। विरासत में मिले सामायिक एवं स्वाध्याय के संदेश का संरक्षण करने के साथ आचार्यप्रवर श्री हीरा ने तीन-चार अभियानों को गति प्रदान की है-

1. आचार्यप्रवर ने युवापीढ़ी को व्यसनमुक्त रहने का प्रबल संदेश दिया है। व्यसनों में फंसा व्यक्ति आत्मिक शान्ति एवं धर्म-रसायन के आस्वाद से दूर रहता है तथा आन्तरिक एवं बाह्य विपत्तियों से आतंकित रहता है। अतः मदिरा, जुआ, गुटखा, धूम्रपान, व्यभिचार, चोरी आदि व्यसनों से दूर रहना सबके लिए आवश्यक है। व्यसनों से धनहानि तो होती ही है, चारित्रिक पतन भी होता है। अतः प्रत्येक व्यक्ति व्यसनों से दूर रहे, यह धर्माचरण की प्रथम सीढ़ी है। अतः पूज्य आचार्य श्री जहाँ भी पधारते हैं वहाँ व्यसनों से मुक्ति को अपनी प्राथमिकता में रखते हैं।

2. आचार्यश्री हस्ती की भांति आचार्य श्री हीराचन्द्रजी का भी संकल्प है कि वे प्रतिवर्ष अपनी दीक्षा वय की संख्या जितने आजीवन ब्रह्मचर्यव्रत धारी बनाएँ, किन्तु आचार्यश्री हीरा को इसमें आशातीत सफलता मिली है। आजीवन ब्रह्मचर्य को अंगीकार करने हेतु सैकड़ों दम्पती प्रतिवर्ष संकल्पबद्ध हो रहे हैं। जीवन के उत्तरकाल में पति-पत्नी, भाई-बहिन की भांति संयमी जीवन जीकर आत्मिक उन्नयन में संलग्न हों, आचार्यप्रवर की यह उदात्त भावना रहती है। उनकी इस प्रेरणा में उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी महाराज, साध्वीप्रमुखा श्री मैनासुन्दरी जी महाराज एवं संत-सतीवृन्द का सहकार प्राप्त हो रहा है। कई ऐसे दम्पती हैं जिन्होंने तीस-बत्तीस वर्ष की वय में भी शीलव्रत स्वीकार किया है। काम-विजय का यह सशक्त कदम है।

3. परिवार एवं समाज में समरसता बनाये रखने के लिए पारस्परिक कलह न हो, इसके लिए सहिष्णुता एवं कषाय विजय आवश्यक है। आचार्यप्रवर ने जोधपुर आदि चातुर्मासों में क्रोध न करने का संकल्प करवाकर इस दिशा में एक महत्त्वपूर्ण कदम उठाया था।

4. आचार्यप्रवर का मन्तव्य है कि भावी पीढ़ी को आज के युग में संस्कारशील बनाना अत्यन्त आवश्यक है। संस्कारों की विद्रूपता के कारण व्यक्तिगत जीवन अव्यवस्थित हो रहा है, परिवारों में सामंजस्य न होने के कारण विघटन की स्थिति बन जाती है तथा व्यक्ति व्यसन एवं फैशन में अटक कर जीवन को बर्बादी की ओर ले जाता है। पारिवारिक रिश्तों में भी मिठास समाप्त हो जाती है। धर्म की उन्हें जानकारी भी नहीं होती। इसलिए संस्कारशालाओं अथवा धार्मिक पाठशालाओं की महती आवश्यकता को आचार्यप्रवर प्रतिपादित करते हैं तथा उनकी प्रेरणा से जोधपुर, जयपुर आदि स्थानों में नियमित पाठशालाएँ प्रारम्भ हुई हैं।

5. रात्रिभोजन जैन धर्म के सिद्धान्तों के अनुकूल नहीं है तथा इससे स्वास्थ्य की हानि तो होती ही है आर्थिक दृष्टि से भी व्यक्ति और समाज को बोझा ढोना पड़ता है। इन कारणों को लक्ष्य में रखकर आचार्यप्रवर ने सामूहिक रात्रिभोज त्याग का अभियान चलाया है।

सामूहिक रात्रिभोज के त्याग की प्रेरणा यद्यपि आचार्यप्रवर अनेक शहरों में करते रहे हैं तथा उसका कुछ अंशों में सकारात्मक प्रभाव भी हुआ है। किन्तु जयपुर चातुर्मास के पश्चात् इस वर्ष जब आपने पोरवाल क्षेत्र की ओर कदम बढ़ाये तो आपके मानस पटल में यह भाव अंकित रहा कि इस क्षेत्र में कुछ वर्षों पूर्व तक रात्रि भोजन नहीं किया जाता था, किन्तु अब शहरों की संस्कृति के कारण रात्रिभोजन प्रारम्भ हो गया है। अतः इस प्रथा का निराकरण करना आवश्यक है। आपके दृढ़ संकल्प एवं प्रबल भावना के कारण यह अभियान पोरवाल क्षेत्र में सफलता के चरण चूम रहा है। अलीगढ़-रामपुरा संघ को फाल्गुनी चौमासी पर विराजने की स्वीकृति आचार्यप्रवर ने इसी आधार पर फरमाई कि वहाँ के श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन संघ के सभी सदस्यों ने सामूहिक रात्रिभोज का आयोजन न करने तथा किसी ऐसे भोज में भाग न लेने का लिखित संकल्प आचार्यप्रवर की सेवा में प्रस्तुत किया। यह क्रम चौथ का बरवाड़ा, पांवडेढा, कुश्तला, बजरिया, सवाईमाधोपुर, आदर्शनगर आदि स्थानों के सदस्यों द्वारा भी जारी रखा गया। आज यह अभियान सम्पूर्ण पोरवाल क्षेत्र का अभियान बन गया है।

पूज्य आचार्यप्रवर की इस सफल प्रेरणा को ध्यान में रखकर मैंने पूज्य आचार्यप्रवर से जब वार्ता की तो कुछ और भी तथ्य प्रकट हुए। आचार्यप्रवर से अलीगढ़-रामपुरा में 28 मार्च, 2013 को सम्पन्न वार्ता को यहाँ उपयोगी समझकर प्रस्तुत किया जा रहा है-

सम्पादक- आचार्यप्रवर! आप सामूहिक रात्रिभोज के त्याग की प्रबल एवं सफल प्रेरणा कर रहे हैं। मैं आपसे जानना चाहता हूँ कि आप सामूहिक रात्रिभोज का त्याग आवश्यक क्यों मानते हैं?

आचार्यप्रवर– जैन धर्म अहिंसा प्रधान धर्म है। इसकी हर कार्य पद्धति इसी अहिंसा से नापी तोली जाती है। विश्व के अनेक धर्म मात्र मानव की रक्षा तक सीमित हैं। कई धर्मों में पंचेन्द्रिय पशु-पक्षी आदि जीवों की रक्षा की बात की जाती है, किन्तु छोटे-छोटे एवं विशेषतः एकेन्द्रिय जीवों की रक्षा के सम्बन्ध में जैन धर्म विशिष्ट चिन्तन रखता है। जीवदया के साथ धर्म का घनिष्ठ सम्बन्ध है। जहाँ प्राणिदया नहीं, वह धर्म श्रेष्ठ नहीं हो सकता। श्रेष्ठ धर्म वह है जो सर्वभूत दया की बात करता है। यद्यपि महाभारत आदि में भी रात्रिभोजन त्याग को श्रेष्ठ माना गया है, किन्तु जैन धर्म अहिंसा के बल पर उसे विशेष आवश्यक मानता है। रात्रिभोज में एकेन्द्रिय एवं कुछ त्रस जीवों की हिंसा न चाहने पर भी हो जाती है। अतः धार्मिक दृष्टि से रात्रिभोजन का त्याग अपेक्षित है। जैसे हमें अपना जीवन अभीष्ट है उसी प्रकार एकेन्द्रियादि जीवों को भी उनका जीवन इष्ट है, अतः उनके प्रति आत्मवद्भाव आवश्यक है। यह रात्रि-भोजन त्याग की आध्यात्मिक दृष्टि है। त्याग की दृष्टि से विचार किया जाये तो रात्रि भोजन त्याग एक वर्ष में 6 माह के तप के समान माना गया है। दूसरी ओर यह कर्मनिर्जरा का भी कारण है। क्योंकि रात्रिभोजन त्याग से तत्सम्बन्धी आस्रव का निरोध होता है।

सामाजिक दृष्टि से चिन्तन करें तो भी रात्रिभोज को उचित नहीं कहा जा सकता। क्योंकि समाज में हर व्यक्ति समर्थ नहीं होता। प्रायः सौ घरों में से 80 घर आर्थिक दृष्टि से असमर्थ होते हैं। 20 व्यक्तियों के द्वारा किए गए आयोजनों का अनुकरण अन्य 80 लोगों को भी प्रतिष्ठा के कारण करना पड़ता है। यदि विवाह आदि का आयोजन दिन में हो तो डेकोरेशन का खर्च बच सकता है। यह खर्च अनावश्यक है। दूसरी बात रात्रिभोजन का बचा हुआ खाना किसी को देने में काम नहीं आता, नाली में बहाया जाता है जो नई हिंसा को जन्म देता है। एक ओर भारत में कई लोगों को पेट भरकर भोजन नहीं मिलता वहाँ दूसरी ओर नाली में भोजन को डालना राष्ट्रहित की दृष्टि से भी अनुचित है। दिन में किये गये आयोजन में बचा हुआ भोजन किसी भी जरूरत मंद को दिया जा सकता है। उसको दिया गया भोजन उसकी भूख को मिटाने के साथ पुण्योपार्जन में भी सहायक होता है। अन्न को प्राण कहा गया है– **अन्नं वै प्राणाः।** अतः उसके कण-कण का सदुपयोग होना चाहिए।

परम्परा की दृष्टि से विचार करें तो कुछ दशकों पूर्व बड़ा व्यक्ति वह होता था जो समाज को साथ लेकर चलता था। वह चाहे अरबपति हो, पर अपने भाई की, पड़ौसी की और जाति के लोगों की चिन्ता करता था। पहले लापसी और सीरा दो ही मुख्य मीठे व्यंजन होते थे। वे समाज के अनुसार व्यंजनों की संख्या सीमित रखते थे ताकि हर व्यक्ति का निर्वाह हो सके। उनका चिन्तन रहता था कि सामाजिक आयोजन इस प्रकार के हों कि कोई व्यक्ति उलझन में न पड़े। वे साधर्मी भाइयों की बीमारी में सहायता करते थे तथा बच्चों को पढ़ाने में भी सहयोग देते थे। आज खर्चीले एवं बड़े आयोजनों के कारण आम लोग उलझन में पड़ जाते हैं तथा आयोजन करके कर्ज में दबे रहते हैं। अतः रात्रिभोज के त्याग के साथ दिन के भोज में व्यंजनों की संख्या भी सीमित होनी चाहिए। आज व्यक्ति अपने लिए चार बंगले बना लेता है, किन्तु समाज के लिए कुछ भी नहीं सोचता।

स्वास्थ्य की दृष्टि से विचार करें तो रात्रिभोजन स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। सूर्य के प्रकाश में भोजन का पाचन आसान होता है। जबकि रात्रि में किए गए भोजन और शयन में अधिक अंतराल नहीं होने के कारण वह भोजन वायु विकार को उत्पन्न कर पाचन तंत्र को गड़बड़ा देता है। चिकित्सा शास्त्र के अनुसार भोजन और शयन में तीन-चार घण्टे का अंतराल आवश्यक है। योगशास्त्र में कहा गया है कि रात्रि में हृदय कमल और नाभि कमल संकुचित हो जाता है। अतः रात्रि में पाचन आसान नहीं होता, रोग का हेतु बन जाता है।

भक्ष्य-अभक्ष्य की दृष्टि से विचार किया जाये तो रात्रिभोजन तामसिक होता है, विकार बढ़ाता है। अतः इस दृष्टि से भी रात्रिभोजन त्याज्य है।

सम्पादक- पोरवाल क्षेत्र में प्रवेश पर आपको कैसा लग रहा है?

आचार्यप्रवर- आचार्य भगवन्त (पूज्य हस्ती) के साथ में जब संवत् 2027 में इस क्षेत्र में आया तब यहाँ जैनत्व के पालन को साक्षात् देखा। रात्रि में यहाँ कोई भी पोरवाल जैन भोजन नहीं करता था। जो रात को खाता है वह जैन नहीं हो सकता है, ऐसा हमने यहाँ देखा एवं जाना। समाज में यह बात स्वभावगत देखी कि बालकों के लिए भी यहाँ रात में भोजन वर्जित रहता था। धीरे-धीरे अन्य शहरों की संस्कृति से प्रभावित होने के कारण यहाँ का यह स्वभावगत गुण लुप्त होने लगा। पोरवाल समाज में इस शिथिलता से मन में

खिन्नता हुई कि यह समाज जैनत्व के जिस गौरव की रक्षा कर रहा था, उसे क्यों खोया जा रहा है? इस शिथिलता में सुधार लाने की दृष्टि से इस क्षेत्र में महासतियों के कुछ चातुर्मास भी दिए गए और अब मुझे यह कहते हुए हर्ष का अनुभव होता है कि मेरी मनोभावना पूर्ण हो रही है। समाज सहयोग कर रहा है। तथा स्थान-स्थान पर सामूहिक रात्रिभोज के त्याग के संकल्प लिए जा रहे हैं।

सम्पादक- इस क्षेत्र से आपको क्या आशाएँ हैं?

आचार्यप्रवर- नैतिकता की नींव पर सामायिक स्वाध्याय का आध्यात्मिक महल खड़ा हो, इस अपेक्षा को लेकर आचार्य भगवन्त (पूज्य हस्ती) ने जो अथक प्रयास किए थे उसकी जागृति करने का भाव है।

सम्पादक- आप दूसरा क्या अभियान चला रहे हैं?

आचार्यप्रवर- इस्लाम समाज का हर बच्चा जिस प्रकार नमाज जानता है। ईसाई उपासक अपनी पद्धति की उपासना करता है, इसी तरह 'जिन' का अनुयायी जैन ज्ञानवान हो। इस दृष्टिकोण को लेकर क्रिया में सामायिक एवं ज्ञान में स्वाध्याय का स्थान हो, यह चिन्तन रहता है। यहाँ का हर युवा प्रतिक्रमण का जानकार हो, ऐसी भावना लेकर प्रेरणा कर रहा हूँ। जो प्रतिक्रमण जानता है वह अनेक पापों से बच सकेगा तथा ज्ञानवान स्वाध्यायी बन सकेगा। इस क्षेत्र में कई बालक, श्रावक एवं महिलाएँ प्रतिक्रमण के जानकार हैं, किन्तु मैं चाहता हूँ कि युवक भी प्रतिक्रमण को अर्थ सहित जानें एवं स्वाध्यायी बनें।

आचार्यप्रवर के साथ हुए इस संवाद से यह स्पष्ट है कि पूज्य आचार्य हीराचन्द्र जी को समाज के प्रति पीड़ा है। उनका हृदय समाज के प्रत्येक सदस्य की पीड़ा के प्रति करुणा एवं दयालुता से ओतप्रोत है। वे एक ओर समाज में जैनत्व के प्रति चेतना जागृत करने हेतु सन्नद्ध हैं तो दूसरी ओर समाज के पीड़ित जनों की पीड़ा का हरण करने हेतु तत्पर हैं। वे जैन समाज को अज्ञान अंधकार से दूर कर उसे संयमी, सजग, सम्पन्न एवं कर्त्तव्यनिष्ठ देखना चाहते हैं। उनके प्रवचनों में प्रायः व्यक्ति के स्वभाव में सुधार लाने की प्रेरणा रहती है। उनका जीवन तपे हुए स्वर्ण की भांति दमकता है तथा उनके विचार आत्मोन्नति एवं पारस्परिक समन्वय के प्रति समर्पित रहते हैं। वे समाज के क्रान्तद्रष्टा ऋषि हैं तथा प्रदर्शन एवं आडम्बर के हिमायती नहीं हैं। उन्हें बालकों में संस्कारों के बीजारोपण की चिन्ता है, तो युवकों एवं महिलाओं को व्यसन एवं फैशन से बचने की प्रबल प्रेरणा करते हैं। ■

अमृत जन्म-महोत्सव पर

प्रकाशमान संयमतीर्थ आचार्य श्री हीरा

मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा.

श्रद्धेय मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा. ने पूज्य गुरुदेव आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के शुद्ध संयमी, तीर्थ स्वरूपी जीवन के विशिष्ट गुणों की यथावसर भावाभिव्यक्ति की, जिसका संकलन एवं सम्पादन सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के कार्याध्यक्ष श्री सम्पतराज चौधरी, दिल्ली ने किया है।**-सम्पादक**

हे परमात्मभाव की प्रकाशमान यात्रा के अविचल पथिक!
तीर्थंकर की धम्म देशना के व्याख्याकार!
तुम्हारी दीक्षा की अर्धशती,
मृत्यु से अमरत्व की ज्योतिर्मय यात्रा का
एक विशिष्ट पड़ाव है।
तुम्हारी इस यात्रा में
अशुभ का बहिष्कार है,
शुभ का संस्कार है और
शुद्धत्व का स्वीकार है।
'स्व' की 'स्व' से 'स्व' को सहज स्वीकृति है।
'स्व' के 'स्व' में निमज्जन होने के लिए
अद्वैत योग की विमल यात्रा है।

इसके साथ ही,
तुम्हारा साधनामय जीवन लोक कल्याण की ओर
भी निरन्तर गतिमान है,
जिसके बोध की निर्मलधारा
जन-जन को अनुप्राणित कर रही है।
तुम्हारे गुणों की अनुभूति
पूजक और पूज्य के भेद को मिटाती है।

पारस लोहे को सोना बनाता है, परन्तु
तुम ऐसे पारस हो जो अपने पास आने वाले को
पारस बना देते हो।

राग-द्वेष को पार करने का तुम्हारा उत्कृष्ट उपक्रम
भक्तों को राग-द्वेष से उपरत होने का मार्ग दिखा रहा है।
तुम्हारा आध्यात्मिक सौन्दर्य
अक्षय प्रेरणा का पुंज है,
जो केवल प्रेरणा ही नहीं देता, अपितु
पथ पर चलने की शक्ति भी देता है।
जो भी तुम्हारी शरण में आता है,
तुम उसकी प्रसुप्त चेतना को जाग्रत कर देते हो।
उसकी दृष्टि तत्त्वग्राही बन जाती है,
जिनवाणी को शीघ्र ग्रहण कर लेता है।
तुम्हारा वात्सल्य, आशीर्वाद, अनुकम्पा और औदार्य
शरणागत की अन्तर्दृष्टि को उजागर कर उसे
(वह) आत्मा से परमात्मा की राह पर बढ़ा देता है
''तिन्नाणं तारयाणं''
हे! आचार्यदेव! तुम एक जीवन्त तीर्थ।
आपके मार्गदर्शन में समाधान है, शुचिता है, पारदर्शिता है।
शीतलता है, तृप्ति है, संतुष्टि है,
एवमेव तुम साक्षात् तीर्थ हो।
तीर्थंकर की उज्ज्वल परम्परा के आलोकित नक्षत्र,
जिसके सिर पर विनय का मुकुट है,
कानों में गुरु आज्ञा के कुण्डल हैं,
भुजाओं पर कषाय-विजय का बाजूबन्द है,
वाणी में सत्य-वचन का माधुर्य है,
आँखों में वात्सल्य का रस है।
हृदय में क्षमा का आप्लावन है

कर आशीर्वाद की मुद्रा में उठे हुए हैं और
मुख-मण्डल पर वीतरागता का निर्झर है।
इस तरह श्रद्धा के आसन पर विराजमान
तुम अनेकानेक गुणों से सुशोभित हो।
आप तीर्थरूप के दर्शन करने से
संसार सीमित हो जाता है

हे कल्याणस्वरूप! आप ही प्रथम वंदनीय,
प्रातः स्मरणीय, आपका जीवन है अभिनंदनीय
हे! मंगलमूर्ति।
आप स्वयं मंगल, दूसरों के कलिमल हर उनका जीवन
मंगलमय बनाने वाले भाव मंगल
हे धर्म देव!
आप दिव्य आत्म गुणों से विभूषित,
भक्तों को ज्ञान-दर्शन-चारित्र का दिव्य दान देने वाले,
हे ज्ञान सूर्य! आप
अज्ञान अंधकार की विनाशक संबोधि के दाता
जब मैं तुम्हारा स्मरण करता हूँ
अपने भाव तुम्हारे चरणों में अर्पित करता हूँ
तो ऐसा लगता है कि मैं तुम्हारे
भव्य-विराट् साधना रूप पुष्पोद्यान में
विचरण करता हुआ एक
विलक्षण आनन्दाभूति का अनुभव करता हूँ और
मेरा जीवन पुष्प खिल उठता है,
महक उठता है।

हे देव!
तुम्हारी इस अभिनन्दना में
मेरा यह अर्घ्य क्या अर्थ रखता है!
मेरी तो यह बाल-चपलता ही है न!

तुम्हारे स्तुत्य चित्र के अंकन में
मेरे शब्द छोटे पड़ जाते हैं।

श्रद्धा का घृत,
ज्ञान की बाती और
शुभ कर्मों की ज्योति-
यही तो है तुम्हारी साधना का मंगल दीप,
जो स्वयं आलोकित है और
दूसरों को आलोक दे रहा है।

मंगलमय है दर्शन तेरे, मंगल तेरे कर्म अनूप।
मन की तमिस्रा मिट जाती है, तू है तीरथ रूप।।

जीवन-बोध क्षणिकाएँ

श्री यशवन्तमुनि जी म.सा.

सब कुछ पाए

जिस क्षण अन्तर से
आएगी
यह आवाज़-
'मुझे कुछ नहीं चाहिए'
उस क्षण
यह जीव पाने योग्य
'सब कुछ' पा लेगा।

वरदान

हे प्रभु मैं समझता हूँ
आत्म-शक्ति मेरे भीतर
ही विद्यमान है, पर
वह आपकी भक्ति के
बिना उजागर होती नहीं
है, अतः भक्ति का
वरदान दो।

सच्ची बात

साँची रे साँची
प्रभु बात तेरी साँची
फिर क्यों
आत्मा मेरी पुद्गल
में राची!
क्योंकि अभी श्रद्धा है
काची।

अहम का दान

पहले कर प्रभु चरणों में,
गुरु चरणों में
अहम् का दान,
फिर सहज हो जायेगा
आत्मरस का पान।

गलती को मानें

हम गलती को
गलती रूप में जानें,
गलती को गलती
रूप में मानें,
तो फिर अवश्य
ही हम लगेंगे
आत्म-गुणों को पाने।

स्वयं से प्यार

प्राणि-मात्र के साथ
प्यार का आधार,
पहले हो स्वयं का
स्वयं के साथ प्यार।
(आत्मा-आत्मा से प्रेम करें)

-संकलित

प्रासङ्गिक

अपरिग्रह सिद्धान्तः सामाजिक न्याय का अमोघ मंत्र

डॉ. कमलचन्द सोगानी

वर्तमान युग में परिग्रह की सीमा काफी चर्चा का विषय बनी हुई है। महावीर युग में हिंसा का प्राधान्य था, पर ऐसा लगता है कि आज के युग में परिग्रह का प्राधान्य है। ऐसा नहीं है कि महावीर युग में परिग्रह की सीमा की चर्चा न हो। अति प्राचीन ग्रंथों में परिग्रह की सीमा के बारे में स्पष्ट कथन मिलते हैं। उनमें यह कहा गया है कि गृहस्थ को धन-धान्य आदि वस्तुओं को सीमित करना चाहिए और संभवतया इस निर्देश को मानकर कई गृहस्थों ने परिग्रह की सीमा को बांधकर अपरिग्रह की दिशा में अवश्य ही प्रगति की होगी। उन्होंने पांच हाथी के बजाय दो हाथी रखे होंगे, दस मकान के बजाय एक मकान रखा होगा, लाखों रुपयों के बजाय हज़ारों रुपये रखे होंगे। इस तरह से परिग्रह के त्याग का उदाहरण प्रस्तुत किया होगा। समाज ने ऐसे लोगों को त्यागी कहकर सम्मानित भी अवश्य किया होगा, क्योंकि वे तो ग्रंथों की सीधी सादी भाषा के अनुसार अपने जीवन को ढाल रहे थे।

यहाँ यह प्रश्न उपस्थित होता है कि क्या इस प्रकार के त्याग को अपरिग्रह की संज्ञा दी जाय? इससे अधिक गहरा प्रश्न यह उपस्थित होता है कि परिग्रह का लक्षण क्या है? क्योंकि परिग्रह के लक्षण को जानकर ही हम परिग्रह-अपरिग्रह का निर्णय कर सकते हैं। अपरिग्रहवादियों के सामने जब यह प्रश्न आया तो उन्होंने अपरिग्रह को समझाने के लिए परिग्रह का लक्षण प्रस्तुत किया। वे समझते थे कि परिग्रह का लक्षण ज्ञात होने पर मनुष्य उन लक्षणों से बचकर अपरिग्रही बन सकेगा। इसलिए उन्होंने परिग्रह का लक्षण बताते हुए कहा कि जहाँ मूर्च्छा है वहाँ परिग्रह है। इसको स्पष्ट करते हुए उनका कहना है कि यह हो सकता है कि व्यक्ति के पास न मकान हों, न धन-धान्य, तब भी इनके प्रति आकर्षण या राग हो तो वह निश्चित रूप से परिग्रही है, जैसे कोई लोभी या अति दरिद्र व्यक्ति। इसके अतिरिक्त यह भी हो सकता है कि बाह्य में परिग्रह हो और अंतरंग में यदि मूर्च्छा नहीं है तो ऐसा व्यक्ति अपरिग्रही कहलायेगा, जैसे राजा जनक।

यहाँ यह प्रश्न है- क्या परिग्रह का मूर्च्छा लक्षण कोरा व्यक्तिगत नहीं है? क्या मूर्च्छा होने और न होने का ज्ञान हमें हो सकता है? मूर्च्छा एक मानसिक स्थिति है जिसको दूसरे व्यक्तियों में जान पाना तो कठिन है ही, अपने में भी जान पाना अत्यन्त कठिन है। इस तरह

से परिग्रह का यह लक्षण होते हुए भी व्यक्ति व समाज के लिए यह उपयोगी नहीं है। संभवतया इसी बात को ध्यान में रखकर अपरिग्रहवादियों ने कहा कि सामान्यतया जहाँ बाह्य परिग्रह होता है वहाँ मूर्च्छा होती ही है। कुछ असाधारण व्यक्ति इस कोटि से बाहर चले भी जायें तब भी साधारण लोगों के लिए यह लक्षण घटित होता है, क्योंकि उनके मन में यह बात रही होगी कि समाज साधारण व्यक्तियों के समुदाय से ही निर्मित होता है और अपरिग्रह की चर्चा उसी समुदाय के लिए विशेष महत्त्व की है। इसलिए सामाजिक दृष्टिकोण से बाह्य वस्तुओं की उपस्थिति और अंतरंग मूर्च्छा के होने में एक कार्य-कारण का संबंध स्वीकार किया जा सकता है, अर्थात् उन्होंने यह स्वीकार किया कि जहाँ बाह्य वस्तुएँ हैं (वास्तविक और काल्पनिक), वहाँ मूर्च्छा होगी ही। यह कार्य-कारण संबंध सामाजिक स्तर पर उचित प्रतीत होता है, अर्थात् किसी व्यक्ति के बाहरी परिग्रह को देखकर अथवा बाहरी परिग्रह की इच्छा को जानकर हम साधारणतया उसकी अंतरंग मूर्च्छा का अनुमान कर सकते हैं। इस तरह सामाजिक दृष्टिकोण से बाह्य वस्तुओं का होना एवं न होना ही महत्त्व का है। मूर्च्छा का होना और न होना पूर्णतया व्यक्तिगत होता है। समाज की निगाह केवल बाह्य वस्तुओं पर ही हो सकती है और उसी को कम और ज्यादा करना समाज के हाथ में है। अतः परिग्रह का लक्षण सामाजिक दृष्टिकोण से मूर्च्छा न होकर बाह्य वस्तुओं का होना (वास्तविक) ही माना जा सकता है। इसीलिए अपरिग्रहवादियों ने स्थान-स्थान पर बाह्य वस्तुओं की सीमा पर जोर दिया है। इस तरह से अपरिग्रह के मापदण्ड का प्रश्न वस्तुओं के परिमाण के मापदण्ड का प्रश्न है। अब प्रश्न यह है कि वस्तुओं का कितना परिग्रह, अपरिग्रह की कोटि में माना जाय? परिमाण का निश्चय कैसे किया जाय?

संभवतया इसके उत्तर में कहा जा सकता है कि वस्तुओं की व्यक्तिगत आवश्यकतानुसार संख्या परिमाण का मापदण्ड माना जाना चाहिए। यदि मुझे एक मकान की आवश्यकता है तो मैं एक मकान बनवा लूँ और दूसरा मकान न बनवाऊँ। इसी तरह आवश्यकतानुसार अन्य वस्तुओं का परिमाण भी कर लूँ। यदि मेरी आवश्यकता एक करोड़ रुपये की है तो उतना रख लूँ और बाकी समाज को अर्पण कर दूँ। अब प्रश्न यह उठता है कि आवश्यकता का निर्णय किस आधार पर हो? एक उद्योगपति की आवश्यकताएँ, प्रोफेसर की आवश्यकताएँ तथा अन्य वर्ग के लोगों की आवश्यकताएँ भिन्न-भिन्न हैं। इसलिए उनके परिग्रह के परिमाण भी भिन्न होंगे। किसी के लिए 10 कारें भी आवश्यक हो सकती हैं और किसी के लिए एक भी नहीं। क्या हम परिग्रह का निर्णय व्यक्तिगत आवश्यकतानुसार वस्तुओं की संख्या के आधार पर कर सकते हैं? मेरे विचार से ऐसा करना किसी भी तरह

उचित नहीं माना जा सकता, क्योंकि यह दृष्टिकोण पूर्णतया व्यक्तिवादी है। पर अपरिग्रह एक समाजवादी दृष्टि है। अपरिग्रह का मापदण्ड तब तक उचित नहीं कहा जा सकता जब तक उसके निर्णय में सामाजिक दृष्टि को महत्त्व न दिया जाय। मेरे लिए कितना आवश्यक है, इसका निर्णय व्यक्ति नहीं समाज करेगा। व्यक्ति का निर्णय शोषण को जन्म देता है, पर समाज का निर्णय अपरिग्रह की भावना को। समाज का निर्णय जनतांत्रिक राज्य का निर्णय है, एक अर्थ में कहा जा सकता है। राज्य सामाजिक आवश्यकतानुसार परिग्रह के परिमाण को निश्चित कर सकता है, अर्थात् कितना व्यक्ति के पास रहे और कितना व्यक्ति से समाज को चला जाय। यदि एक व्यक्ति 100 मिलों का मालिक है तो लाभ के फलस्वरूप व्यक्ति कितना रखे और समाज के पास कितना जाय, इसका निर्णय व्यक्ति नहीं समाज ही करेगा।

कभी-कभी यह कहा जाता है कि परिग्रह के परिमाण की भावना समाज की प्रगति को अवरुद्ध करने वाली होती है। किन्तु मेरे विचार से ऐसा मानना उचित नहीं है, क्योंकि अपरिग्रह की भावना व्यक्ति के उत्पादन शक्ति को क्षीण नहीं करती, पर उसकी संग्रह शक्ति को सीमित करने की बात कहती है। अत्यधिक संग्रहवृत्ति एक मानसिक रोग है और स्वस्थ समाज के निर्माण के लिए इस रोग को समाप्त करना आवश्यक है ही। समाज की प्रगति उत्पादन शक्ति से होती है, संग्रहवृत्ति से नहीं। अतः अपरिग्रह का मापदंड हुआ- समाज का वस्तुओं के परिमाण के विषय में निर्णय। एक ऐसा देश हो सकता है जहाँ किसी व्यक्ति के पांच भवन भी परिग्रह न मानें जायें और एक ऐसा देश भी हो सकता है जहाँ एक भवन होना भी परिग्रह की कोटि में आये। इस तरह से कहा जा सकता है कि मूर्च्छा की तीव्रता व मंदता का संबंध बाह्य वस्तुओं की संख्या से नहीं है, पर सामाजिक परिस्थिति से वस्तुओं के परिमाण के संबंध में समाज के निर्णय से है। सामाजिक परिस्थितियों के बदलने से बाह्य वस्तुओं के परिमाण भी बदलते जायेंगे। अमरीका के परिग्रह परिमाण के विचार में और भारत के परिग्रह परिमाण के विचार में अंतर होगा। ऐसा प्रतीत होता है कि अपरिग्रहवादियों ने परिमाण के प्रश्न को खुला ही रखा है। देश-काल के अनुसार परिमाण बदला जा सकता है।

यदि परिमाण का माप समाज है तो भारत जैसे देश में कर के माध्यम से, भूमि सीमा आदि के माध्यम से परिमाण को निश्चित करना अपरिग्रह की भावना को दृढ़ करना है। भारत के अधिकांश लोगों को देखते हुए हम सभी किसी न किसी रूप में शोषणवादी है। हमारा एक मकान, एक पैंट-शर्ट भी परिग्रह ही है, क्योंकि भारत के करोड़ों लोग इनसे भी वंचित हैं। अपरिग्रह की भावना समाजवादी समाज की दिशा में हमारे देश को अग्रसर कर

सकती है, क्योंकि अपरिग्रह का मापदण्ड वस्तु-परिमाण के संबंध में समाज का निर्णय है, व्यक्ति का नहीं। जिस प्रकार अहिंसा रसोईघर तक सीमित रह गयी, उसी प्रकार अपरिग्रह थोथे दान देने तक। एक स्कूल बनवाने, अस्पताल बनवाने आदि में हमने अपरिग्रह को सीमित कर दिया। वास्तव में अपरिग्रह तो सारी मानव जाति को सम्मान से जीने देने की एक सामाजिक कला है और इस तरह से महावीर का अपरिग्रह का सिद्धांत समाज को विकसित करने का एक अमोघ मंत्र है। *-एच-7, चितरंजन मार्ग, सी-स्कीम, जयपुर (राज.)*

युगद्रष्टा आचार्यश्री हस्ती गुणगान

पूज्य आचार्य श्री विजयराज जी म.सा.

(परमपूज्य आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. की 93 वीं दीक्षा जयंती पर बैंगलोर में प्रस्तुत गीत)

(तर्जः- नित उठके सज्जन ....।)

हस्ती गुरु का स्मरण, करते श्रद्धालुजन, आनन्द पाते।
जीवन अपना सदा सरसाते।।
घर-घर नाम गूंजे, घट-घट चरण पूजे, महिमा गाते।
जीवन अपना सदा सरसाते।। टेर।।

शहर पीपाड़ में जन्म है पाया, बोहरा कुल है भाग्य सवाया।
माता रूपा के नन्द, केवल कुल के हैं चन्द, खुशियाँ मनाते।
जीवन अपना सदा सरसाते।। 1।।

आत्मज्ञान का दीप जलाया, शोभा गुरु से है नेहा लगाया।
संयम धन पा लिया, हुआ हर्षित हिया, शीश नवाते।
जीवन अपना सदा सरसाते।। 2।।

ज्ञान गंभीर इतिहास मार्त्तण्ड, बन गये इन्द्रिय विजेता प्रचण्ड।
शान शासन बढ़ी, कीर्ति शिखर चढ़ी, चेतना जगाते।
जीवन अपना सदा सरसाते।। 3।।

बिगुल स्वाध्याय का है बजाया, सोया जन-जन का भाग्य जगाया।
जागो जैनी जागो, आलस अपना त्यागो, भाव सुनाते।
जीवन अपना सदा सरसाते।। 4।।

बैंगलोर संघ में आज मनाते, दीक्षा दिवस पे ज्योति जगाते।
चामराजपेट संघ में आज मनाते, दीक्षा दिवस पे ज्योति जगाते।
होवे कर्म 'विजय' पायें मुक्ति निलय, पथ अपनाते।
जीवन अपना सदा सरसाते।। 5।।

महावीर जयन्ती पर विशेष

तीर्थंकर महावीर का मानवजाति को अवदान

डॉ. दिलीप धींग

ईस्वी पूर्व 599 की घटना। चैत्र शुक्ला त्रयोदशी की मध्य रात्रि में वैशाली के क्षत्रियकुण्ड ग्राम में मानो सूर्य ही उदित हुआ। महारानी त्रिशला के पुत्र जन्म का मंगल सन्देश देने के लिए दासी प्रियंवदा राजा सिद्धार्थ के पास पहुँची तो उसे दास-कर्म से मुक्त कर दिया गया। कहने को तो अभी वर्धमान का जन्म हुआ ही था; किन्तु अपने निमित्त से मानवीयता और स्वतन्त्रता का सन्देश दे दिया था उस अनाम किन्तु सर्वनाम शिशु ने।

जैन धर्म के 24वें और अन्तिम तीर्थंकर महावीर का सम्पूर्ण जीवन सभी प्राणियों के उत्कर्ष एवं मानवीय स्वतन्त्रता के लिए समर्पित था। आचरण में अहिंसा, विचारों में अनेकान्त, व्यवहार में अपरिग्रह और भेद-विज्ञान मूलक तप; यह उनके धर्म-दर्शन का सार है। जिसका विस्तार असीम और अनन्त है।

धर्म का स्वरूप

वह समय था जब मनुष्य धर्म के नाम पर कोरे क्रिया-काण्डों द्वारा देव-पूजा तो बहुत करता था, किन्तु मानव-मानव के बीच ऐक्य और आदर नहीं के बराबर था। वर्ण-व्यवस्था जातिवाद का रूप ले चुकी थी। नारी को उसके धार्मिक-सामाजिक अधिकारों से वंचित कर दिया गया था। भगवान महावीर ने कहा -

धम्मो मंगलमुक्किट्ठं, अहिंसा संजमो तवो,
देवा वि तं नमंसंति, जस्स धम्मे सया मणो।

अहिंसा, संयम और तप रूपी धर्म उत्कृष्ट मंगल है। जो व्यक्ति अहिंसा, संयम और तप की आराधना करता है, उसे देवता भी नमस्कार करते हैं।

मानवता की प्रतिष्ठा

मनुष्य की कम होती गरिमा की पुनः प्रतिष्ठा के लिए भगवान महावीर ने मानवीय एकता तथा मनुष्य की सामाजिक-आत्मिक स्वतन्त्रता का उद्घोष किया। मनुष्य-भव को देव-भव से भी दुर्लभ बताया। मनुष्य अनन्त सम्भावनाओं का धनी होता है। केवल मनुष्य ही मोक्ष प्राप्त कर सकता है। चूंकि नारी भी मनुष्य ही है, इसलिए वह भी धर्म-साधना करने की तथा मोक्ष प्राप्त करने की अधिकारिणी है। तीर्थंकर महावीर ने अपने तीर्थ में नारी को श्रमणी एवं श्राविका के रूप में सम्मिलित किया। उनके धर्म-संघ में जात-पाँत और ऊँच-

नीच का कोई भेद नहीं था। उत्तराध्ययन-सूत्र (25.33) में उन्होंने स्पष्ट कहा -

कम्मुणा बंभणो होइ, कम्मुणा होइ खत्तिओ,
वइसो कम्मुणा होइ, सुद्दो हवइ कम्मुणा।

मनुष्य कर्म से ब्राह्मण होता है, कर्म से क्षत्रिय होता है, कर्म से वैश्य होता है और कर्म से ही शूद्र होता है। साहित्यकार जॉर्ज बर्नार्ड शॉ ने कहा था कि सिर्फ जैन धर्म ही है जो कहता है - "मनुष्य भगवान बन सकता है; आत्मा परमात्मा बन सकता है।"

समता के प्रवक्ता

तीर्थंकर महावीर के समवसरण में समता का अखण्ड साम्राज्य होता था। न केवल मानव, अपितु पशु-पक्षी और देवगण भी उसमें उपस्थित होते थे। चूहे-बिल्ली, शेर-हिरण, साँप-मयूर जैसे जन्मजात वैरी भी निर्वैर, शान्त और मैत्रीपूर्ण हो जाते थे। उनकी समता अहिंसा मूलक और अहिंसा समतामूलक थी। उनकी अहिंसा का अर्थ है - अपनी पूर्णता में विश्वास और दूसरों की पूर्णता में भी विश्वास। मेरी ही काव्य-पंक्तियाँ यहाँ उद्धृत कर रहा हूँ-

न्याय के लिए नैतिकता का नीर चाहिये।
सत्य के लिए समता का समीर चाहिये।
विश्व खड़ा है विनाश के कगार पर,
अहिंसा के अवतार प्रभु महावीर चाहिये।

अहिंसा के पर्याय

कुछ व्यक्ति कहते हैं, महावीर ने इसका विरोध किया या उसका विरोध किया। वस्तुत: उन्होंने सिर्फ हिंसा का प्रतिवाद किया। भगवान महावीर ने अहिंसा की अत्यन्त सूक्ष्म, नितान्त मौलिक, बहुआयामी, तर्कसंगत और वैज्ञानिक व्याख्या की। उन्होंने अहिंसा पर इतना जोर दिया कि महावीर, जैन धर्म और अहिंसा एक दूसरे के पर्याय हो गये। उनकी अहिंसा पूर्ण व्यावहारिक और उपादेय है। वर्तमान समय में वह सर्वाधिक प्रासंगिक हो चुकी है। व्यष्टि से लेकर समष्टि तक की समस्त समस्याओं का समाधान अहिंसा से सम्भव है।

नि:शस्त्रीकरण के उद्घोषक

जैसे हमें हमारी जान प्यारी है, वैसे ही सबको अपनी जान प्यारी होती है। इसलिए किसी भी प्राणी के प्राणों का हनन नहीं करना चाहिये। सच्चा बुद्धिमान कभी किसी की हिंसा नहीं करता। सूत्रकृतांग का प्रेरक वाक्य है - "**एवं खु नाणिणो सारं जं न हिंसइ किंचण।**" ज्ञानी होने का, शिक्षित होने का सार है - किसी जीव की हिंसा नहीं करना। भ. महावीर की अहिंसा के फलित हैं - करुणा, शाकाहार, समता, सौहार्द, सर्वोदय, सह-

अस्तित्व, प्रेम, पर्यावरण सुरक्षा, पारिस्थितिकी-सन्तुलन, विश्व-बन्धुत्व, लोकतन्त्र, अनाक्रमण, निःशस्त्रीकरण, अयुद्ध आदि। आचारांग सूत्र (1.3.4) में महावीर कहते हैं, **'अत्थि सत्थं परेण परं, नत्थि असत्थं परेण परं'** - शस्त्र तो एक से बढ़कर एक हैं किन्तु अशस्त्र और अहिंसा से बढ़कर कुछ नहीं है।

सामुदायिक मूल्यों के संस्थापक

महावीर वैयक्तिक स्वतन्त्रता के महान प्रवक्ता तथा सामुदायिक मूल्यों के महान संस्थापक थे। आर्थिक सामाजिक समता के लिए उन्होंने अपरिग्रह का मन्त्र दिया। परिग्रह, ममत्व, आसक्ति और लोभ से जीवन की सुख-शान्ति हवा हो जाती है। दीक्षा से पूर्व एक वर्ष तक वर्द्धमान महावीर ने प्रतिदिन 1 करोड़ 8 लाख स्वर्ण-मुद्राओं का दान किया। उन्होंने कहा - "वस्तुओं के प्रति मूर्च्छा का भाव परिग्रह है। वस्तुएँ होने पर आसक्ति होना भी सम्भव है। इसलिए धन-धान्य, उपभोग-परिभोग की वस्तुओं की मर्यादा करनी चाहिये। साधनों और संसाधनों का संयमित उपयोग-प्रयोग करना चाहिये। स्वअर्जित धन का पारमार्थिक उपयोग भी करना चाहिये।" आज के भोग, उपभोग और उपभोक्तावादी युग में वस्तुओं के सीमित और विवेकसम्मत उपयोग की महती आवश्यकता है।

साधना और तीर्थ-स्थापना

तीस वर्ष की उम्र में दीक्षा लेकर साढ़े बारह वर्षों के दुर्धर्ष साधना काल में भ. महावीर ने भयंकर कष्टों, उपसर्गों और परीषहों को पूर्ण समभाव से सहन किया। इतने लम्बे साधना काल में उन्होंने मात्र साढ़े तीन सौ दिन आहार ग्रहण किया। कभी निरन्तर आहार नहीं किया। उपवास-काल में जल नहीं पिया। आत्मा का निरन्तर ध्यान किया। उनकी कोई तपस्या दो उपवास से कम नहीं है। आहार-संयम, कष्ट-सहिष्णुता और सतत-ध्यान उनकी साधना की प्रमुख विशेषताएँ हैं। साढ़े बयालीस वर्ष की उम्र में कैवल्य-प्राप्ति के बाद तीर्थंकर महावीर ने तीर्थ की स्थापना करके धर्म-साधना को सामुदायिक प्रतिष्ठा प्रदान की। इससे अधिकाधिक आत्माओं का कल्याण सम्भव हुआ। अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह; इन पाँच नियमों का पूर्णरूपेण पालन करने वाले महाव्रती श्रमण-श्रमणी कहलाये तथा आंशिक रूप से इन व्रतों का पालन करने वाले अणुव्रती श्रावक-श्राविकाएँ कहलाये।

रत्नत्रय

भ. महावीर ने आचरण पर बहुत जोर दिया। बिना तपे-खपे और साधना किये कुछ भी पाना सम्भव नहीं है। जैन धर्म की साधना प्रक्रिया है - सम्यक्-ज्ञान, सम्यक्-दर्शन और सम्यक्-चारित्र। सब कुछ सम्यक् हों और सम्यक्त्व से विभूषित हों। दशवैकालिक सूत्र में

आचरण को सम्यक् बनाने के लिए विवेक, ज्ञान और समझ की महत्ता बताई गई है। जानना अलग बात है और आचरण करना अलग बात। ज्ञान वही सार्थक है जो आचरण बने। ज्ञान को आचरण में परिणत करने के लिए जीवन को साधना पड़ता है, तपाना पड़ता है।

सम्यक्-तप

भ. महावीर ने बारह प्रकार के तप बताये। इनमें उपवास, उनोदरी (भूख से कम खाना), रस परित्याग (सादा/सात्त्विक भोजन करना), कष्टों को समभाव से स्वीकार करना, इन्द्रियों को वश में रखना, अन्तरवलोकन करना, अपने दुष्कृत्यों और पापों का प्रायश्चित्त करना, गुणों-गुणियों का आदर/विनय करना, वैयावृत्त्य, स्वाध्याय, ध्यान, कायोत्सर्ग आदि सम्मिलित हैं। आहार-संयम से इन्द्रिय-संयम और स्वास्थ्य-रक्षण सम्भव है। कष्ट-सहिष्णुता से धैर्य और प्रतिरोधकता बढ़ती है। विनय से शिष्टाचार, स्वाध्याय से ज्ञानार्जन और वृत्तियों का परिष्कार होता है। भगवान महावीर के ध्यान के प्रयोग मौलिक और अद्भुत थे। वर्तमान में प्रचलित अनेक ध्यान पद्धतियों और प्रविधियों का उत्स/मूल उनकी ध्यान-साधनाओं में प्राप्त होता है। वे जीवन की प्रयोगशाला के महान प्रयोगधर्मी वैज्ञानिक साधक थे।

सेवा

प्रथम शिष्य इन्द्रभूति गौतम स्वामी के एक प्रश्न के उत्तर में तीर्थंकर महावीर कहते हैं - जिसने दीन-दुःखियों, रोगियों और उनके कष्टों को समझा है, उसने मेरे ज्ञान को समझा है। उन्होंने सेवा को तपस्या यानी कर्म-निर्जरा (आत्म-शुद्धि) का कारण बताया। भ. महावीर की साधना-पद्धतियाँ समग्र एवं बहुआयामी रही हैं। उनकी धर्म-साधना में अन्ध-विश्वासों और कोरे क्रियाकाण्डों का कोई स्थान नहीं है। 'उत्तराध्ययन-सूत्र' में वे कहते हैं, 'पण्णा समिक्खए धम्मं' - अपनी प्रज्ञा से धर्म की समीक्षा करनी चाहिये।

ब्रह्मचर्य और सदाचार

जीवन-साधना में एक और महत्त्वशाली मूल्य भ.महावीर ने जोड़ा, वह है - ब्रह्मचर्य। आगम-ग्रन्थों में ब्रह्मचर्य को सर्वोत्तम तप और उत्कृष्ट साधना बताया गया है। आज नारी-स्वतन्त्रता की बात की जाती है। भ.महावीर ने ब्रह्मचर्य के द्वारा मनोवैज्ञानिक ढंग से नारी-स्वतन्त्रता के प्रमुख पक्ष को पुष्ट किया। संसार भयावह चारित्रिक संकट के दौर से गुजर रहा है। सदाचार निरन्तर दुर्लभ होता जा रहा है। मानव वासना की धधकती भट्टी में सब कुछ स्वाहा करने पर आमादा है। जनसंख्या और एड्स जैसी समस्याओं से मानव-जाति पर संकट के बादल छाए हुए हैं। अमर्यादित, असामाजिक, अवैधानिक यौनाचार, परस्त्री/परपुरुषगमन तथा वेश्यागमन जैसे कुव्यसनों में फँसकर अनेक लोग अपना दुर्लभ

जीवन नरक तुल्य बना रहे हैं। ऐसे विकट समय में ब्रह्मचर्य और सदाचार की उपेक्षा अत्यन्त खतरनाक साबित हो सकती है। समर्थ राष्ट्र और चरित्रवान नागरिकों के निर्माण के लिए ब्रह्मचर्य और सदाचार का अत्यधिक मूल्य है। प्रश्नव्याकरण सूत्र में भ.महावीर ने शील यानी ब्रह्मचर्य को 18 हजार उपमाएँ दी हैं। इससे ब्रह्मचर्य के महत्त्व का स्पष्ट पता चलता है। एक ब्रह्मचर्य की सम्यक् आराधना से अनेक सद्गुणों का लाभ स्वत: हो जाता है।

वैज्ञानिक दृष्टि

अनन्त ज्ञानी महावीर तत्त्व-द्रष्टा, क्रान्त-द्रष्टा और सर्व-द्रष्टा थे। उन्होंने हमें वैज्ञानिक दृष्टि और वैज्ञानिक जीवन-शैली प्रदान की। सृष्टि के बारे में किसी ईश्वरीय कल्पना की बजाय उन्होंने स्पष्ट कहा कि सृष्टि अनादि और अनन्त है। जीव और अजीव विश्व के प्रमुखतम घटक हैं। उत्पाद, व्यय और ध्रौव्य से सब कुछ बन-बिगड़ रहा है। द्रव्य की दृष्टि से कोई पदार्थ कभी नष्ट नहीं होता और पर्याय की दृष्टि से प्रतिपल परिवर्तन हो रहा है। नव-तत्त्वों का स्वरूप, षट्-द्रव्यों का निरूपण, कर्मवाद और वस्तु-स्वातन्त्र्य के सिद्धान्त वैज्ञानिक, तर्कपूर्ण और अकाट्य हैं। आचार्य हेमचन्द्र ने भ.महावीर की वैज्ञानिक दृष्टि को बड़े चातुर्य से व्यक्त किया - ''भगवन् ! आपने यथार्थ तत्त्व का प्रतिपादन किया, इसलिए आपके व्यक्तित्व में वह कौशल प्रकट नहीं हुआ, जो घोड़े के सींग उगाने वाले नव-पण्डित में हुआ है।''

अनेकान्त के प्रतिपादक

कोई व्यक्ति यह कहे कि उसने वर्धमान महावीर को पूरी तरह समझ लिया है तो समझना चाहिये कि या तो वह यथार्थ नहीं कह रहा है या फिर वह बहुत बड़ा आत्म-ज्ञानी है। वस्तुत: महावीर को समझना आसान नहीं। भला महासागर को अंजलि में कैसे भरा जाय? उनका ज्ञान अनन्त का ज्ञान है। उनका दर्शन अनन्त का दर्शन है। उनका जीवन अनन्त का जीवन है। प्रत्येक वस्तु अनन्त धर्मात्मक होती है। इस अनन्त को, सत्य के अनन्त रूपों को और अखण्ड सम्पूर्ण सत्य को सिर्फ सर्वज्ञ देख-समझ सकते हैं। किन्तु वे भी एक साथ उसे व्यक्त नहीं कर सकते हैं। सत्य को अनेक कोणों-आयामों से देखने-समझने के लिए भ.महावीर ने अनेकान्त का प्रतिपादन किया। अनेकान्त की अभिव्यक्ति को, कथन-शैली को स्याद्वाद कहा गया। अनेकान्त का सिद्धान्त भ.महावीर का अनुपम अवदान है। दार्शनिक, बौद्धिक और वैज्ञानिक जगत् में अनेकान्त सर्वोपरि है तो सामान्य जीवन व्यवहार में भी अनेकान्त के बिना काम नहीं चल सकता। अनेकान्त, अनेक का अन्त करके एकता, अनाग्रह और समन्वय का पथ प्रशस्त करता है और सत्य के अनवरत अनुसन्धान की प्रेरणा देता है। अनेकान्त-सिद्धान्त के अध्ययन के फलस्वरूप डॉ. अल्बर्ट

आइन्स्टीन ने विज्ञान-जगत में सापेक्षता का सिद्धान्त प्रतिपादित किया। सापेक्षता का सिद्धान्त अनेकान्त का वैज्ञानिक संस्करण है। धार्मिक-वैचारिक-सहिष्णुता और समन्वय, समय की मांग है और आवश्यकता भी। अनेकान्त कदाग्रह और पन्थों की लड़ाई समाप्त करने का अचूक उपाय है। कवि रामधारी सिंह 'दिनकर' ने कहा - ''अनेकान्त भारत की अहिंसा-साधना का चरमोत्कर्ष है।''

अनन्त विशेषताओं व सद्गुणों के पुंज तीर्थंकर महावीर के मानवता और दुनिया के लिए अगणित अवदान हैं। मेरे एक मुक्तक से उन्हें श्रद्धासिक्त प्रणति :-

सागर की गहराई से भी गहरा है जिनका ध्यान।
आकाश की ऊँचाई से भी ऊँचा है जिनका नाम।
घोर उपसर्ग अपार कष्ट सहे समभावों से,
उन मृत्युंजय कालजयी महावीर को प्रणाम।

-सीईओ-एटीएफ, 53-बी, डोरे नगर, उदयपुर-313002 (राज.)

महावीर अपने भक्तों का, यह हाल देख लीजिये

श्री मोहन कोठारी 'विनर'

महावीर अपने भक्तों का, यह हाल देख लीजिये,
जैनी हैं कोरे नाम के, माहौल देख लीजिये।
महावीर अपने भक्तों का.....।।टेर।।
आचार देख लीजिये, विचार देख लीजिये,
शून्य हम पड़े हुए, व्यवहार देख लीजिये।
जैनियों का अय प्रभु, जैनत्व देख लीजिये,
महावीर अपने भक्तों का.....।।1।।
राग, द्वेष का धुंआ, यहाँ नफरतों की आग है,
भावना की केंचुली में, लिपटे काले नाग हैं।
आदमी से आदमी का, व्यवहार देख लीजिये,
महावीर अपने भक्तों का.....।।2।।
पंथ के व्यूह में हम, हैं सभी उलझे हुए,
संगठन के नाम से, हैं सभी टूटे हुए।
टूटती इस शृंखला का, बिखराव देख लीजिये,
महावीर अपने भक्तों का.....।।3।।

-जनता साड़ी सेण्टर, स्टेशन रोड़, दुर्ग-491001 (छतीसगढ़)

महावीर जयन्ती पर विशेष

संगोष्ठी-आलेख

समतावादी समाज-संरचना में जैन श्रावक-व्रतों की भूमिका

डॉ. जिनेन्द्र जैन

यह एक बुद्धिगम्य तथ्य है कि जब तक योजनाबद्ध और सुनियन्त्रित आदर्शमूलक विकास-पथ का सक्रिय अनुसरण मानव-समाज द्वारा न होगा, तब तक वास्तविक उत्कर्ष के उन्नत शिखर पर दृढ़तापूर्वक चरण स्थापित नहीं किये जा सकेंगे। अनेक भौतिक उपलब्धियों के बाद भी आज मानव वास्तविक सुख से वंचित है। मानव-जाति में धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष रूप पुरुषार्थ का महत्त्व अंगीकार किया गया है इसीलिए धर्म के साथ अर्थ रखने का फलितार्थ यह है कि अर्थ का उपयोग धर्म द्वारा नियंत्रित हो और धर्म अर्थ द्वारा प्रवृत्त्यात्मक बने। इस दृष्टि से धर्म एवं अर्थ का सम्बन्ध संतुलित अर्थव्यवस्था और समाज-रचना का समाजवादी दृष्टिकोण स्थापित करने में सहायक बनता है। धर्म मानव-जीवन की आध्यात्मिक एवं धार्मिक शक्तियों के साथ-साथ सामाजिक विकास और उसके रक्षण के लिए भी आवश्यक व्यवस्था देता है। अतः समाज व्यवस्था के सूत्रों के धरातल पर धर्म आर्थिक तत्त्वों से जुड़ता है।

जैन धर्म केवल निवृत्तिमूलक दर्शन नहीं है, बल्कि उसके प्रवृत्त्यात्मक रूप में अनेक ऐसे तत्त्व विद्यमान हैं, जिनमें निवृत्ति और प्रवृत्ति का समन्वय होकर धर्म का लोकोपकारी रूप प्रकट हुआ है। इस दृष्टि से जैन धर्म जहाँ एक ओर अपरिग्रही, महाव्रतधारी अनगार धर्म के रूप में निवृत्तिप्रधान दिखाई देता है, तो दूसरी ओर मर्यादित प्रवृत्तियाँ करने वाले अणुव्रतधारी श्रावक धर्म की गतिविधियों में सम्यक् नियन्त्रण करने वाला दिखाई देता है। समाज-रचना के समाजवादी दृष्टिकोण में दोनों (अनगार एवं श्रावक) वर्ग सदा अग्रणी रहे हैं।

समाज-रचना में राजनीति और अर्थनीति के धरातल पर यदि जैनदर्शन के अहिंसात्मक स्वरूप का प्रयोग करें तो आधुनिक युग में समतावादी दृष्टिकोण को स्थापित किया जा सकता है। महात्मा गाँधी ने भी आर्थिक क्षेत्र में ट्रस्टीशिप का सिद्धान्त दिया तथा आवश्यकताओं से अधिक वस्तुओं का संचय न करना, शरीर श्रम, स्वादविजय, उपवास

* आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म. सा. के सान्निध्य में 5-6 नवम्बर 2011 को जोधपुर में आयोजित 'अध्यात्म, समाज और भ्रष्टाचार' विषयक राष्ट्रीय विद्वत्संगोष्ठी में प्रस्तुत आलेख।

आदि के जो प्रयोग किये, उनमें जैनदर्शन के प्रभावों को सुगमता से रेखांकित किया जा सकता है।

जैन दर्शन का मूल लक्ष्य वीतरागभाव अर्थात् राग-द्वेष से रहित समभाव की स्थिति प्राप्त करना है। समभाव रूप समता में स्थित रहने को ही धर्म कहा गया है।[1] समता धर्म का पालन श्रमण के लिए प्रति समय आवश्यक है।[2] इसीलिए जैन परम्परा में समता में स्थित जीव को ही श्रमण कहा गया है। जब तक हृदय में या समाज में विषम भाव बने रहते हैं, तब तक समभाव की स्थिति प्राप्त नहीं की जा सकती। समतावादी समाज-रचना के लिए यह आवश्यक है कि विषमता के जो कई स्तर, यथा-सामाजिक विषमता, वैचारिक विषमता, दृष्टिगत विषमता, सैद्धान्तिक विषमता आदि प्राप्त होते हैं, उनमें व्यावहारिक रूप से समानता होनी चाहिए। समतावादी समाज-रचना की प्रमुख विषमता आर्थिक क्षेत्र में दिखाई देती है। आर्थिक वैषम्य की जड़ें इतनी गहरी हैं कि उससे अन्य विषमता के वृक्षों को पोषण मिलता रहता है। आर्थिक विषमता के कारण निजी स्वार्थों की पूर्ति से मन में कषायभाव जागृत होते हैं। फलतः समाज में पापोन्मुखी प्रवृत्तियाँ पनपने लगती हैं। लोभ और मोह पापों के मूल कहे गये हैं। मोह, राग-द्वेष के कारण ही व्यक्ति समाज में पापयुक्त प्रवृत्ति करने लगता है।[3] इसलिए इनके नष्ट हो जाने से आत्मा को समता में अधिष्ठित कहा गया है।[4]

समाज में व्याप्त इस आर्थिक वैषम्य का कारण जैनदर्शन में परिग्रह माना गया है। यह आसक्ति, अर्थ-मोह या परिग्रह कैसे टूटे, इसके लिए जैनधर्म में श्रावक के लिए बारह व्रतों की व्यवस्था की गई है। समतावादी समाज-रचना के लिए आवश्यक है कि न मन में विषम भाव रहें और न प्रवृत्ति में वैषम्य दिखाई दे। यह तभी सम्भव है जब धार्मिक और आर्थिक स्तर पर परस्पर समतावादी दृष्टिकोण को अपनाएँ। प्रत्येक मनुष्य को विकास के समान अवसर एवं साधन उपलब्ध हों- इसे समाजवाद का मूल सिद्धान्त माना गया है। मानव-मात्र की समानता समतावादी समाज की रचना का व्यावहारिक लक्ष्य है। जैन दर्शन में धार्मिक प्रेरणा से जो अर्थशास्त्र उभरा है, वह इस दिशा में हमारा मार्गदर्शन कर सकता है।

जैन आगमों में ज्ञाताधर्मकथा द्वादशांगी के अन्तर्गत परिगणित है। इसके पंचम अध्ययन में शैलक का कथानक दिया गया है, जिसमें एक प्रसंग थावच्चा पुत्र एवं शुक के बीच हुआ संवाद यहाँ अपरिग्रह की प्रवृत्ति को दर्शाने के लिए द्रष्टव्य है-

शुक परिव्राजक ने प्रश्न किया- 'भगवन्! आपके लिए 'सरिसवया' भक्ष्य हैं या अभक्ष्य हैं।'

थावच्चापुत्र ने उत्तर दिया- 'हे शुक! 'सरिसवया' हमारे लिए भक्ष्य भी हैं और अभक्ष्य भी हैं।'

शुक ने पुनः प्रश्न किया- 'भगवन्! किस अभिप्राय से ऐसा कहते हैं कि 'सरिसवया भक्ष्य भी हैं और अभक्ष्य भी हैं?'

थावच्चापुत्र उत्तर देते हैं- 'हे शुक! 'सरिसवया' दो प्रकार के कहे गये हैं- मित्र-सरिसवया (सदृश वय वाले मित्र) और धान्य-सरिसवया (सरसों)। इनमें जो मित्र-सरिसवया हैं वे तीन प्रकार के हैं। वे इस प्रकार हैं-

1. साथ जन्मे हुए, 2. साथ बढ़े हुए, 3. साथ-साथ धूल में खेले हुए। यह तीन प्रकार के मित्र-सरिसवया श्रमण निर्ग्रन्थों के लिए अभक्ष्य हैं।

जो धान्य-सरिसवया (सरसों) हैं, दो प्रकार के हैं- शस्त्रपरिणत और अशस्त्रपरिणत। उनमें जो अशस्त्रपरिणत हैं अर्थात् जिनको अचित्त करने के लिए अग्नि आदि शस्त्रों का प्रयोग नहीं किया गया है, अतएव जो अचित्त नहीं हैं, वे श्रमण-निर्ग्रन्थों के लिए अभक्ष्य हैं।

जो शस्त्रपरिणत हैं, वे दो प्रकार के हैं- प्रासुक और अप्रासुक। हे शुक! अप्रासुक भक्ष्य नहीं हैं। उनमें जो प्रासुक हैं, वे दो प्रकार के हैं- याचित (याचना किये हुए) और अयाचित (नहीं याचना किये हुए)। उनमें जो अयाचित हैं, वे अभक्ष्य हैं। उनमें जो याचित हैं, वे दो प्रकार के हैं। यथा-एषणीय और अनेषणीय। उनमें जो अनेषणीय हैं, वे अभक्ष्य हैं।

जो एषणीय हैं, वे दो प्रकार के हैं- लब्ध (प्राप्त) और अलब्ध (अप्राप्त)। उनमें जो अलब्ध हैं, वे अभक्ष्य हैं। जो लब्ध हैं वे निर्ग्रन्थों के लिए भक्ष्य हैं।

'हे शुक! इस अभिप्राय से कहा है कि सरिसवया भक्ष्य भी हैं और अभक्ष्य भी हैं।'

ज्ञाताधर्मकथा के उक्त दृष्टांत में यद्यपि श्रमण के भक्ष्य और अभक्ष्य का विवेचन किया गया है, किन्तु विषय के आलोक में यहाँ यह विशेष रूप से कहा जा सकता है कि अभक्ष्य का त्याग अनावश्यक संग्रह एवं हिंसा के त्याग की भावना को व्यक्त करता है। यदि व्यक्ति संयमपूर्ण आहार को ग्रहण करता है तो एक ओर उसके स्वास्थ्य और धर्म-आराधना का पालन तो होता ही है, साथ ही साथ आर्थिक दृष्टि से भी वह अपने आपको समृद्ध करता है। अतः समतावादी समाज-रचना के लिए जैनदर्शन के संदर्भ में निम्नांकित आर्थिक बिन्दुओं को रेखांकित किया जा सकता है-

1. अहिंसा की व्यावहारिकता
2. श्रम की प्रतिष्ठा
3. दृष्टि की सूक्ष्मता
4. आवश्यकताओं का स्वैच्छिक परिसीमन

5. साधन-शुद्धि पर बल 6. अर्जन का विसर्जन

1. अहिंसा की व्यावहारिकता- अहिंसा के सन्दर्भ में आचार्य अमृतचन्द्र ने कहा है-

अप्रादुर्भावः खलु रागादीनां भवत्यहिंसेति।
तेषामेवोत्पत्तिर्हिंसेति जिनागमस्य संक्षेपः।।

अर्थात् जहाँ रागादि भावों का अभाव होगा, वहीं अहिंसा का प्रादुर्भाव हो सकता है- ऐसा जैन परम्परा में स्वीकार किया गया है। महावीर ने समता के साध्य को प्राप्त करने के लिए अहिंसा को साधन रूप बताया है। अहिंसा मात्र नकारात्मक शब्द नहीं है, बल्कि इसके विविध रूपों में इसका सर्वाधिक महत्त्व सामाजिक होता है। वैभवसम्पन्नता, दानशीलता, व्यावसायिक कुशलता, ईमानदारी, विश्वसनीयता और प्रामाणिकता जैसे विभिन्न अर्थप्रधान क्षेत्रों में अहिंसा की व्यावहारिकता को अपनाकर श्रेष्ठता का मापदंड सिद्ध किया जा सकता है। अहिंसा की मूल भावना यह होती है कि अपने स्वार्थों, अपनी आवश्यकताओं को उसी सीमा तक बढ़ाओ, जहाँ तक वे किसी अन्य प्राणी के हितों को चोट नहीं पहुँचाती हों। अहिंसा इस रूप में व्यक्ति-संयम भी है और सामाजिक-संयम भी।

2. श्रम की प्रतिष्ठा

साधना के क्षेत्र में श्रम की भावना सामाजिक स्तर पर समादृत हुई। इसीलिए महावीर ने कर्मणा श्रम की व्यवस्था को प्रतिष्ठापित करते हुए कहा कि व्यक्ति कर्म से ही ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र बनता है।[5] उन्होंने जन्मना जाति के स्थान पर कर्म को मान्यता देकर श्रम के सामाजिक स्तर को उजागर किया, जहाँ से श्रम अर्थ-व्यवस्था से जुड़ा और कृषि, गोपालन, वाणिज्य आदि की प्रतिष्ठा बढ़ी।

जैन मान्यतानुसार सभ्यता की प्रारम्भिक अवस्था में जब कल्पवृक्षादि साधनों से आवश्यकताओं की पूर्ति होना सम्भव न रहा, तब भगवान् ने असि और कृषि रूप जीविकोपार्जन की कला विकसित की और समाज की स्थापना में प्रकृति-निर्भरता से श्रम-जन्य आत्म-निर्भरता के सूत्र दिए। यही श्रमजन्य आत्मनिर्भरता जैन परम्परा में आत्म-पुरुषार्थ और आत्म-पराक्रम के रूप में फलित हुई। अतः साधना के क्षेत्र में श्रम एवं पुरुषार्थ की विशेष प्रतिष्ठा है। यही कारण है कि व्यक्ति श्रम से परमात्म दशा प्राप्त कर लेता है। उपासकदशांगसूत्र में भगवान् महावीर और कुम्भकार सद्दालपुत्र का जो प्रसंग वर्णित है, उससे स्पष्ट होता है कि गोशालक का आजीवक मत नियतिवादी है तथा भगवान् महावीर का मत श्रमनिष्ठ आत्म-पुरुषार्थ और आत्मपराक्रम को ही अपनी उन्नति का केन्द्र बनाता है।

3. दृष्टि की सूक्ष्मता

धर्म के तीन लक्षण माने गये हैं- अहिंसा, संयम और तप। ये तीनों ही दुःख के स्थूल कारण पर न जाकर दुःख के सूक्ष्म कारण पर चोट करते हैं। मेरे दुःख का कारण कोई दूसरा नहीं, स्वयं मैं ही हूँ। अतः दूसरे को चोट पहुँचाने की बात न सोचूँ- यह अहिंसा है। "मित्ती में सव्वभूएसु"[6] को सार्वजनिक बनाना होगा। अपने को अनुशासित करूँ- यह संयम है। अतः दुःखों से उद्वेलित होकर अविचारपूर्वक होने वाली प्रतिक्रिया न करूँ- इसे परीषहजय भी कहते हैं तथा दुःख के प्रति स्वेच्छा से प्रतिकूल परिस्थिति को आमंत्रित करना तप है। अतः अहिंसा, संयम और तप रूप इन तीनों उत्कृष्ट मंगल[7] के प्रति हमारी प्रवृत्ति समरूप रहे। अपने आपको प्रतिकूल परिस्थितियों की दासता से मुक्त बनाये रखें और सब प्रकार की परिस्थितियों में अपना समभाव बना रहे, क्योंकि **समया धम्ममुदाहरे मुणी**[8] अर्थात् अनुकूलता में प्रफुल्लित न होना और प्रतिकूलता में विचलित न होना समता है। ऐसी सूक्ष्म दृष्टि रखने पर सामाजिक प्रवृत्ति समतापूर्वक की जा सकती है।

4. आवश्यकताओं का स्वैच्छिक परिसीमन

आधुनिक समाज की रचना श्रम पर आधारित होते हुए भी संघर्ष और असंतुलन पूर्ण हो गई है। जीवन में श्रम की प्रतिष्ठा होने पर जीवन-निर्वाह की आवश्यक वस्तुओं का उत्पाद और विनिमय प्रारम्भ हुआ। अर्थ-लोभ ने पूंजी को बढ़ावा दिया। फलतः औद्योगीकरण, यंत्रवाद, यातायात, दूरसंचार तथा अत्याधुनिक भौतिकवाद के हावी हो जाने से उत्पादन और वितरण में असंतुलन पैदा हो गया। समाज की रचना में एक वर्ग ऐसा बन गया, जिसके पास आवश्यकता से अधिक पूंजी और भौतिक संसाधन जमा हो गये तथा दूसरा वर्ग ऐसा बना, जो जीवन-निर्वाह की आवश्यकता को भी पूरी करने में असमर्थ रहा। फलस्वरूप श्रम के शोषण से बढ़े वर्ग-संघर्ष की मुख्य समस्या ने अन्तरराष्ट्रीय समस्या का रूप ले लिया।

इस समस्या के समाधान में समाजवाद, साम्यवाद जैसी कई विचारधाराएँ आयीं, किन्तु सबकी अपनी-अपनी सीमाएँ हैं। भगवान् महावीर ने आज से लगभग 2500 वर्ष पूर्व इस समस्या के समाधान के कुछ सूत्र दिए, जिनके सन्दर्भ में समतावादी समाज की रचना की जा सकती है। ये सूत्र अर्थ-प्रधान होते हुए भी जैन धर्म के साधना-सूत्र कहे जा सकते हैं। महावीर ने श्रावकवर्ग की आवश्यकताओं एवं उपयोग का चिंतन कर हर क्षेत्र में मर्यादा एवं परिसीमन पूर्वक आचरण करने के लिए बारह व्रतों का विधान किया है। जैन आगम उपासकदशांग के प्रथम अध्ययन आनंद श्रावक में वर्णित बारह व्रतों का विधान इस प्रकार है-

"अगारधम्मं दुवालसविहं आइक्खइ, तं जहा- पंच अणुव्वयाइं, तिण्णि गुणव्वयाइं, चत्तारि सिक्खावयाइं। पंच अणुव्वयाइं तं जहा- थूलाओ पाणाइवायाओ वेरमणं, थूलाओ मुसावायाओ वेरमणं, थूलाओ अदिण्णादाणाओ वेरमणं, सदारसंतोसे, इच्छापरिमाणे। तिण्णि गुणव्वयाइं तं जहा-अणत्थदंडवेरमणं, दिसिव्वयं, उवभोग-परिभोगपरिमाणं। चत्तारि सिक्खावयाइं तं जहा- सामाइयं, देसावगासियं, पोसहोववासे, अतिहि-संविभागे, अपच्छिमा-मारणंतिया-संलेहणा-झूसणाराहणा, अयमाउसो! अगार-सामाइए धम्मे पण्णत्ते एयस्स धम्मस्स सिक्खाए उवट्ठिए समणोवासए वा समणोवासिया वा विहरमाणे आणाए आराहए भवइ।"

भगवान् ने अगारधर्म बारह प्रकार का बतलाया- पांच अणुव्रत, तीन गुणव्रत तथा चार शिक्षाव्रत। पांच अणुव्रत इस प्रकार हैं-

1. स्थूल- मोटे तौर पर, अपवाद रखते हुए प्राणातिपात से निवृत्त होना।
2. स्थूल मृषावाद से निवृत्त होना।
3. स्थूल अदत्तादान से निवृत्त होना।
4. स्वदारसंतोष- अपनी परिणीता पत्नी तक मैथुन की सीमा करना।
5. इच्छा- परिग्रह की इच्छा का परिमाण या सीमाकरण करना।

तीन गुणव्रत इस प्रकार हैं-

1. **अनर्थदंड-विरमण-** आत्मा के लिए अहितकर या आत्मगुणघातक निरर्थक प्रवृत्ति का त्याग।
2. **दिग्व्रत-** विभिन्न दिशाओं में जाने के सम्बन्ध में मर्यादा या सीमाकरण।
3. **उपभोग-परिभोग-परिमाण व्रत-** उपभोग-जिन्हें अनेक बार भोगा जा सके, ऐसी वस्तुएँ-जैसे वस्त्र आदि तथा परिभोग जिन्हें एक ही बार भोगा जा सके- जैसे भोजन आदि इनका परिमाण-सीमाकरण।

चार शिक्षाव्रत इस प्रकार हैं-

1. **सामायिक-** समता या समत्वभाव की साधना के लिए एक नियत समय (न्यूनतम एक मुहूर्त्त-48 मिनिट) में किया जाने वाला अभ्यास।
2. **देशावकाशिक-** नित्य प्रति अपनी प्रवृत्तियों में निवृत्ति-भाव की बुद्धि का अभ्यास।
3. **पोषधोपवास-** अध्यात्म-साधना में अग्रसर होने के लिए यथाविधि आहार, अब्रह्मचर्य आदि का त्याग तथा
4. **अतिथि-संविभाग-** जिनके आने की कोई तिथि नहीं, ऐसे अनिमंत्रित संयमी

साधक या साधर्मिक बन्धुओं को संयमोपयोगी एवं जीवनोपयोगी अपनी अधिकृत सामग्री का एक भाग आदरपूर्वक देना, सदा मन में ऐसी भावना बनाए रखना कि ऐसा अवसर प्राप्त हो।

तितिक्षापूर्वक अन्तिम मरण रूप संलेखना-तपश्चरण, आमरण अनशन की आराधनापूर्वक देहत्याग श्रावक की इस जीवन की साधना का पर्यवसान है, जिसकी एक गृही साधक भावना लिए रहता है।

इनके पालने से दैनिक जीवन में आवश्यकताओं का स्वैच्छिक परिसीमन हो जाता है। परिसीमन के निम्नलिखित सूत्र हैं-

(क) इच्छा परिमाण

महावीर ने अपरिग्रह का सिद्धान्त देकर आवश्यकताओं को मर्यादित कर दिया। सिद्धान्तानुसार समतावादी समाज-रचना में यह आवश्यक हो गया कि आवश्यकता से अधिक वस्तुओं का संचय न करें। मनुष्य की इच्छाएँ आकाश के समान अनन्त हैं[9] और लाभ के साथ ही लोभ के प्रति आसक्ति बढ़ती जाती है, क्योंकि चाँदी-सोने के कैलाश पर्वत भी व्यक्ति को प्राप्त हो जाएँ, तब भी उसकी इच्छा पूरी नहीं हो सकती।[10] अतः इच्छा का नियमन आवश्यक है। इस दृष्टि से श्रावकों के लिए परिग्रह-परिमाण या इच्छा परिमाण व्रत की व्यवस्था की गयी है। अतः मर्यादा से व्यक्ति अनावश्यक संग्रह और शोषण की प्रवृत्ति से बचता है। सांसारिक पदार्थों का परिसीमन जीवन-निर्वाह को ध्यान में रखते हुए किया गया है, वे हैं- 1. क्षेत्र (खेत आदि भूमि), 2. हिरण्य (चाँदी), 3. वास्तु (निवास योग्य स्थान), 4. स्वर्ण (सोना), 5. धन (अन्य मूल्यवान पदार्थ) (ढले हुए या घी, गुड़ आदि), 6. धान्य (गेहूँ, चावल, तिल आदि), 7. द्विपद (दो पैर वाले), 8. चतुष्पद (चार पैर वाले), 9. कुप्य (वस्त्र, पात्र, औषधि आदि)।

(ख) दिक्परिमाण व्रत

भगवान् महावीर का दूसरा सूत्र है- दिक् परिमाणव्रत। विभिन्न दिशाओं में आने-जाने के सम्बन्ध में मर्यादा या निश्चय करना कि अमुक दिशा में इतनी दूरी से अधिक नहीं जाऊँगा। इस प्रकार की मर्यादा से वृत्तियों के संकोच के साथ-साथ मन की चंचलता समाप्त होती है तथा अनावश्यक लाभ अथवा संग्रह के अवसरों पर स्वैच्छिक रोक लगती है। क्षेत्र सीमा का अतिक्रमण करना अन्तरराष्ट्रीय कानून की दृष्टि में अपराध माना जाता है। अतः इस व्रत का पालन करने से दूसरे के अधिकार क्षेत्र में उपनिवेश बसा कर लाभ कमाने की या शोषण करने की वृत्ति से बचाव होता है। इस प्रकार के व्रतों से हम अपनी आवश्यकताओं

का स्वैच्छिक परिसीमन कर समतावादी समाज-रचना में सहयोग कर सकते हैं।

(ग) उपभोग-परिभोग परिमाण व्रत

उपभोग-परिभोग परिमाण-व्रत श्रावकों का एक अन्य व्रत है। दिक् परिमाणव्रत के द्वारा मर्यादित क्षेत्र के बाहर तथा वहाँ की वस्तुओं से निवृत्ति हो जाती है, किन्तु मर्यादित क्षेत्र के अन्दर और वहाँ की वस्तुओं के उपभोग (एक बार उपभोग), परिभोग (बार-बार उपभोग) में भी अनावश्यक लाभ और संग्रह की वृत्ति न हो, इसके लिए इस व्रत का विधान है। जैन आगम में वर्णित इस व्रत की मर्यादा का उद्देश्य यही है कि व्यक्ति का जीवन सादगीपूर्ण हो और वह स्वयं जीवित रहने के साथ-साथ दूसरों को भी जीवित रहने के अवसर और साधन प्रदान कर सके। व्यर्थ के संग्रह और लोभ से निवृत्ति के लिए इन व्रतों का विशेष महत्त्व है।

(घ) देशावकाशिक व्रत

दिक्परिमाण एवं उपभोग-परिभोग परिमाण के साथ-साथ देशावकाशिक व्रत का भी विधान श्रावक के लिए किया गया है, जिसके अन्तर्गत दिन-प्रतिदिन उपभोग-परिभोग एवं दिक्परिमाण व्रत का और भी अधिक परिसीमन करने का उल्लेख किया गया है अर्थात् एक दिन-रात के लिए उस मर्यादा को कभी घटा देना, आवागमन के क्षेत्र एवं भोगोपभोग्य पदार्थों की मर्यादा कम कर देना, इस व्रत की व्यवस्था में है। श्रावक के लिए देशावकाशिक व्रत में 14 विषयों का चिन्तन कर प्रतिदिन के नियमों में मर्यादा का परिसीमन किया गया है। वे चौदह विषय हैं-

सचित्त दव्व विग्गई, पन्नी, ताम्बूल वत्थ कुसुमेसु।
वाहण सयण विलेवण, बम्भ दिसि नाहण भत्तेसु।।[11]

इन नियमों से व्रत विषयक जो मर्यादा रखी जाती है, उसका संकोच होता है और आवश्यकताएँ उत्तरोत्तर सीमित होती हैं।

उक्त सभी व्रतों में जिन मर्यादाओं की बात कही गयी है, वह व्यक्ति की अपनी इच्छा और शक्ति पर निर्भर है। भगवान् महावीर ने यह नहीं कहा कि आवश्यकताएँ इतनी-इतनी सीमित हों। उनका मात्र संकेत इतना था कि व्यक्ति स्वेच्छापूर्वक अपनी शक्ति और सामर्थ्यवश आवश्यकताओं-इच्छाओं को परिसीमित व नियंत्रित करे, जिससे समतावादी समाज का निर्माण किया जा सके।

5. साधन-शुद्धि पर बल

साधन-शुद्धि पर बल देकर भी समतावादी समाज की रचना करने के कुछ सूत्र

महावीर ने दिए। अणुव्रतों के द्वारा व्यक्ति की प्रवृत्ति न केवल धर्म या दर्शन के क्षेत्र में विकसित होती है, बल्कि आर्थिक दृष्टि से भी अणुव्रतों का पालन समतावादी समाज-रचना का हेतु अथवा साधन माना जाता है। साधन-शुद्धि में विवेक, सावधानी और जागरूकता का बड़ा महत्त्व है।

जैन दर्शन में साधन-शुद्धि पर विशेष बल इसलिए भी दिया गया है कि उससे व्यक्ति का चरित्र प्रभावित होता है। बुरे साधनों से एकत्रित किया हुआ धन अन्ततः व्यक्ति को दुर्व्यसनों की ओर ले जाता है और उसके पतन का कारण बनता है। तप के बारह प्रकारों में अनशन, ऊनोदरी, भिक्षाचर्या और रस परित्याग भोजन से ही सम्बन्धित हैं। इसीलिए खाद्य शुद्धि-संयम प्रकारान्तर से साधन-शुद्धि के ही रूप बनते हैं।

अहिंसा की व्यावहारिकता की तरह ही सत्याणुव्रत एवं अस्तेयाणुव्रत का साधन-शुद्धि के सन्दर्भ में महत्त्व है। ये विभिन्न व्रत साधन की पवित्रता के ही प्रेरक और रक्षक हैं। अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए अर्थार्जन करने में व्यक्ति को स्थूल हितों से बचना चाहिए। सत्याणुव्रत में सत्य के रक्षण और असत्य से बचाव पर बल दिया गया। व्यक्ति अपने स्वार्थ के लिए, कन्नालीए (कन्या के विषय में), गवालीए (गौ के विषय में), भोमालीए (भूमि के विषय में), णासावहारे (अर्थात् धरोहर के विषय में झूठ न बोलें) तथा कूडसक्खिजे (झूठी साक्षी न दें) इनका उपयोग व उपभोग न करे। अर्थ की दृष्टि से सत्याणुव्रत का पालन कोर्ट-कचहरी में झूठे दस्तावेजों में तथा भ्रष्टाचार एवं रिश्वतखोरी में नहीं हो पाता, क्योंकि इन सभी क्षेत्रों में अर्थ की प्रधानता होने से असत्य का आश्रय लिया जाता है, जिससे समाज के मूल्य ध्वस्त हो जाते हैं। इसीलिए सत्याणुव्रत समाज-रचना का आधार बन सकता है।

अस्तेय व्रत की परिपालना का भी साधन-शुद्धता की दृष्टि से विशेष महत्त्व है। मन, वचन और काय द्वारा दूसरों के हकों का स्वयं हरण करना और दूसरों से हरण करवाना चोरी है। आज चोरी के साधन स्थूल से सूक्ष्म बनते जा रहे हैं। खाद्य वस्तुओं में मिलावट करना, झूठा जमा-खर्च बताना, जमाखोरी द्वारा वस्तुओं की कीमत घटा या बढ़ा देना, ये सभी कर्म चोरी के हैं। इन सभी सूक्ष्म तरीकों से चौर्यवृत्ति के कारण ही मुद्रा-स्फीति का इतना प्रसार है और विश्व की अर्थव्यवस्था उससे प्रभावित हो रही है। अतः अर्थ-व्यवस्था संतुलन के लिए आजीविका के जितने भी साधन हैं और पूंजी के जितने भी स्रोत हैं, उनका और पवित्र होना आवश्यक है, तभी हम समतावादी समाज का निर्माण कर सकते हैं।

इसी सन्दर्भ में भगवान् महावीर ने आजीविकोपार्जन के उन कार्यों का निषेध किया है, जिनसे पापवृत्ति बढ़ती है। वे कार्य कर्मादान कहे गये हैं। अतः साधन-शुद्धि के

अभाव में इन कर्मादानों को लोक में निन्द्य बताया गया है। इनको करने से सामाजिक प्रतिष्ठा भी समाप्त होती है। कुछ कर्मादान हैं, जैसे-

1. इंगालकर्म (जंगल जलाना)।
2. रसवाणिज्जे (शराब आदि मादक पदार्थों का व्यापार करना)।
3. विसवाणिज्जे (अफीम आदि का व्यापार)।
4. केसवाणिज्जे (सुन्दर केशों का क्रय-विक्रय)।
5. दवग्गिदावणियाकम्मे (वन जलाना)।
6. असईजणपोसणयाकम्मे (असतीजन/असामाजिक तत्त्वों का पोषण करना आदि)।

6. अर्जन का विसर्जन

अर्जन का विसर्जन भी आवश्यक है। इसे जैनदर्शन में स्वीकार्य दान एवं त्याग तथा संविभाग के साथ जोड़ सकते हैं। महावीर ने अर्जन के साथ-साथ विसर्जन की बात कही। अर्जन का विसर्जन तभी हो सकता है, जब हम अपनी आवश्यकताओं को नियंत्रित एवं मर्यादित कर लेते हैं। स्वैच्छिक परिसीमन के साथ ही अर्जन का विसर्जन लगा हुआ है। उपासकदशांग सूत्र में दस आदर्श श्रावकों का वर्णन है, जिनमें आनन्द, नन्दिनीपिता और सालिहीपिता की सम्पत्ति का विस्तृत वर्णन आता है। इससे यह स्पष्ट है कि महावीर ने कभी गरीबी का समर्थन नहीं किया। उनका प्रहार या चिन्तन धन के प्रति रही हुई मूर्च्छावृत्ति पर है। वे व्यक्ति को निष्क्रिय या अकर्मण्य बनने को नहीं कहते, पर उनका बल अर्जित सम्पत्ति को दूसरों में बांटने पर है। उनका स्पष्ट उद्घोष है- **असंविभागी ण हु तस्स मोक्खो** अर्थात् जो अपने प्राप्त को दूसरों में बाँटता नहीं है, उसकी मुक्ति नहीं होती। अर्जन के विसर्जन का यह भाव उदार और संवेदनशील व्यक्ति के हृदय में ही जागृत हो सकता है।

भगवती सूत्र में तुंगियानगरी के श्रावकों का उल्लेख मिलता है, जिनके घरों के द्वार अतिथियों के लिए सदा खुले रहते थे। अतिथियों में साधुओं के अतिरिक्त जरूरतमंद लोगों का भी समावेश है।

जैनदर्शन में दान और त्याग जैसी जनकल्याणकारी वृत्तियों का विशेष महत्त्व है। आवश्यकता से अधिक संचय न करना और मर्यादा से अधिक का जरूरतमंद लोगों में वितरित कर देने की भावना समाज के प्रति कर्त्तव्य व दायित्व बोध के साथ-साथ जनतांत्रिक समाजवादी शासन-व्यवस्था को जन्म देना कहा जा सकता है। दान का उद्देश्य समाज में ऊँच-नीच कायम करना नहीं, वरन् जीवन-रक्षा के लिए आवश्यक वस्तुओं का सम-वितरण करना है। दान केवल अर्थ दान तक ही सीमित नहीं रहा बल्कि आहारदान,

औषधिदान, ज्ञानदान तथा अभयदान इन रूपों में भी दान को जैन दृष्टिकोण से समझाया गया है। अतः अर्थ का अर्जन के साथ-साथ विसर्जन करके समाज को नया रूप दिया जा सकता है।

उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट है कि जैनदर्शन में जिन आर्थिक तत्त्वों का गुम्फन किया गया है, उनकी आज के सन्दर्भ में बड़ी प्रासंगिकता है और धर्म तथा अर्थ की चेतना परस्पर विरोधी न होकर एक-दूसरे की पूरक है।

सन्दर्भ-सूची-

1. समियाए धम्मे आरिएहिं पवेदिते- आचारांग सूत्र 5.3.45
2. मूलाचार 7.521
3. प्रवचनसार 1.84
4. मोहक्खोहविहीणो परिमाणो अप्पणो हु समो। - प्रवचनसार 1.7
5. कम्मुणा बम्भणो होई, कम्मुणा होइ खत्तिओ।
   वइस्सो कम्मुणा होइ, सुद्दो हवइ कम्मुणा।। - उत्तराध्ययनसूत्र 25.33
6. समणसुतं- 86
7. दशवैकालिक 1.1
8. आचारांगसूत्र
9. इच्छा उ आगाससमा अणन्तिया। उत्तराध्ययन सूत्र 9.48
10. सुवण्णरूपस्स उ पव्वया भवे, सिया हु केलाससमा असंखया।
    नरस्स लुद्धस्स ण तेहिं किंचि, इच्छा उ आगाससमा अणन्तिया।। -उत्तराध्ययनसूत्र 9.48
11. 1. सचित्तवस्तु, 2. द्रव्य, 3. विगय, 4. जूते, 5. पान, 6. वस्त्र, 7. पुष्प, 8. वाहन, 9. शयन, 10. विलेपन, 11. ब्रह्मचर्य, 12. दिशा, 13. स्नान, 14. भोजन।

-प्राकृत एवं जैन विद्या विभाग,
मोहनलाल सुखाडिया विश्वविद्यालय, उदयपुर(राज.)

ज़िन्दगी

सुश्री रिंकल जैन

1. ज़िन्दगी तो वह दिव्य दीपक है, जो अंधकार में भी प्रकाशपुञ्ज सा चमकता है।
2. ज़िन्दगी तो वह नन्हा फूल है, जो संस्कारों के आंचल से निकलकर जग को सुगन्धित करता है।
3. ज़िन्दगी तो वह पर्वत है, जो कठिनाइयाँ, परेशानियाँ आने पर भी अडिग और स्थिर रहता है।
4. ज़िन्दगी तो वह किताब है, जिसमें इंसान की संस्कार रूपी दिव्य शक्तियाँ वास करती हैं।
5. ज़िन्दगी तो पेड़ की वह शाखा है, जो हर पथिक को शीतलता प्रदान करती है।

-जोधपुर (राज.)

दीक्षा-अर्द्धशती वर्ष

गुणसमुद्र आचार्य श्री हीरा

श्रीमती अंशु संजय सुराणा

जैन धर्म जितना गरिमामय एवं गौरवशाली है, उतना ही गरिमा और गौरव से ओतप्रोत है इसका इतिहास। समय के रथ पर आरूढ़ होकर जैसे-जैसे इतिहास उन्नति के मार्ग पर बढ़ता गया, वैसे-वैसे इस इतिहास रूपी पुस्तक में कई अनमोल स्वर्णिम पृष्ठ जुड़ते गये, जिन्होंने इसे अनंत आकाश की ऊँचाइयों से भी ज्यादा ऊर्ध्वगामी, कोहिनूर हीरे की चमक से भी ज्यादा उज्ज्वल तथा पारस पत्थर से भी अधिक मूल्यवान बना दिया। ये उदाहरण चाहे साधु के हों, चाहे साध्वियों के, श्रावकों के हों या श्राविकाओं के, आज देदीप्यमान नक्षत्र बनकर इतिहास में चार चाँद लगा रहे हैं। एक-एक विभूति में ऐसी विलक्षणता है, जिसकी कल्पना करना भी हम अज्ञानियों के बस की बात नहीं, पर इसी विलक्षणता को प्रतिलक्षित करता है गुरु हीरा के जीवन का हर आयाम।

कहते हैं इतिहास सीखना आसान है, इतिहास में से कोई सीख लेना मुश्किल है, पर सबसे मुश्किल है इतिहास बना जाना।

'अतीत की बगिया से लेकर सुमन-सौरभ,
भर रहे जीवन में गुणों की सुवास।
प्रकट होते जब देखते वह पावन अनुभूति आप में,
गुरुदेव होता है एक सुखद अहसास।'

तो आइये करते हैं एक प्रयास अतीत के दरवाजों से आती हुई हवाओं के वर्तमान के महल में प्रवेश करने का करें आभास। भूतकाल के झरोखे से वर्तमान में झांकने का अभ्यास। अथाह समुद्र की गहराइयों में से कुछ चुने हुए मुक्ताओं को लेकर वर्तमान के आभूषण में पिरोने का प्रयास। अपनी कल्पनाओं की उड़ान से अतीत में से कूंची लेकर वर्तमान के चित्र को चितेरने का समायास, तब बनता है गुरु हीरा का चित्र अनायास।

नहीं समर्थ मेरी जबान, करने में आपके गुणों का बखान।
आप तो हैं अनंत गुण रत्नों की खान, मेरे हीरा गुरुवर महान्।।

गुरु हस्ती के प्रति आपका विनय समर्पण ऐसा जैसा गणधर गौतम का भगवान महावीर के प्रति, संघ संचालन क्षमता में गणि सुधर्मा का अक्स नज़र आता है, तो शासन सुरक्षा में विष्णु कुमार मुनि के दृष्टान्त को आप जीवन्त करते हैं। रत्न संघ के सिरमौर होकर भी, सबके संग रहकर भी सबसे आपकी निसंगता अनाथी मुनि का रूपक दर्शाती है। आपकी

गुरु भक्ति सर्वानूभूति, सुनक्षत्र मुनिवर जैसी है। आपने अपने जीवन में गुरुवर हस्तीमल जी म.सा. और कई अन्य संत भगवंतों की जो सेवा शुश्रूषा की है वह नंदिषेण मुनि की सेवा को स्मृति पटल पर ला देती है। आपने भद्रबाहु जैसे शासन की महती प्रभावना की है तो आपकी शासनप्रियता पुंडरीक राजा के दृष्टान्त को दृष्टिगोचर करा रही है। केशी कुमार जैसी ऋजुता, सरलता, लघुता के दर्शन तो आपमें निरन्तर होते ही रहते हैं। आर्यवज्र जैसा आपका विवेक न जाने कितनी ही प्रतिकूल परिस्थितियों को अल्पकाल में ही अनुकूल बनाता चला गया। कुंडकौलिक और आर्द्रकुमार जैसी आपकी तर्कणा शक्ति है, जिससे आप प्रत्यक्ष रूप से जिनशासन की महिमा बढ़ाने में सक्षम हैं।

आपकी साधना में हरिकेशीबल मुनि का स्वरूप नज़र आता है तो सहनशीलता में आप गजसुकुमाल की प्रतिमूर्ति हैं, अर्जुनमाली की प्रतिछाया हैं। आप क्षमा की जीवित प्रतिमूर्ति है। आपके मुखमण्डल पर विपरीत परिस्थितियों में भी क्रोध की एक क्षीण रेखा भी नहीं उभरती। आपकी मुस्कान और नेत्रों से एवंता जैसी निश्छलता टपकती है। आपमें अरणक मुनि जैसी कुलीनता है। चाहे शरीर में आधि-व्याधि का बसेरा हो जाए तो भी संयम में शिथिलता का लेशमात्र भी आपको मंजूर नहीं। आपकी रसना-विजय धन्ना अणगार का रूपक सामने लाकर खड़ा कर रही है। आपकी तपस्या ढंढ़ण मुनि के दृष्टान्त को जीवन्त करती दिखाई पड़ती है आपको आहार की क्षुधा नहीं, क्षुधा है आत्मतत्त्व के शोधन की।

आपमें धर्मरुचि अणगार जैसी दया है इसलिए आप प्रायः फरमाते हैं घृणा पाप से करो, पापी से नहीं। इस भवसागर में फंसे घृणित से घृणित कार्य करने वाले लज्जाहीन जीवों के प्रति भी आपके मन में दया का सागर हिलोरें लेता ही रहता है। आप जम्बूस्वामी जैसे वैराग्य के प्रणेता हैं जो स्वयं तो वैराग्य से परिपूर्ण हैं ही, संसर्ग में आने वाली वैरागी आत्माओं के वैराग्य को दृढ़ बना देते हैं। आपके ब्रह्मचर्य की पालना स्थूलिभद्र जैसी है, क्योंकि मोह के विषाक्त बाण आपको बींध नहीं सकते। आपका आगम ज्ञान बप्पभट्टी के अगाध ज्ञान का नमूना दर्शाता है। हेमचन्द्राचार्य जैसी आपकी भविष्यदृष्टि आने वाली परिस्थितियों और उनके परिणामों का आकलन पहले ही कर लेती है। आपकी मातृभक्ति आर्यरक्षित जैसी और पितृभक्ति सुकौशल मुनि और आर्य मनक जैसी है।

आप भटकी हुई साधक आत्माओं को पंथक मुनि जैसी प्रेरणा देकर संयम के पुनीत पथ पर पुनः आरोहित कर देते हैं। आपकी फटकार भी कमलावती रानी जैसी, राजमती जैसी है जो इक्षुकार राजा को सच्चे मार्ग का राही बनाती है, और रथनेमि को पुनः संयममार्ग पर आरूढ़ करती है। आपकी फटकार भी संघ-समाज के उत्थान का मार्ग प्रशस्त करती है। आपके धिक्कार में भी प्रेम है, संघ के प्रति चिन्ता है, अपनत्व का मधु रस है, स्नेह की

शीतल जलधारा है जो द्वेष के धधकते दावानल को भी बुझा देती है।

नमस्कार मंत्र के तृतीय पद पर प्रतिष्ठित होकर भी पद के मान से आप भरतचक्रवर्ती की तरह निर्लिप्त हैं। आपका मनमोहक रूप जो बाहरी दुनियाँ को अपनी ओर सहज ही आकृष्ट कर लेता है वह वसुदेव और बलभद्र मुनि का रूपक चित्र अंकित करता है। आपकी प्रसन्न मुखमुद्रा सदैव अमृत की वृष्टि करती रहती है। आपकी निस्पृहता चंदनबाला का भान कराती है तो आपकी एकाग्रता मृगावती का साक्षात्-दृश्य उपस्थित कर देती है। आपकी जिज्ञासा श्राविका जयंती जैसी है तो जिनभक्ति सुलसा की भक्ति का सुंदर आभास है। आपमें जिनपाल जैसा मनोबल है तो अरणक श्रावक और जिनदत्त जैसा धैर्य है। कार्तिक सेठ जैसी आपकी दृढ़धर्मिता है तो सेठ सुदर्शन, अभयकुमार और सुबुद्धिप्रधान जैसी प्रज्ञाशीलता आपके भीतर आवास करती है।

न जाने इस अथाह सागर में छिपे अन्य कितने ही रत्नों के गुण रूपी प्रकाश से आप प्रकाशित हो रहे हैं। हम जैसे भक्त आपके असीमित गुणों की व्याख्या को सीमित शब्दों में प्रकट करने का दुःसाहस कर जाते हैं। हममें ज्ञान का अभाव है, चिंतन की सीमितता है। मेरे शब्दों की गागर तुच्छ है आप विशाल गुणसागर हैं। हे करूणासिंधु! आप इस गागर में पूर्णतया कभी समाहित हो ही नहीं सकते, कभी भी नहीं, कदापि नहीं।

जिनका जीवन भोर की पहली किरण की तरह उज्ज्वल, झरने के कल-कल करते नीर की तरह निर्मल और शरद पूर्णिमा की छटकती चाँदनी के समान धवल है ऐसे हीरा गुरुवर के लिए तो हम यही कहेंगे-

ओ दिव्यात्मा! आपका विराट् स्वरूप, शब्दों में नहीं समाता है।
कितना भी कुछ लिखूँ, मगर लिखने को शेष रह ही जाता है।।

वीर प्रभु जयन्ती मनाते चलो

शशि कुमार बोहरा

ज्ञान की ज्योति जलाते चलो
वीर जयन्ती मनाते चलो।
राह में आये जो बन्धु उसे
मैत्री का महामंत्र सुनाते चलो। वीर जयन्ती.....।।
वीर प्रभु का संदेश यही है
सबको मित्र बनाओ
वैर-विरोध दूर कर सारे
परम सुखी बन जाओ। वीर जयन्ती.....।।

-608, महावीर मार्ग, टोंक रोड़, जयपुर (राज.)

English-Section

SIGNIFICANCE OF THE SIX AVASHYAKAS (ESSENTIALS)

Dr Priyadarshana Jain

(Continue from March Issue)

THE FRUIT OF THE SIX ESSENTIALS AND JAIN LIFESTYLE

i) The 29th chapter of the *Uttaradhyayana Sutra* records the fruit of almost all religious and spiritual exercises. It is to be noted here that the fruit mentioned here is not material but spiritual. When *Indrabhuti Gautama* asked the benefit of *Samayika*, Mahavira replied that the fruit of *Samayika* i.e. equanimity is refraining from all sinful activities. If the inauspicious activities are controlled then wholesome virtuous and auspicious activities will definitely grow. Reading of the sacred scriptures is *Śruta Samayika.* Having right understanding of reality is *Darśana Sāmāyika* and partial or complete practice of the vow of equanimity is *Cāritra Samayika.* Thus, *Samayika* is experience of contentment and neutrality; experience of the transcendental state beyond passions and mental agitations, wholesome, righteous thinking with pure and good intentions- all these are also the fruit of *Samayika.* Since beginningless time the soul has experienced everything in this world but not the pure joy of *Samayika* hence it suffers in transmigration.

ii) The fruit of *Caturvimsatistava* i.e. devotion is said to be the right understanding of the soul. Devotion to the 24 *Jinas* enables one to understand the nature of one's pure self and only then can one get rid of the delusion-producing karma which is the root of *Samsara.* By adoration of the 24 *Jinas* the soul achieves purity of faith. The *Jinas* are the true friends, philosophers and guides of mankind. Their adoration grants all the spiritual gifts as well as mundane benefits, but the devotion should be done in the right spirit. Their adoration begets spiritual well-being (*Ārogya*), right-understanding (*Bodhi*), peace of mind (*Samadhi*) and spiritual perfection (*Siddhi*).The omniscient *Jinas* are beyond attachment and hatred. They do not shower any grace physically nor curse those who are not devoted to them, but when anybody rightly knows them, then they know their

pure self and exert to manifest the same. This is their true grace that whosoever is devoted to them in thought, word and deed becomes God himself.

iii) The fruit of *Vandana* i.e. veneration is said to be the destruction of inauspicious status-determining *karma* i.e. the soul annihilates such *karma* which lead to birth in uncivilized existences, it also acquires such *karma* which will enable it to be born in noble families, there he wins the affection and goodwill of people and is respected as an authoritative person. For spiritual progress, reverence of the spiritual guide and guru is a pre-requisite, for he is like a lamp that illumines the path of spirituality by removing the darkness of beginning-less nescience.

iv) The fruit of *Pratikramana* i.e. penitential retreat of introspection, confession and repentance is that the soul checks all the inlets through which karmic influx takes place. One who observes *Pratikramana* knows the wrong paths and avoids them and treads on the path of conquerors. Through this spiritual exercise one recounts all the lapses and transgressions of the rules of righteous conduct and thoughts committed during the past and directs himself towards concentration and realization of the pure self, reveals the *Niyamasara*. *Pratikramana* is indeed soul-bath.Through *Pratikramana* one returns from: Wrong faith to right faith (*mithyatva* to *samyaktva*), vowlessness to taking vows (*avirati* to *virati*), invigilance to vigilance (*pramada* to *apramada*), passions to passionlessness (*kasaya* to *akasaya*) and lastly from inauspicious activity of mind, body and speech to auspicious ones (*asubha* yoga to *shubha* yoga).

In *Pratikramana* ninety-nine types of transgressions (*Aticaras*) are enumerated. The aspirant reflects on them through self-introspection and repents for the same and vows to be careful in future. The benefit of *Pratikramana* is that the five major causes of karmic influx are checked and closed, as a result of which the soul is able to knock at the kingdom of *Moksa* which is within each one and not anywhere outside. *Pratikramana* is a great healer of karmic diseases as it is also a type of austerity (*Prayascitta* i.e. expiation).

v) The fruit of the fifth essential *Kayotsarga* or detachment of the body is said to be the nullification of the past and present transgressions,

thereby one is eased of the burden of sins like a porter and engages in praiseworthy contemplation enjoying contentment and bliss. Not to want anything springs from a detached spirit and this is the way to true happiness. *Acharya Bhadrabahu* reveals the five great benefits of *Kayotsarga* as

1. Physical health
2. Enhanced intellectual capacity
3. Relief from stress and pain
4. Ability of concentration and memory
5. *Anupreksa* i.e. contemplation brings in clarity of thoughts which results in a spiritually healthy life-style.

Kayotsarga is like home-coming, coming to the self, by the self, for the self. It cleanses and purifies the soul to a great measure and dilutes and annihilates the great heaps of *karma*. Through *Kayotsarga* the mind becomes free from stress, tension, desires, delusion and such a mind is conducive for spiritual progress.

vi) The fruit of the sixth *Avashyaka - Pratyakhyana* is the stoppage of the influx of *karma*. All desire happiness but due to delusion, one is in illusion, tempted to enjoy the pleasures and in the bargain he invites great heaps of karma and becomes conditioned in the web of transmigration. Just as a spider weaves a web around itself, the ignorant soul weaves a web of karmas and is caught in it. Only through *Pratyakhyana* i.e. resolution of sinful activities one can check the vicious cycle of karmic influx. Only through stoppage of influx, does real *Sadhana* or spiritual quest commences. Not to desire anything is the greatest virtue, hence the mightiest emperor or a leader bows down to a *Muni* or *fakir* who wants nothing. Such an enlightened soul is a living God and a perfect human being.

Pratyakhyana is like having a boundary wall for the spiritual self and like an armour protecting the soul against the winds of desire and temptation. The surest way to achieve peace and happiness is renunciation through *Pratyakhyana*. In *Pratyakhyana* one has to resolve and take the vow of giving up the enjoyment of what one likes most and thus enhance the power of self-restraint. The Jains take to small resolutions on a daily basis in the mornings and begin their day with the exercise of self-control. The three great wishes of a *Jaina* laity are:

1. To conquer desires.
2. To renounce the world and lead a spiritual life.

3. To die-like a hero and embrace death wisely.

Although the *Avashyakas* are enumerated to be six, they are actually elaborations of one purpose of spirituality. Through all the *Avashyakas*, one purpose of absorbtion of the self, in the self is aimed at whether it is through veneration, devotion etc. Through the first *Avashyaka-Samayika*, one learns to be equanimous in all the ups and downs of life. Through the second *Avashyaka* he venerates to the pure souls and is inspired to discover his own pure self. As the Guru is absorbed in spiritual contemplation, the aspirant is inspired to learn the same-this is the message of the third *Avashyaka*. The message of the fourth *Avashyaka* is to disclaim all that is non-self and again absorb oneself in the pure-self. The fifth *Avashyaka* of *Kayotsarga* is aimed at gaining proximity of the pure self and through the sixth *Avashyaka* one vows and cautions himself not to go astray and be allured by the worldly temptations.

SIGNIFICANCE OF THE SIX *AVASHYAKAS*

(A) FROM THE SPIRITUAL POINT OF VIEW:

1. One who takes to the the *Avashyakas* is a *Shraman* and one who takes to them partially is a *Shravaka*. The difference is in the degree of practice and not in the commitment.
2. In the absence of the *Avashyakas* the soul is steeped in ignorance and perverted attitude, and hence wanders in the ocean of transmigration.
3. It is an essential aspect of the pathway of liberation. It is the path and the state of liberation. In the state of liberation the liberated souls are in perfect equanimity, detached and free of all defilements.
4. A soul that does not take to the *Avashyakas* is *Bahiratman*, a soul that takes to the *Avashyakas* is *Antaratman* and a soul that perfects them is *Paramatman*. It is the *Avashyakas* that enable the soul to transcend from bondaged state to liberated state, from materialism to spirituality.
5. It is an elaboration of the three jewels. To be in the self (right conduct) through right faith and right knowledge is *Samayik Avashyaka* and all the other five *Avashyakas* are to enable the soul to be absorbed in the pure self. (*Samayika* is *Atma* and *Atma* is *Samayika*).
6. It is the soul that takes to the *Avashyakas*. The practice of the *Avashyakas* arrests the influx of *karma* on one hand and at the same time causes annihilation of great heaps of *karma*. Thus the soul conquers all kinds of bondage and gets emancipated.

7. Absence of *Avashyakas* causes bondage of *karma* and suffering. In its absence the causes of bondage operate incessantly and burden the soul constantly.
8. The soul is its friend if it takes to the *Avashyakas* and is its foe if it does not.
9. Through the practice of the *Avashyakas*, the soul prays to acquire *arogya* (spiritual well being), *bodhi* (right understanding), *samadhi* (peace of mind) and perfection (*siddhi*) in his day to day life.
10. The soul emulates the liberated pure soul and tries to be cool like the moon, bright like the sun and profound like the ocean.
11. Through the *Pratikraman Avashyaka*, the soul expiates for all the wrong doings of the past and resolves not to repeat them in the future.
12. By taking to the *Avashyakas* one becomes a member of the four-fold Jain congregation (*sangha*) and becomes worthy of liberation.
13. The six *Avashyakas* signify spirituality, devotion, surrender, repentance, detachment and a life of discipline respectively.
14. Through the practice of *Avashyakas* one can constructively use the three channels of *Yoga* viz., mind, body and speech.
15. The practice of *Avashyakas* enables one to live a holistic life style which is devout, non-violent, compassionate, etc.
16. Only the practice of *Avashyakas* enables one to become worthy of liberation and only through the practice of *Avashyakas* one can realize the Godhood latent in each soul.
17. Through the practice of *Avashyakas*, the soul nurtures, virtues like *vinay* and *viveka* i.e., supreme humility and supreme discrimination respectively which are pre-requisites for liberation.
18. The practice of *Avashyakas* enables one to give up the first two kinds of *Artta* and *Raudra Dhyana* and in their place nurture *Dharma* and *Shukla Dhyana.*
19. In the absence of *Avashyakas* the soul lives a deluded life and is far away from enlightenment.
20. In the absence of *Avashyakas* the soul lives in a state of conflict-*sankalpa* and *vikalpa* and is ever confused, deluded, doubtful, unclear, unwise and violent. This is *bhava himsa* which causes all kinds of *dravya himsa.*

(B) FROM THE PSYCHOLOGICAL POINT OF VIEW:

1. The practice of the *Avashyakas* enables one to live a holistic lifestyle and truly develop one's personality.
2. The practice of the *Avashyakas* teaches self-management, passion management, stress management, time management, human resource management and resource management.
3. The transgressions of the vows are taken up by a weak mind that is confused, doubtful, unvigilant and unwise. The practice of the *Avashyakas* enables one to have a strong mind and not take to the transgressions of the vows and if he does so, he expiates and rectifies them. Such a person evolves holistically.
4. Real personality development is perfection of the *Avashyakas*.
5. Forgiveness, tolerance, endurance, friendliness, humility, modesty, etc are some of the virtues that are important for personality development. The practice of the *Avashyakas* fosters these *virtues* effortlessly.
6. Clairvoyance, telepathy and omniscience are termed as Extra Sensory Perception (ESP) in para-psychology. The practice of meditation, detachment and other advanced spiritual exercises through the *Avashyakas* enable one to tap the latent, inherent all knowing supreme knowledge.
7. The vow of *Sallekhana* which is a part of the *Avashyakas*, teaches the art of dying and enables one to face the inevitable death with wisdom and equanimity.

(C) FROM THE SOCIAL POINT OF VIEW:

1. The practice of the *Avashyakas* enables one to be a promoter of human rights and animal rights which is the need of the hour.
2. There is no punishment under the Indian Penal Code or any other land as the practitioner of the *Avashyakas* does not violate any law.
3. Those who take to the *Avashyakas*, practise equanimity that springs from spirituality and so do not take to evils like terrorism, racism, casteism, etc which cause all kinds of conflicts in the society.
4. Social evils like corruption, gender bias, addictions etc, do not rise if the *Avashyakas* are practised in thought, word and deed.
5. They look upon entire mankind as one and thus contribute to maintaining peace, harmony and universal brotherhood.
6. The practice of the *Avashyakas* makes one fearless in a world full of

fear and insecurity.

7. When a house holder takes to the ninth *samayik vrata* in his day to day life, it can be assumed that he does not violate the transgressions of the first eight *vratas* which are important for maintaining law and order in the society.
8. As different countries face economic recession, austerity measures are imposed on the people. This makes their life difficult as they are unwilling to accept the imposed austerity measures. But a practitioner of *Avashyakas* remains equanimous. The six *Avashyakas* enable him to live a life of equanimity, spirituality, contentment, etc and it is very easy for him to adapt to any situation.
9. The world today witnesses an unprecedented arms race where nuclear, biological and chemical weapons are increasing with every passing day. On the other hand the *Avashyakas* promote non-violence, non-absolutism and non-possession and such a practice and lifestyle alone will enable us to realize a peaceful world.
10. The materialist is worried that his wants are much, but the mystic is happy that he wants no more and this is possible through the practice of the *Avashyakas*.
11. The practice of *Avashyakas* enhances tolerance, compassion, the spirit of renunciation, philanthropy etc, which are important to maintain order in the society.
12. The practice of the *Avashyakas* makes the person trustworthy and he is seen as a friend of all living beings. People are fearless of those who practise the *Avashyakas* and this is in total contrast to a terrorist who spreads fear and is feared by all.
13. The *Avashyakas* are secular in nature and promote spirituality and not fundamentalism.

(D) FROM THE ENVIRONMENTAL POINT OF VIEW:

1. The practitioners of the *Avashyakas* lead an eco-friendly life-style and exercise utmost self-restraint (*sanyama*) to protect all life forms. They limit their needs and do not end up exploiting nature.
2. Study of economics tells us that wants are unlimited, but the resources are limited. One has to limit his wants so that the resources are not exploited and sustainable development can take place.
3. Practice of *Avashyakas* is important to safeguard the components of

the environment like earth, water, air etc, which are getting polluted due to industrialization, globalization, materialistic life style, etc.

4. Most species have become extinct and many more are on the verge of extinction. By practising the *Avashyakas*, we can collectively protect the life forms.
5. Today neither the food nor the water or air is pure. Diseases are on the rise globally. We die to eat and ultimately we die because of over-eating. There is no restraint because of the fast food culture. Food is being wasted in the developed countries and the masses are under-nourished in the developing countries. But the *Avashyakas* teach us to discipline our life style for protecting our health and the environment at large.
6. As all life is interconnected, the well being of one person is connected with the well being of all living beings. The practice of *Avashyakas* enables one to live a lifestyle where by the well being of all concerned is possible.
7. Every day is Earth Day and Friendship Day for a practitioner of the *Avashyakas*.

CONCLUSION

The heart of Jainism is its Ethics and the heart of Jaina Ethics is the practice of the *Avashyakas* or Essentials. The significance of the *Avashyakas* has been analyzed from the spiritual, psychological, social and environmental points of views. The above analysis is a twitter of Jaina beliefs and practices. The *Avashyakas* are significant as they promote a lifestyle that is non-violent, spiritual, holistic, eco-friendly, worthy and friendly.

REFERENCES AND SELECT BIBLIOGRAPHY

1. The basic thought of Bhagawan Mahavir by Dr.Jaykumar Jalaj
2. Jainism and the new spirituality by Dr.Vastupal Parekh
3. Avashyaka Sutra, Ed by Madhukar Muni
4. Niyamasar, Acharya Kundakunda
5. Samayika Sutra, Amar Muni
6. Avashyaka Sutra-Project of Dr Priyadarshana Jain
7. Acchi Samayika and Sacchi Samayika, by Sadhvi Yugprabha

-Asst. Prof & Head I/C, Dept. of Jainology, University of Madras, Chennai

अक्षय तृतीया पर विशेष

त्याग के गुण हम गायें

श्री गणेशमुनि शास्त्री

युग–युग से अक्षय जो जग में उस पर सब बलिहारी।
आदिनाथ का हुआ पारणा, हर्षित थे नर–नारी।
तृतीया सभी को भाये, त्याग के गुण हम गायें।।

नाभिराज मरुदेवी के जो थे नयनों के तारे।
ऋषभदेव भी कहते उनको दुनिया वाले सारे।
संयम का पथ वे पाये, त्याग के गुण हम गायें।।

बारह माह तक अन्न और जल नहीं प्रभु ने पाया।
हाथी घोड़े रत्न दिये, पर अन्न नहीं बहराया।
हस्तिनापुर में आये, त्याग के गुण हम गायें।।

ग्रीष्म ऋतु वैशाख मास में सूरज तपन बढ़ाये।
श्रेयांस कुंवर के राजमहल में इक्षु रस घट आये।
खड़े वहाँ दास उठाये, त्याग के गुण हम गायें।।

वातायन से देखा प्रभु को नगर में हैं आये।
नंगे पाँव दौड़कर वह चरणों में शीश झुकाये।
कुँवर मगन हो जाये, त्याग के गुण हम गायें।।

आँखों में थी चमक प्रभो के मुख था सूखा–सूखा।
शीतलता थी वहाँ महल में बाहर झोंका लू का।
स्वर्ग से देव भी आये, त्याग के गुण हम गायें।।

आप पधारे इस कुटिया में पावन मुझे किया है।
इक्षु रस स्वीकार करो तो समझूं मान दिया है।
मन मेरा तो खिल जाये, त्याग के गुण हम गायें।।

'मुनि गणेश' विनति सुनकर प्रभुवर ने हाथ बढ़ाये।
हुआ पारणा धरा गगन के जीव देख हर्षाये।
अक्षय यह तिथि हो जाये, त्याग के गुण हम गायें।।

पूज्य कुशलगणी की जय

।। श्री महावीराय नमः ।।
।। जय गुरू हस्ती ।।

श्री कुशलरत्न गजेन्द्रगणिभ्यो नमः

परमश्रद्धेय जैनाचार्य श्री १००८ श्री हस्तीमलजी म. सा. के सुशिष्य
आचार्य श्री १००८ श्री हीराचन्द्रजी म. सा. एवं उपाध्याय श्री मानचन्द्रजी म. सा. की जय

श्री श्वे. स्था. जैन चतुर्विध संघ के हितार्थ प्रमुख मुनियों द्वारा स्वीकृत
पाक्षिक पत्र विक्रम सम्वत् २०७०

वीर सम्वत् २५३९-४० (निर्णय सागर पंचाग से सम्पादित) सन् २०१३-२०१४

क्र. सं.	मास-पक्ष	तिथिवार	पक्खी दिनांक	घड़ी पल	क्षय तिथि	वृद्धि तिथि	रोहिणी नक्षत्र	पुष्य नक्षत्र	विशेष विवरण
१	चैत्र सुदि	१५ गुरू	२५.४.२०१३	४८-१३	१४	८	४ रवि	द्वि८ शुक्र	
२	वैशाख वदि	३० गुरू	९.५.२०१३	५९-५८	७	-	-	-	
३	वैशाख सुदि	१४ शुक्र	२४.५.२०१३	१८-४३	-	१	२ रवि	६ गुरू	
४	ज्येष्ठ वदि	३० शनि	८.६.२०१३	३९-०३	२	-	३० शनि	-	
५	ज्येष्ठ सुदि	१४ शनि	२२.६.२०१३	३७-३८	१२	४	-	प्र.४बुध	
६	आषाढ़ वदि	१४ रवि	७.७.२०१३	१०-५८	४	१३	प्र.१३शुक्र	-	
७	आषाढ़ सुदि	१५ सोम	२२.७.२०१३	४४-१८	१४	-	-	२ बुध	
८	श्रावण वदि	३० मंगल	६.८.२०१३	५२-५५	-	-	११ शुक्र	३० मंगल	
९	श्रावण सुदि	१४ मंगल	२०.८.२०१३	१०-१३	६	३	-	-	
१०	भाद्रपद वदि	१४ बुध	५.९.२०१३	२४-५५	१	९	प्र.९ गुरु	१२ सोम	

- -आयंबिल ओली प्रारम्भ चैत्र सुदि ७ बुधवार १७.४.२०१३।
- -भगवान महावीर जन्म कल्याणक चैत्र सुदि १३ बुधवार २४.४.२०१३।
- -आयंबिल ओली पूर्ण चैत्र सुदि १५ गुरूवार २५.४.२०१३।
- -अक्षय तृतीया वैशाख सुदि ३ सोमवार १३.५.२०१३।
- -आचार्य भगवन्त पूज्य गुरूदेव १००८ श्री हस्तीमलजी म. सा. की २२वीं पुण्य तिथि वैशाख सुदि ८ शनिवार १८.५.२०१३ ।
- -भगवान महावीर केवल कल्याणक एवम् संघ स्थापना दिवस वैशाख सुदि १० सोमवार २०.५.२०१३ ।
- -आचार्य प्रवर १००८ श्री हीराचन्द्रजी म. सा. का २३ वां आचार्य पदारोहण दिवस ज्येष्ठ वदि ५ बुधवार २९.५.२०१३ ।
- -परम्परा के मूल पुरूष पूज्य श्री कुशल चन्द्रजी म. सा. की २३० वीं पुण्य तिथि ज्येष्ठ वदि ६ गुरूवार ३०.५.२०१३ ।
- -आर्द्रा नक्षत्र प्रारम्भः ज्येष्ठ सुदि १३ शुक्रवार २१.६.२०१३, इसके पश्चात्गाज-बीज होने पर सूत्र की असज्झाय नहीं रहेगी ।
- -क्रियोद्धारक पूज्य आचार्य श्रीरतन चन्द जी म. सा. की १६८ वीं पुण्य तिथि ज्येष्ठ सुदि १४ शनिवार २२.६.२०१३ ।

श्री महावीराय नमः

जय गुरु हीरा श्री कुशलरत्नगजेन्द्रगणिभ्यो नमः जय गुरु मान

जैन भागवती दीक्षा-महोत्सव

आदरणीय धर्मप्रेमी बन्धुवर,

सादर जय जिनेन्द्र !

आपको सूचित करते हुए परम प्रसन्नता है कि **परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा.** की आज्ञा से **वैशाख शुक्ला पंचमी, बुधवार, दिनांक 15 मई 2013** को **सवाईमाधोपुर** एवं **चेन्नई** में निम्नांकित मुमुक्षु बहिनों की **जैन भागवती दीक्षाएँ** सम्पन्न होने जा रही हैं–

(1) सवाईमाधोपुर (राज.) में सम्पन्न होने वाली दीक्षाएँ

मुमुक्षु बहिन सुश्री प्रभा जैन

मुमुक्षु बहिन सुश्री अन्तिमा जैन

उक्त दीक्षाएँ परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर **पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा.** के मुखारविन्द से तथा परम श्रद्धेय **उपाध्यायप्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म. सा.,** प्रभृति मुनिपुंगवों की मंगलमनीषा से एवं साध्वीप्रमुखा शासनप्रभाविका महासती **श्री मैनासुन्दरीजी म.सा.** की नेश्रायवर्तिनी व्याख्यात्री महासती **श्री तेजकंवर जी म.सा.,** व्याख्यात्री महासती **श्री सोहनकंवर जी म.सा.** आदि ठाणा के पावन सान्निध्य में सम्पन्न होंगी।

दीक्षा स्थल– **सार्वजनिक उद्यान, बाल मन्दिर कॉलोनी, पानी की बड़ी टंकी के पास, बजरिया, सवाईमाधोपुर–322001 (राज.)**

(2) चेन्नई (तमि.) में सम्पन्न होने वाली दीक्षा

मुमुक्षु बहिन सुश्री शीतल आंचलिया

यहाँ पर व्याख्यात्री **महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा.** एवं व्याख्यात्री **महासती श्री चारित्रलता जी म.सा.** आदि ठाणा के पावन सान्निध्य में दीक्षा सम्पन्न होगी।

दीक्षा स्थल– **गुरु शांति विजय जैन कॉलेज फोर वुमेन, वेपेरी हाई रोड, वेपेरी, चेन्नई–600007**

अनुरोध

आपसे विनम्र अनुरोध है कि दीक्षा-महोत्सव के पावन-पुनीत प्रसंग पर व्रत-नियमयुक्त श्रद्धा समर्पण के साथ जैन भागवती दीक्षा की अनुमोदना का लाभ प्राप्त करें।

मुमुक्षु बहिन

सुश्री प्रभा जैन : परिचय

जन्मतिथि- 25 जनवरी 1989

जन्मस्थान- श्यामपुरा(जिला-सवाईमाधोपुर)

व्यावहारिक शिक्षा- बी.ए.

पारिवारिक परिचय

दादा-दादी : श्री राजूलाल जी-गाजादेवी जी जैन, सवाईमाधोपुर

पिता-माता : श्री नरेन्द्रमोहनजी-चमेलीदेवी जी जैन, सवाईमाधोपुर

भाई-भाभी : श्री जिनेन्द्र जी-शिल्पी जी जैन, सवाईमाधोपुर
श्री संदीप जी-अंकिता जी जैन, सवाईमाधोपुर

बहिन-बहिनोई : श्रीमती अमिता जी-श्री ऋषभ जी जैन
श्रीमती हेमलता जी-पंकज जी जैन
श्रीमती रीना जी-चेतन जी जैन

धार्मिक अध्ययन

आगम कण्ठस्थ : दशवैकालिकसूत्र, उत्तराध्ययन सूत्र, आवश्यक सूत्र, वीरस्तुति, आचारांग सूत्र, अन्तगडदशासूत्र, अणुत्तरोववाईसूत्र, व्यवहार सूत्र, बृहत्कल्पसूत्र, निरयावलिया पंचक, नन्दीसूत्र, सुखविपाक सूत्र

स्तोक कण्ठस्थ : 25 बोल, 67 बोल, कर्मप्रकृति, समिति-गुप्ति, लघुदण्डक, 33 बोल, 47 बोल, 50 बोल एवं 800 बोल की बन्धियाँ, 14 बोल, 98 बोल, 102 बोल का बासठिया, जीवधड़ा, नवतत्त्व, जीव-पज्जवा, अजीव-पज्जवा, गमा, नियंट्ठा, द्रव्येन्द्रिय, संजया, गुणस्थानस्वरूप, छह कर्मग्रन्थ, जैन सिद्धान्त थोक संग्रह-भाग 1 से 3, पन्नवणा सूत्र का तीसरा भाग, कायस्थिति, तत्त्वार्थसूत्र आदि।

स्तोत्र : भक्तामर, कल्याणमंदिर, महावीराष्टक, रत्नाकर पच्चीसी (हिन्दी व संस्कृत)

भाषा ज्ञान : हिन्दी, अंग्रेजी।

अन्य : अ.भा.श्री जैन रत्न आ. शिक्षणबोर्ड की प्रथम से सप्तम कक्षा उत्तीर्ण, जैनागम स्तोक वारिधि पाठ्यक्रम प्रथम एवं द्वितीय भाग।

पर्युषण सेवा : तीन वर्ष वैराग्यावधि : 15 माह

मुमुक्षु बहिन

सुश्री अन्तिमा जैन : परिचय

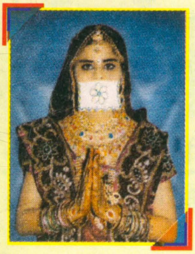

जन्मतिथि- 10 सितम्बर 1993

जन्मस्थान- श्यामपुरा (जिला-सवाईमाधोपुर)

व्यावहारिक शिक्षा- बी.एस.सी. (प्रथम वर्ष)

पारिवारिक परिचय– मुमुक्षु सुश्री प्रभा जैन के परिचयवत्

धार्मिक अध्ययन

आगम कण्ठस्थ : दशवैकालिकसूत्र, उत्तराध्ययनसूत्र, आवश्यकसूत्र, आचारांगसूत्र, कप्पवडिंसिया सूत्र, अणुत्तरोववाइयसूत्र, नन्दीसूत्र, सुखविपाक सूत्र, वण्हिदसासूत्र, पुप्फचूलिया, वीरस्तुति।

स्तोक कण्ठस्थ : 25 बोल, 67 बोल, कर्मप्रकृति, समिति-गुप्ति, लघुदण्डक, 33 बोल, 47 बोल, 50 ओल एवं 800 बोल की बन्धियाँ, 14 बोल, 98 बोल, 32 बोल, 102 बोल का बासठिया, जीवधड़ा, गति-आगति नवतत्त्व, जीव-पज्जवा, अजीव-पज्जवा, गमा, द्रव्येन्द्रिय, ज्ञानलब्धि, रूपी-अरूपी, छह कर्मग्रन्थ, जैन सिद्धान्त थोक संग्रह-भाग 1 से 2, पन्नवणा सूत्र का तीसरा भाग, जयन्तीबाई के प्रश्न, तत्त्वार्थसूत्र आदि।

स्तोत्र : भक्तामर, कल्याणमंदिर, महावीराष्टक, रत्नाकर पच्चीसी (हिन्दी)

भाषा ज्ञान : हिन्दी, अंग्रेजी।

अन्य : अ.भा.श्री जैन रत्न आ. शिक्षणबोर्ड की प्रथम से चतुर्थ कक्षा उत्तीर्ण, जैनागम स्तोक वारिधि पाठ्यक्रम प्रथम एवं द्वितीय भाग।

पयुर्षण सेवा : तीन वर्ष **वैराग्यावधि** : 15 माह

मुमुक्षु बहिन

सुश्री शीतल आंचलिया : परिचय

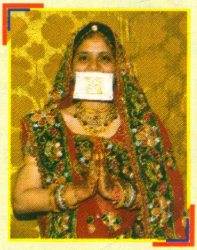

जन्मतिथि– 08 जनवरी 1987

जन्मस्थान– शोरापुर (कर्नाटक)

व्यावहारिक शिक्षा– बी.कॉम.

पारिवारिक परिचय

पिता–माता : श्री कांतिलाल जी–वनिताबाई जी आंचलिया

भाई–भाभी : श्री सुमित जी–समता जी आंचलिया
श्री अमित जी–प्रिया जी आंचलिया

बहिन–बहिनोई : श्रीमती सपना जी–श्री अजीतराज जी बाघमार
श्रीमती शिल्पा जी–नीरज जी बोथरा
श्रीमती सारिका जी–सिद्धार्थ जी मेहता

धार्मिक अध्ययन

आगम कण्ठस्थ : दशवैकालिकसूत्र, उत्तराध्ययनसूत्र, वीरस्तुति, नन्दीसूत्र, सुखविपाक सूत्र, आचारांग सूत्र, अंतगडदशासूत्र, चार छेद सूत्र, अणुत्तरोववाई, अनुयोगद्वार, तत्त्वार्थसूत्र।

स्तोक कण्ठस्थ : पाँच कर्मग्रन्थ, 33 बोल, समिति-गुप्ति, 25 बोल, 67 बोल, लघुदण्डक, कर्मप्रकृति, जीवधड़ा, नवतत्त्व, जीवपज्जवा, अजीवपज्जवा, द्रव्येन्द्रिय, संजया-नियंट्ठा।

स्तोत्र : भक्तामर, कल्याणमंदिर, महावीराष्टक

भाषा ज्ञान : हिन्दी, अंग्रेजी, कन्नड़

वैराग्यावधि : 4 वर्ष

दीक्षा-महोत्सव-कार्यक्रम

सवाईमाधोपुर

14 मई 2013

शोभायात्रा- प्रातः 8.00 बजे वीर परिवार के निवास स्थान, मीणा कॉलोनी, बजरिया से प्रस्थान कर प्रमुख मार्गों से होती हुई परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. प्रभृति संत-सतीवृन्द की सेवा में 32-बालमन्दिर कॉलोनी, बजरिया प्रातः 10.00 बजे पहुँचकर मांगलिक श्रवण करेगी।

अभिनन्दन समारोह - मध्याह्न 1.30 बजे से

स्थान- सार्वजनिक उद्यान, बाल मन्दिर कॉलोनी, पानी की बड़ी टंकी के पास, बजरिया, सवाईमाधोपुर

15 मई 2013

अभिनिष्क्रमण यात्रा- प्रातः 9.00 बजे निवास स्थान मीणा कॉलोनी से प्रस्थान कर दीक्षा-स्थल पर पहुँचेगी, जहाँ दीक्षा-महोत्सव-कार्यक्रम प्रारम्भ होगा।

दीक्षा पाठ- मध्याह्न 1.00 बजे लगभग परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के मुखारविन्द से।

चेन्नई

14 मई 2013

शोभायात्रा- प्रातः 8.30 बजे वीर परिवार के अस्थायी निवास-स्थान C.U. Shah Bhawan, New No. 4 (Old No. 78/79) Ritherdon Road, Puruswalkam, Chennai-600007 से प्रस्थान कर प्रमुख मार्गों से होती हुई व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्रीचारित्रलता जी म.सा. आदि ठाणा की सेवा में Keshvana House, E.V.K. Sampath Road, Vepary, Chennai-600007 प्रातः 10.30 बजे पहुँचकर मांगलिक श्रवण करेगी।

अभिनन्दन समारोह- अपराह्न 3 बजे, स्थान- गुरु श्री शांति विजय जैन कॉलेज फोर वुमेन, वेपेरी हाई रोड, वेपेरी, चेन्नई-600007

15 मई 2013

अभिनिष्क्रमण यात्रा- प्रातः 11.00 बजे आदिनाथ अपार्टमेन्ट से प्रस्थान कर दीक्षा-स्थल गुरु श्री शांति विजय जैन कॉलेज वेपेरी पर पहुँचेगी, जहाँ दीक्षा-महोत्सव कार्यक्रम प्रारम्भ होगा।

दीक्षा पाठ-मध्याह्न 1.00 बजे लगभग व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. के मुखारविन्द से

विनीत

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर (राज.)

फोन:0291-2636463, ईमेल : absjrhssangh@yahoo.com

निवेदक- मुमुक्षु बहिनों के पारिवारिक जन

श्री राजुलाल जी नरेन्द्रमोहन जी जैन, सवाईमाधोपुर-09784320766

श्री रमेशचन्द कांतिलाल जी आंचलिया, शोरापुर, चेन्नई-08443256831, 9448405441

आयोजक

श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, नगर परिषद् क्षेत्र,

स्वाध्याय भवन, बजरिया, सवाईमाधोपुर (राज.) फोनः

श्री राधेश्याम जी गोटेवाला-09461863233,

श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ-चेन्नई,

फोनः श्री महेन्द्र जी कांकरिया-09444051313

११	भाद्रपद सुदि	१५ गुरू	१९.९.२०१३	२५-३३	१०	-	-	-
१२	आश्विन वदि	१४ शुक्र	४.१०.२०१३	०-०५	३०	१३	६ बुध	११ सोम
१३	आश्विन सुदि	१५ शुक्र	१८.१०.२०१३	५६-०३	१३	-	-	-
१४	कार्तिक वदि	१४ शनि	२.११.२०१३	३३-२३	-	३	४ बुध	८ रवि
१५	कार्तिक सुदि	१५ रवि	१७.११.२०१३	३४-१८	५	-	-	-
१६	मार्गशीर्ष वदि	१४ सोम	२.१२.२०१३	४-१३	३०	५	२ मंगल	द्वि ५शनि
१७	मार्गशीर्ष सुदि	१५ मंगल	१७.१२.२०१३	१८-५५	-	-	१४ सोम	-
१८	पौष वदि	१४ मंगल	३१.१२.२०१३	३२-३३	१०	८	-	४ शनि
१९	पौष सुदि	द्वि१४ बुध	१५.१.२०१४	०-४८	३	१४	१२ रवि	-
२०	माघ वदि	३० गुरू	३०.१.२०१४	४९-१३	१४	-	-	१ शुक्र
२१	माघ सुदि	१५ शुक्र	१४.२.२०१४	५५-१०	-	-	१० रवि	१४ गुरू
२२	फाल्गुन वदि	३०शनि	१.३.२०१४	१६-००	१०	१	-	-
२३	फाल्गुन सुदि	१५ रवि	१६.३.२०१४	३६-३०	३	८	प्र.८शनि	११ बुध
२४	चैत्र वदि	३० रवि	३०.३.२०१४	४४-०८	१३	-	-	-

-२१७ वां क्रियोद्धारक दिवस आषाढ वदि २ मंगलवार २५.६.२०१३ ।
-चातुर्मास प्रारम्भ (चातुर्मासी पक्खी) आषाढ सुदि १५ सोमवार २२.७.२०१३।
-पूज्य आचार्य श्री शोभाचन्द्र जी म. सा. की ८७ वीं पुण्यतिथि श्रावण वदि ३० मंगलवार ६.८.२०१३ ।
-पर्युषण पर्व प्रारंभ भाद्रपद वदि १२ सोमवार २.९.२०१३ ।
-संवत्सरी महापर्व भाद्रपद सुदि ४ सोमवार ९.९.२०१३ ।
-आयंबिल ओली प्रारम्भ, आसोज सुदि ७ शुक्रवार ११.१०.२०१३ ।
-पूज्य आचार्य श्री भूधरजी म. सा. की पुण्य तिथि आसोज सुदि १० सोमवार १४.१०.२०१३ ।
-आयंबिल ओली पूर्ण आसोज सुदि १५ शुक्रवार १८.१०.२०१३ ।
-स्वाति नक्षत्र प्रारम्भ कार्तिक वदि ४ बुधवार २३.१०.२०१३, इसके पश्चात् गाजबीज होने पर सूत्र की असज्झाय रहेगी।
-भगवान महावीर निर्वाण कल्याणक कार्तिक वदि ३० रविवार ३.११.२०१३ ।
-वीर संवत् २५४० प्रारम्भ एवं गौतम प्रतिपदा कार्तिक सुदि १ सोमवार ४.११.१३ ।
-ज्ञान पंचमी कार्तिक सुदि ४/५ गुरूवार ७.११.२०१३ ।
-आचार्य प्रवर १००८ श्री हीराचन्द्रजी म. सा. का ५१ वां दीक्षा दिवस कार्तिक सुदि ६ शुक्रवार ८.११.२०१३ ।
-चातुर्मासिक पक्खी (चातुर्मास पूर्ण) एवं वीर लोंकाशाह जयन्ती कार्तिक सुदि १५ रविवार १७.११.२०१३ ।
-मौन एकादशी एवं आचार्य पूज्य श्री विनयचन्द्र जी म.सा. की ९८ वीं पुण्य तिथि मार्गशीर्ष सुदि ११ शुक्रवार १३.१२.२०१३ ।
-भगवान पार्श्वनाथ जन्म कल्याणक पौष वदि ९/१० शुक्रवार २७.१२.२०१३ ।
-फाल्गुनी चातुर्मासी पर्व (चातुर्मासिक पक्खी) फाल्गुन सुदि १५ रविवार १६.३.२०१४ ।
-भगवान आदिनाथ जन्म कल्याणक एवं आचार्य प्रवर १००८ श्री हीराचन्द्रजी म.सा. का ७६ वां जन्म दिवस चैत्र वदि ८ सोमवार २४.३.२०१४ ।

प्राप्ति स्थानः- श्री रिखबचन्द सिंघवी, 507 ए, 5-बी रोड़, सरदारपुरा, जोधपुर-342003, फोनः 09460767029

कविता

बिखराव होता है

श्री मगनचन्द जैन

मेरा तेरा करने से बिखराव होता है।
मैं का भाव रखने से अहंकार बढ़ता है।।
राग-द्वेष करने से कर्म-बन्ध होता है।
अठारह पाप-सेवन से जीवन बिगड़ता है।
प्रमाद करने से साध्य पीछे पिछड़ता है।
पुरुषार्थ-हीन व्यक्ति का विकास रुकता है।।
मेरा तेरा करने.......।।

ज्यों-ज्यों लाभ होता है, त्यों-त्यों लोभ बढ़ता है।
मान करने से विनय का नाश होता है।
कामना से चित्त में विकार आता है।
मोह-ममता से जग में भटकाव होता है।।
मेरा तेरा करने.......।।

जिनाज्ञा विराधक को नहीं मोक्ष मिलता है।
स्वच्छन्द जीवन का नहीं कोई मूल्य होता है।
क्रोध करने से सदा तूफान उठता है।
करे आशातना गुरु की तो बेड़ा गर्क होता है।।
मेरा तेरा करने.......।।

समभाव रखने से मन शान्त रहता है।
स्वाध्याय करने से सद्ज्ञान मिलता है।
गुण-अर्जन से व्यक्ति को सम्मान मिलता है।
साधना करने से लक्ष्य पूर्ण होता है।।
मेरा तेरा करने.......।।

धर्म-धारण करने से सौभाग्य जगता है।
मर्यादित आचरण सभी को मान्य होता है।
मोह विजय करने से वैराग्य होता है।
'मगन' सच्ची श्रद्धा से सम्यक्त्व होता है।
मेरा तेरा करने से बिखराव होता है।
मैं का भाव रखने से अहंकार बढ़ता है।।

-सेवानिवृत्त अध्यापक, फाजिलाबाद (हिण्डौन), जिला-करौली (राज.)

तत्त्वबोध

जिज्ञासा-समाधान

संकलित

(आ) 'दीक्षा स्वीकार करने से अनाथता समाप्त हो जाती है।' इसे उत्तराध्ययन के आधार पर स्पष्ट करें।

उत्तर-दीक्षा ग्रहण करने वाले के भीतर में आत्म-भाव का कमल खिलता है। साधक का जीवन इसकी अद्वितीय गंध से गंधयुक्त हो परिवेश को भी महका देता है। उत्तराध्ययन सूत्र के 20 वें अध्ययन में यही भावधारा बह रही है। अनाथ से सनाथ बनने की विधि कह रही है। राजा श्रेणिक अनाथी मुनि की अद्वितीय रूप सम्पदा को देखकर आश्चर्य चकित हो जाते हैं। ध्यान कोष्ठक से बाहर आए मुनि श्रेणिक की जिज्ञासाओं का शमन करते हैं तथा पहला शब्द "अणाहो मि महाराय" प्रयोग करते हैं। संयम-नरेश मगध-नरेश को सनाथता-अनाथता का अर्थ स्पष्ट करते हैं कि धन, दौलत, माता-पिता, भाई-भगिनी, पत्नी, परिवार इनकी प्राप्ति से कोई सनाथ नहीं होता है। सांसारिक दृष्टि से यह सनाथता हो सकती है, पर आध्यात्मिक दृष्टि सम्पन्न मुनि कहते हैं- जब मेरी आँखों में प्रचण्ड वेदना हुई थी तब कोई भी सांसारिक वस्तु, नाती-रिश्ते उसके समाधान में योग्य सिद्ध नहीं हुए। सभी दिशाओं से निराश मुनि द्वारा धर्म की शरण में जाते ही, मात्र एक रात्रि में मेरी सारी वेदना नष्ट हो गई और प्रातः काल अणगार धर्म को स्वीकार कर लिया। **"तोहं नाहो जाओ अप्पणस्स परस्स य, सव्वेसिं चेव भूयाणं तसाणं थावराण य।"**-20.33। हे भूपाल! प्रव्रज्या अंगीकार करने के बाद मैं अपना और दूसरों का, त्रस और स्थावर प्राणियों का नाथ हो गया। स्व का नाथ ही पर का नाथ होता है। इन्द्रिय और मन को वश में कर लेने वाला स्व का नाथ होता है अर्थात् जीव जब इनका व सांसारिक पदार्थों की दासता के त्याग का शंखनाद कर देता है तब वह अपना नाथ बन जाता है। अपने सिवाय अपनी पूर्ति इस संसार में कोई नहीं कर सकता। इसी प्रकार स्व के सिवाय स्व का नाथ कोई नहीं बन सकता है। जब आत्मा इन्द्रियोन्मुखी होती है तो इन्द्रियाँ आत्मा की नाथ बनती हैं और जब आत्मा इन्द्रियों का दमन करती है तो वह स्वयं नाथ बन जाती है। आत्मा ज्ञान-दर्शन-चारित्र सम्पदा से युक्त होती है, किन्तु उपयोग पर-द्रव्य में लगा होने से वह अनाथ बनी रहती है। पर अलब्ध रत्नत्रय के

लाभ से एवं लब्ध रत्नत्रय के प्रमाद परिहार पूर्वक परिरक्षण से जीव अपना नाथ बन जाता है।

दीक्षा के बाद नाथ कैसे बन जाते हैं? इस संदेह की निवृत्ति निमित्त योगीश्वर अनाथी मुनि कहते हैं कि उद्धत आत्मा नरक का हेतु होने से वैतरणी नदी के समान है। पीड़ा जनक आत्मा की हेतु होने से शाल्मली वृक्ष जैसी है। यह अभिलषित स्वर्ग एवं अपवर्ग के सुखों को देने वाली होने से कामधेनु है। यह चित्त के आह्लाद की कारण होने से नंदनवन के समान है।

सुख और दुःखों का कर्त्ता-भोक्ता यह आत्मा ही है। दुराचरण में फँसी आत्मा सदाचरण का सेवन करने लग जाती है तब अभिलषित पदार्थ का हेतुक होने से वह स्वयं का मित्र बन जाती है। आत्मा में सदाचरण एवं तल्लीनता प्रव्रज्या को अंगीकार करने पर ही आती है। अतः दीक्षा के बाद ही सनाथता प्रकट होती है। दीक्षा लेने के बाद जीव स्व का ही नहीं दूसरे जीवों का भी नाथ बन जाता है। क्योंकि वास्तविक सुख जिन्हें अप्राप्त है वह उन्हें प्राप्त कराता है और जिन्हें प्राप्त है उन्हें रक्षणोपाय बताता है। त्रस-स्थावर जीवों का शरणदाता, त्राता, धर्ममूर्ति, संयमी साधु योग-क्षेम करण में सामर्थ्ययुक्त हो सकने के कारण नाथ बन जाता है। जिसे स्व पर विश्वास जग जाता है, वह स्व पर का नाथ बन जाता है।

आगे प्रश्न होता है कि क्या साधु बन जाने के बाद सभी सनाथ बन जाते हैं? तो कहना होगा, नहीं। जो साधु बनकर अपने ग्रहण किये हुए व्रतों का यथा-विधि से पालन नहीं करता वह अनाथता की कोटि में ही आता है। मुनि ने अनाथता के और भी लक्षण बताये हैं। जैसे कि निर्ग्रन्थ धर्म को पाकर उसका यथाविधि बराबर पालन करने से कतराता है, महाव्रतों को स्वीकार तो कर लेता है, किंतु सम्यक् रीति से पालन नहीं करता, इन्द्रिय निग्रह नहीं करता, रसों में गृद्ध व लोलुपी बनकर खाने में आसक्त रहता है। जैसे महान् क्रियोद्धारक आचार्य श्री रत्नचन्द्र जी म.सा. ने आचार छत्तीसी में फरमाया-

> ''ताक-ताक जावे गोचरी, लावे ताजा माल।
> संयम ऊपर चित्त नहीं, बन रह्यो कुंढो लाल।।
> यो मारग नहीं साधु रो।।''

राग-द्वेष आदि बंधनों का, साधु बनकर भी जो उच्छेद नहीं करता, अहिंसा आदि व्रत-पच्चक्खाण आदि नियम, अनशन आदि तप को ग्रहण करके भी उससे भ्रष्ट हो जाता है, माथा मुँडा कर भी मन नहीं मुँडाता, केवल बहुरूपिया की तरह वेष

परिवर्तन कर जीविका चलाता है, वह अन्याय ही है। याद रखना- "बाना बदला सौ-सौ बार, पर बाण बदले तो खेवा पार।" सिर्फ बाना बदलने वाला अनाथ ही है। जो लक्षण निमित्त कौतुक, वैद्यक आदि विद्याओं का प्रयोग करके जीविका चलाता है, जादू आदि का खेल दिखाकर आजीविका चलाता है। अनेषणीय, अप्रासुक आहार-पानी में अत्यन्त आसक्त रहता है, संयमी और ब्रह्मचारी नहीं होते हुए भी अपने को संयमी और ब्रह्मचारी बताता है- तो ये सब अनाथताएँ हैं। इन अनाथताओं का दुष्परिणाम भी अनाथी मुनि ने राजा श्रेणिक को बता दिया।

प्रेरक-प्रसंग

शास्त्रवाचन अमृत है, तो ज़हर भी है

श्री जशकरण डागा

एक बार एक गीतार्थ मुनिराज ऐसे क्षेत्र में पधारे, जहाँ कुछ बंधु नित्य स्थानक में आकर सामूहिक सामायिक-स्वाध्याय किया करते थे। सामायिक-स्वाध्याय होते देख मुनिराज प्रमुदित हुए, किन्तु उनका यह कार्यक्रम रूढ़िवत् चल रहा था। उन्हें न सामायिक के 32 दोषों की जानकारी थी, न स्वाध्याय के विधि-विधान की। उनमें कोई श्रावक जैन धर्म का विशेष जानकार भी नहीं था। वे वहाँ उपलब्ध बत्तीस आगमों का क्रमशः पठन-पाठन, अर्थ व भावार्थ को जाने बिना रूढ़िवत् करते थे। कभी किसी के कुछ पूछने पर वे उसका अर्थ न जानते हुए भी कपोल कल्पित अर्थ बता दिया करते थे। एक बार एक शास्त्र में 'देवता मरकर देवता नहीं होते' कथानक पढ़ा तो दूसरी जगह 'देवता मरकर देवता बनते हैं', ऐसा वर्णन भी पढ़ने को मिला। इन परस्पर विरोधी कथानकों का सम्यक् समाधान कोई नहीं कर सका और आगम को ही मिथ्या प्ररूपित कहने लगे। जब वहाँ पधारे मुनिराज ने यह सुना तो उन्हें बड़ा खेद हुआ। उन्होंने उन सबको संक्षेप में कथानकों का मर्म समझाकर उन्हें आगम के प्रति श्रद्धानिष्ठ किया। मुनिराज ने स्पष्ट किया कि देव पांच प्रकार के होते हैं उनमें द्रव्य देव (जो देवगति को प्राप्त हैं) वे मरकर पुनः उस देवगति में जन्म नहीं ले सकते। किन्तु भाव देव (जो भावों की अपेक्षा देवता तुल्य मनुष्य होते हैं) वे मरकर देवता बनते हैं। इस समाधान से सभी संतुष्ट हुए तथा मुनिराज का बहुत आभार माना कि उन्होंने भ्रान्त श्रावकों को सही ज्ञान प्रदान किया। मुनिराज ने उन्हें कहा- ये आगम सर्वज्ञ प्ररूपित हैं। इनमें अनेक रहस्य व मर्म रहे हुए हैं। इनके प्रति कभी अश्रद्धा के भाव न लाएँ। अपनी बुद्धि के मंद क्षयोपशम के कारण कोई कथानक समझ में न भी आए तो उसे नोट कर विशिष्ट ज्ञानियों से सम्पर्क होने पर उनसे समाधान प्राप्त किया करें।

-डागा सदन, संघपुरा मौहल्ला, टोंक (राज.)

युवा-स्तम्भ

धर्म एवं पाप का फल

आचार्य श्री विजयरत्नसुंदरसूरिजी

धर्मनिष्ठ व्यक्ति के मन में यह प्रश्न उठता है कि धर्म एवं पाप का फल कब प्राप्त होता है? इसका संक्षेप में उत्तर 'मैं ही क्यों?' पुस्तक से प्रस्तुत है।-सम्पादक

महाराज साहब,

धर्म करने और पाप करने का फल
कालांतर में ही मिलता है, यदि यह सत्य हो तो भी
मन में प्रश्न यह उठता है कि
धर्म करने का या पाप करने का कोई तात्कालिक
फल क्या है ही नहीं?
पेट में गये हुए गुलाबजामुन का खून भले ही
उसके समय पर बनता होगा, परन्तु
गुलाबजामुन खाते समय आनंद का अनुभव तो होता ही है ना?
धर्म के मामले में भी क्या ऐसा कुछ नहीं होता?
इसी तरह, ली हुई रकम चुकाते-चुकाते तो
दम निकल ही जाता है, परन्तु रकम ब्याज से लेते समय भी
मानसिक दुःख तो मनुष्य को सहन करना ही पड़ता है ना?
पाप के मामले में भी क्या ऐसा कुछ नहीं होता?
यदि धर्म-पाप का ऐसा कोई तात्कालिक फल न मिले,
तो मुझे नहीं लगता कि
बहुजनवर्ग धर्म करने के लिए उत्साहित होगा या
पाप करने से पीछे हटेगा।

नमन,

सुंदर है तुम्हारा प्रश्न और
सुंदर है उसका समाधान भी।
मान लो कि तुम दिल्ली से ट्रेन द्वारा मुंबई जाने के लिए निकले हो।

एक सप्ताह पूर्व ही उसका टिकट तुमने बुक करा लिया है।
अब जवाब दो-
दिल्ली से ट्रेन में बैठने के बाद मुम्बई पहुँचने में
भले ही तुम्हें अठारह या बीस घण्टे लगते हों,
लेकिन,
यात्रा की उस अवधि के दौरान तुम्हें टी.सी. का कोई डर लगेगा भला?
नहीं ना?
क्यों? तुम्हारे पास टिकट जो है।
टी.सी. का डर तो उसे होगा जो बिना टिकट यात्रा कर रहा हो!
इसका तात्पर्य?
यही कि तुम्हारे पास जो टिकट है,
वह यात्रा के दौरान सतत
तुम्हें निर्भयता की अनुभूति कराता रहेगा।
तुमने जो सवाल पूछा है, उसका यही जवाब है।
धर्म से सद्गति या परमगति भले ही
कालांतर में मिलती होगी, परन्तु
धर्म करने की अवधि के दौरान मन निर्भयता और
प्रसन्नता तो हर पल महसूस करता रहता है।
पढ़ी है ना तुमने यह पंक्ति?
'मनः प्रसन्नतामेति पूज्यमाने जिनेश्वरे'
जैसे-जैसे तुम प्रभु की भक्ति करते जाओगे,
जीवन में जैसे-जैसे तुम प्रभु की आज्ञाओं का पालन
करते जाओगे,
वैसे-वैसे तुम्हारे मन को उत्तरोत्तर प्रसन्नता की
अनुभूति होती ही जायेगी।
और क्या कहूँ तुम्हें?
प्रसन्नता के एकमात्र सुख की तुलना में
दुनियाभर के तमाम सुख तुच्छ हैं
और दुनियाभर के तमाम दुःख ताकतहीन हैं।

धर्म के इस तात्कालिक फल के बारे में जानने के बाद
कौनसी आत्मा धर्म करने में विलम्ब करेगी?

नमन,

अब मान लो कि दिल्ली से मुम्बई जाने वाली ट्रेन में
तुम बिना टिकट यात्रा कर रहे हो।
तुम्हारी मानसिक स्थिति क्या होगी?
किसी भी स्टेशन से चढ़ने वाला कोई भी यात्री
यदि तुम्हारे सामने टकटकी लगाकर देखेगा,
तुम्हारे निकट आएगा तो उसमें तुम्हें टी.सी. के ही दर्शन होंगे।
तुम्हारा मन सतत भयग्रस्त ही रहेगा।
इसका अर्थ?
यही कि दिल्ली-मुम्बई ट्रेन भले ही वातानुकूलित होगी,
परन्तु बिना टिकट की तुम्हारी यात्रा
तुम्हारे मन को सतत भयभीत बनाकर,
तुम्हारे शरीर को पसीने से तरबतर बनाती ही रहेगी।

बस, पाप आचरण का,
दुष्कार्य आचरण का
तात्कालिक फल है- भयभीत मनोदशा।

भले ही तुम्हारे द्वारा किये हुए पाप के बारे में
किसी को कुछ पता नहीं है,
भले ही तुम्हारे द्वारा किये हुए पाप के बारे में किसी को कुछ पता
लगने वाला भी नहीं है,
भले ही दंभ के सहारे पाप को गुप्त रखने में
तुम्हें हमेशा के लिए सफलता ही मिलने वाली है,
लेकिन फिर भी,
अंतःकरण की अदालत में तुम अपने आपको सदा
'अपराधी' ही महसूस करते रहोगे।
स्वयं के द्वारा किये गए पापों की स्मृति तुम्हें हर पल हीन ग्रंथि का

शिकार बनाती ही रहेगी।

याद रखना–

प्रसन्न मनोदशा का एक ही सुख

यदि तमाम प्रकार के दुःखों को हँसते–हँसते सहन

करने का सामर्थ्य रखता है तो

भयभीत मनोदशा का एक ही दुःख

तमाम प्रकार के सुखों को मूल्यहीन बना देने का

नापाक सामर्थ्य रखता है।

देख लो तुम आज के संसार को।

अरबों रुपयों की हेराफेरी करने वाले धनवान

सतत चिन्ताग्रस्त हैं,

और साथ ही साथ भयभीत भी हैं।

सच्ची भूख उनके पास नहीं है।

शान्ति उनके लिए शब्दकोश का विषय बन गई है।

सच्ची नींद उनके लिए स्वप्न का विषय बन गई है।

क्यों ?

क्योंकि उनकी धनाढ्यता,

उनकी प्रतिष्ठा,

उनका वैभव,

उनकी कीर्ति,

ये सब किसी न किसी गलत कार्य से कलुषित हैं।

उन्हें किसका डर नहीं है, यह प्रश्न है।

खुद की गाड़ी के ड्राइवर का भी उन्हें भय है तो

खुद के ऑफिस में काम करने वाले कर्मचारियों से भी वे भयभीत हैं।

शायद खुद के बेटे से भी वे डरते हैं तो

एकान्त में अपने आप से भी उन्हें डर लगता है।

पाप कृत्य के इस तात्कालिक फल को तुम याद रखना,

पाप में प्रवृत्त नहीं हो पाओगे।

(क्रमशः)

नारी-स्तम्भ

एक कदम संस्कारशाला की ओर

श्री पीयूष जैन

जयपुर चातुर्मास के दौरान जब कभी भी आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्र जी महाराज के सान्निध्य में बैठने का अवसर मिला तो उनकी वर्तमान पीढ़ी के संस्कारों के प्रति वेदना देखकर मन उद्वेलित हो उठता था। मुझे यह नहीं समझ में आ रहा था कि आचार्य श्री के मन में इतनी पीड़ा क्यों है? पर अकस्मात् ही प्रवचन में संतों के मुखारविन्द से सुने वचन याद आ गये, जिसमें फरमाया था कि भगवान महावीर ने केवल ज्ञान होने के पश्चात् जो उपदेश दिया वह मात्र करुणा के वशीभूत होकर दिया, क्योंकि सर्वज्ञ जानते थे कि हम पाप के दलदल में फँसे हुए हैं।

हमारे आचार्यप्रवर भी मात्र करुणा के कारण हमें और हमारे नौ-निहालों को संस्कार शिविर में भेजने व हमें भी धर्म-कार्य में रत होने की प्रेरणा दे रहे हैं। आचार्य श्री को हमारा भविष्य दिखाई दे रहा है कि हम प्रतिस्पर्धा के चलते किस अन्धे कुएँ की ओर अपनी छलाँग लगा रहे हैं।

वर्तमान में जहाँ हम भौतिक चकाचौंध के वशीभूत होकर बच्चों को इस गलाकाट प्रतिस्पर्धा में झोंक रहे हैं, वहीं हम यह भूल रहे हैं कि संस्कार के बिना भौतिक चकाचौंध का कोई महत्त्व नहीं रह जाता है। आज इस प्रतिस्पर्धा के युग में कोई भी अतिरिक्त कोर्स करवाने के लिये हम समय का कभी रोना नहीं रोते। परन्तु संस्कार शाला में भेजने हेतु समय की कमी बतलाकर कर्तव्य की इतिश्री कर लेते हैं।

शिविरों के दौरान जनसंपर्क करने का काम निरन्तर पड़ता रहता है। उसमें अभिभावकों के द्वारा संस्कार शिविर को लेकर पूछे गये प्रश्न सुनकर हतप्रभ रह जाते हैं। एक अभिभावक द्वारा पूछा गया कि संस्कार शाला में भेजने व संस्कार देने के बाद क्या आप गारंटी दे देंगे कि बच्चे का भविष्य सुरक्षित रहेगा? मैंने कहा गारंटी तो नहीं है कि संस्कार देने के बाद बच्चे का भविष्य सुरक्षित रहेगा, परन्तु इतनी गारंटी तो है कि हमें इस बात का पश्चात्ताप नहीं होगा कि हमने परवरिश के दौरान संस्कार नहीं दिये। जिस तरह एक डॉ. हाई ब्लड प्रेशर के लिये दवाई देता है एवं एहतियात बरतने के लिये कहता है, परन्तु वह इस बात की गारंटी नहीं देता कि अब आपकी मृत्यु हाई ब्लड प्रेशर के वज़ह से नहीं होगी। इतना विश्वास

जरूर देता है कि संभावनाएँ कम रहेंगी। ठीक उसी प्रकार यदि हम बच्चों को संस्कार शाला में भेजकर गुरुदेव की वेदना समझेंगे तो निश्चित रूप से हमारा कल्याण होगा।

बड़े शान से हम हस्ती हीरा मान के भक्त कहलाते हैं,
लेकिन उनकी आज्ञा का हम कितना पालन कर पाते हैं।
करते रहे यदि मनमानी तो जंगल ही जंगल होगा,
छोड़ दें ये नादानी तो मंगल ही मंगल होगा।

-703, हीरा-पन्ना अपार्टमेन्ट, मोती डूंगरी रोड़, जयपुर (राज.)

गुरु हीरा-मान-स्तुति

श्री राकेश जैन

(तर्जः- गुरु हस्ती भगवान बड़े उपकारी थे......।)

गुरुवर हीरा मान, बड़े उपकारी हैं।
चरणों में इनके हम, जायें बलिहारी हैं।। टेर।।
सूरज सम तेजस्वी गुरुवर, चन्दा सम शीतलता प्रभुवर।
मुखमंडल की आभा, ये सबसे न्यारी है।
गुरुवर हीरा मान.....।। 1।।

प्रवचन शैली अद्भुत इनकी, श्रोता को है मुग्ध ये करती।
अमृत रस का पान कराने वाली है।
गुरुवर हीरा मान.....।। 2।।

तिण्णाणं तारयाणं गुरुवर, भक्तों के भगवान हो गुरुवर।
जीवन नैया पार, लगाने वाले हैं।
गुरुवर हीरा मान.....।। 3।।

गुरुवर हीरा मान की जोड़ी, रत्न संघ की शान ये जोड़ी।
जिनशासन उजियारे ये चाँद सितारे हैं।
गुरुवर हीरा मान.....।। 4।।

-आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान,
ए-9, महावीर उद्यान पथ, बजाजनगर, जयपुर (राज.)

स्वास्थ्य-विज्ञान

स्वर का हमारे जीवन पर प्रभाव

डॉ. चंचलमल चोरडिया

शरीर में नाड़ियों की भूमिका

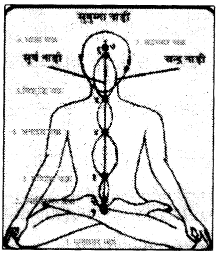

नाड़ियाँ चेतनाशील प्राणियों के शरीर में वे मार्ग हैं, जिनमें से होकर प्राण ऊर्जा शरीर के विभिन्न भागों में प्रवाहित होती है। मूलधारा चक्र से सहस्रार चक्र तक शरीर में 72000 ऐसी नाड़ियों का हमारे पौराणिक ग्रन्थों में उल्लेख मिलता है। हमारे शरीर में मेरुदण्ड के पास तीन मुख्य नाड़ियाँ होती हैं- ईडा (चन्द्र), पिंगला (सूर्य) तथा दोनों के बीच में सुषुम्ना नाड़ी। ये तीनों नाड़ियाँ मूलधारा चक्र से सहस्रार चक्र तक मुख्य रूप से प्राण ऊर्जा को प्रवाहित करती हैं। जिन स्थानों पर चन्द्र, सूर्य और सुषुम्ना नाड़ियाँ आपस में मिलती हैं, उनके संगम को शरीर में ऊर्जा चक्र अथवा शक्ति केन्द्र कहते हैं। मुख्य नाड़ियों का आपस में एक दूसरे से सीधा संबंध होता है। उनके सम्यक् संतुलन से ही शरीर के ऊर्जा चक्र सजग एवं सक्रिय रहते हैं। अन्त:स्रावी गन्थियाँ क्रियाशील होती हैं। व्यक्ति का मनोबल दृढ़ होता है। व्यक्ति सजग होता है और उसकी रोग प्रतिरोधक क्षमता अच्छी होती है। व्यक्ति स्वस्थ रहता है और उसका आभा मंडल आकर्षक बन जाता है। सोच सकारात्मक और इच्छा शक्ति प्रबल हो जाती है।

स्वर-विज्ञान क्या है ?

नासिका द्वारा श्वास लेने एवं छोड़ते समय जो अव्यक्त ध्वनि होती है, उसको स्वर कहते हैं। जब हम श्वास बांयें नथुने से लेते हैं उस समय ईडा अर्थात् चन्द्र नाड़ी सक्रिय होती है और उसके स्वर को चन्द्र स्वर का चलना कहते हैं। इसी प्रकार जब हम श्वास दाहिने नासाग्र से लेते हैं, उस समय पिंगला अर्थात् सूर्य नाड़ी अपेक्षाकृत अधिक सक्रिय होती है और उसके स्वर को सूर्य स्वर कहते हैं। परन्तु जब हम दोनों नासाग्रों से समान रूप से श्वास लेते हैं तो उस समय सुषुम्ना नाड़ी सक्रिय होती है और उसके स्वर को सुषुम्ना स्वर कहते हैं। जब श्वसन क्रिया बांयें नासाग्र से दाहिने-नासाग्र में बदलती है, उस समय अल्प समय के लिए सुषुम्ना नाड़ी सक्रिय होती है, परन्तु योगाभ्यास की कुछ प्रक्रियाओं से इस अवधि को आवश्यकतानुसार बढ़ाया भी जा सकता है। स्वस्थ शरीर में प्राय: एक घंटे पश्चात् चन्द्र

और सूर्य स्वर सहज रूप से स्वतः बदलते रहते हैं। स्वस्थ शरीर में चन्द्र एवं सूर्य स्वर निश्चित क्रम एवं संतुलित रूप से चलते हैं और यदि ऐसा न हो तो शरीर में रोग होने की संभावनाएँ बनी रहती हैं। शरीर में कुछ भी गड़बड़ होते ही गलत स्वर चलने लगता है। नियमित रूप से सही स्वर अपने निर्धारित समयानुसार तब तक नहीं चलता, जब तक शरीर पूर्ण रूप से रोग मुक्त नहीं हो जाता। जैसे यदि किसी ने विषाक्त भोजन कर लिया है तो तुरन्त गलत स्वर चलने लग जायेगा। स्वर संचालन की अवधि में असंतुलन हो जायेगा और उसका संतुलन तब तक सही नहीं होगा जब तक वह व्यक्ति रोग से पूर्ण मुक्त न हो जाए। सूर्य स्वर शक्ति एवं चन्द्र स्वर शांति और सौम्यता का प्रतीक होता है।

शरीर में दो नासाग्र क्यों ?

आधुनिक स्वास्थ्य विज्ञान की दृष्टि से नाक में दोनों छिद्रों (नासाग्रों) का विशेष महत्त्व नहीं होता। उनके अनुसार श्वसन चाहे बांयें छिद्र से लें अथवा दाहिनें छिद्र से लें कोई अन्तर नहीं पड़ता, क्योंकि दोनों नासाग्र आगे जाकर एक हो जाते हैं। प्राणायाम में भी मात्र श्वास के रेचक, पूरक एवं कुम्भक पर अधिक महत्त्व दिया जाता है। श्वसन के बांयें नासाग्र से अथवा दांयें नासाग्र से लेने से पड़ने वाले प्रभावों की तरफ विशेष ध्यान नहीं दिया जाता। शरीर में प्रत्येक भाग का कुछ न कुछ उपयोग अवश्य होता है। कोई भाग अनावश्यक नहीं होता। हम यह अनुभव कर सकते हैं कि जुकाम के कारण एवं नासाग्र में अवरोध न होने के बावजूद कभी श्वसन क्रिया एक नासाग्र में दूसरे नासाग्र की अपेक्षा अधिक एवं सहज होती है तो कुछ समय पश्चात् वैसी ही स्थिति दूसरे नासाग्र में होने लगती है। ऐसा क्यों ? निश्चित अवधि के पश्चात् स्वतः इसमें परिवर्तन क्यों और कैसे हो जाता है ? परन्तु स्वर विज्ञान के अनुसार नाक के दोनों नासाग्रों की अहं भूमिका होती है। शरीर के दोनों नासाग्रों का उपयोग मात्र श्वसन लेने अथवा छोड़ने तक ही सीमित नहीं होता अपितु दोनों नासाग्रों से सजगतापूर्वक सही और निश्चित नियमों के अनुसार व्यवस्थित, संचालित एवं नियन्त्रित श्वसन क्रिया करने से हम अपनी क्षमताओं का अधिकतम उपयोग लेते हुए जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आने वाली समस्याओं का सम्यक् समाधान पा सकते हैं।

अगर कोई मशीन निर्माता किसी मशीन का निर्माण करे परन्तु उपभोक्ता उसके मार्गदर्शन के अनुसार उस मशीन का उपयोग न करे, जिससे मशीन बराबर कार्य न करे तो उस मशीन में खराबी आना संभव है। उसमें उस मशीन अथवा उसके निर्माता का क्या दोष ? उसी प्रकार श्वसन क्रिया करते समय यदि हम प्रकृति के सिद्धान्तों की अनदेखी करते हैं तो हमारे स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव की पूर्ण संभावनाएँ रहती हैं।

भारतीय विद्याओं में स्वर ज्ञान का विशेष महत्त्व है। वर्तमान में वैज्ञानिक शोध के

अभाव में इस ज्ञान की यथार्थता अनुमान से नहीं, अनुभव से ही सिद्ध हो सकती है। उपलब्ध प्रमाणों के आधार पर इसकी जानकारी सर्वप्रथम शिवजी ने पार्वती को दी। इसी कारण स्वर विज्ञान को शिवस्वरोदय भी कहते हैं। इसमें मानव जीवन से संबंधित प्रत्यक्ष-परोक्ष विविध समस्याओं के समाधान का मार्गदर्शन मिलता है।

स्वरों की पहचान कैसे करें?

नथूने के पास अपनी अंगुलियां रख श्वसन क्रिया का अनुभव करें। जिस समय जिस नथूने से अपेक्षाकृत अधिक श्वास प्रवाह होता है, उस समय उस स्वर की प्रमुखता होती है। बांयें नथूने से श्वास चलने पर चन्द्र स्वर, दाहिने नथूने से श्वास चलने पर सूर्य स्वर तथा दोनों नथूनों से समान श्वास चलने की स्थिति को सुषुम्ना स्वर का चलना कहते हैं।

स्वर को पहचानने का दूसरा तरीका है कि हम बारी-बारी से एक नथूना बंद कर दूसरे नथूने से श्वास लें और छोड़ें। जिस नथूने से श्वसन सरलता से होता है, उस समय उससे सम्बन्धित स्वर प्रभावी होता है।

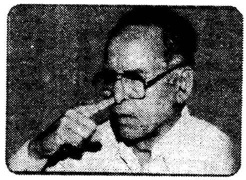

चलित स्वर को बदलने की विधियाँ

अस्वाभाविक अथवा प्रवृत्ति की आवश्यकता के विपरीत स्वर शरीर में अस्वस्थता का सूचक होता है। निम्न विधियों द्वारा स्वर को सरलतापूर्वक कृत्रिम ढंग से बदला जा सकता है, ताकि हमें जैसा कार्य करना हो उसके अनुरूप स्वर का संचालन कर प्रत्येक कार्य को सम्यक् प्रकार से पूर्ण क्षमता के साथ कर सकें।

1. जो स्वर चलता हो, उस नथूने को अंगुलि से या अन्य किसी विधि द्वारा थोड़ी देर तक दबाये रखने से, विपरीत इच्छित स्वर चलने लगता है।
2. चालू स्वर वाले नथूने से पूरा श्वास ग्रहण कर, बन्द नथूने से श्वास छोड़ने की क्रिया बार-बार करने से बन्द स्वर चलने लगता है।
3. जो स्वर चालू करना हो, शरीर में उसके विपरीत भाग की तरफ करवट लेकर सोने तथा सिर को जमीन से थोड़ा ऊपर रखने से इच्छित स्वर चलने लगता है।
4. जिस तरफ का स्वर बंद करना हो उस तरफ की बगल में दबाव देने से चालू स्वर बंद हो जाता है तथा इसके विपरीत दूसरा स्वर चलने लगता है।
5. जो स्वर बंद करना हो, उसी तरफ के पैरों पर दबाव देकर, थोड़ा झुक कर उसी तरफ खड़ा रहने से या उस तरफ गर्दन को घुमाकर ठोडी पर रखने से कुछ मिनटों में उस तरफ

का स्वर बंद हो जाता है।

6. चलित स्वर में स्वच्छ रूई डालकर नथूने में अवरोध उत्पन्न करने से स्वर बदल जाता है।
7. पद्मासन में बैठ जायें। जो स्वर चलाना हो, उस पैर को ऊपर रखें और जिस स्वर को बंद करना हो उसे नीचें रखें। इच्छित स्वर कुछ देर में ही चलने लगेगा।
8. अर्द्ध वज्रासन द्वारा भी स्वर परिवर्तन किया जा सकता है। जो स्वर चलता हो उस पैर के घुटने को खड़ा रख चलित स्वर वाले पंजे को मोड़कर बैठने से इच्छित स्वर चलने लगता है। इसी कारण प्रतिक्रमण की साधना में विनम्रता के सूचक चन्द्र स्वर को चलाने हेतु अरिहंतों एवं सिद्धों की स्तुति हेतु णमोत्थुणं पाठ का उच्चारण करते समय बांये घुटने को खड़ा रखा जाता है। श्रावक सूत्र में व्रतों को ग्रहण करते समय दृढ़ता के सूचक सूर्य स्वर को सक्रिय करने हेतु दाहिने घुटने को खड़ा रखने का निर्देश दिया गया है।

चन्द्र सूर्य से प्रभावित मानव जीवन

सृष्टि की रचना में सूर्य और चन्द्र का महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। हमारा जीवन अन्य ग्रहों की अपेक्षा सूर्य और चन्द्र से अधिक प्रभावित होता है। उसी के कारण दिन-रात होते हैं तथा जलवायु बदलती रहती है। समुद्र में ज्वार भी सूर्य एवं चन्द्र के कारण आते हैं। हमारे शरीर में भी लगभग दो तिहाई भाग पानी होता है। सूर्य और चन्द्र के गुणों में बहुत विपरीतता होती है। एक गर्मी का तो दूसरा ठण्डक का स्रोत माना जाता है। सर्दी और गर्मी सभी चेतनाशील प्राणियों को बहुत प्रभावित करते हैं। शरीर का तापक्रम 98.4 डिग्री फारेनाइट निश्चित होता है और उसमें बदलाव होते ही रोग होने की संभावना होने लगती है। मनुष्य के शरीर में भी सूर्य और चन्द्र की स्थिति शरीरस्थ इन नाड़ियों में मानी गई है। स्वर विज्ञान- सूर्य, चन्द्र आदि ग्रहों को शरीर में स्थित इन नाड़ियों की सहायता से अनुकूल बनाने वाला विज्ञान है।

स्वर का हमारे शरीर पर प्रभाव

जब चन्द्र स्वर चलता है तो शरीर में ठण्डक बढ़ने लगती है और जब सूर्य स्वर सक्रिय होता है तो शरीर में उष्णता बढ़ने लगती है। जब तक शरीर में ठण्डक और उष्णता का संतुलन रहता है तभी तक हमारा शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य प्राय: अच्छा होता है।

अत: जब शरीर में ठण्डक हो तो सूर्य स्वर को सक्रिय कर तथा जब उष्णता अधिक हो तो चन्द्र स्वर चलाकर ठण्डक और उष्णता को नियन्त्रित किया जा सकता है। दिन में रात्रि की अपेक्षा सूर्य की उपस्थिति के कारण उष्णता सहज रूप से अधिक रहती है, अत: यदि चन्द्र स्वर अधिक चले और रात्रि में ठण्डक के कारण सहज रूप से जिसका सूर्य स्वर

चलता है, वह व्यक्ति दीर्घ जीवित होता है। चन्द्र नाड़ी मस्तिष्क के दाहिने भाग में तथा सूर्य नाड़ी मस्तिष्क के बांयें भाग में स्थित होती है। अतः जब चन्द्र स्वर सक्रिय होता है तो मस्तिष्क के दाहिने भाग में प्राण ऊर्जा का प्रवाह अपेक्षाकृत अधिक होता है। ठीक इसी प्रकार जब सूर्य स्वर सक्रिय होता है तो मस्तिष्क के बांयें भाग में अपेक्षाकृत अधिक प्राण ऊर्जा का प्रवाह होता है। अतः मस्तिष्क से संबंधित बांयें अथवा दांयें भाग के रोगों को स्वर संतुलन कर ठीक किया जा सकता है। हमारे मस्तिष्क का अर्द्ध बांया भाग आज्ञा चक्र के नीचे शरीर के दाहिने भाग को और मस्तिष्क का अर्द्ध दाहिना भाग आज्ञा चक्र के नीचे शरीर के बांयें भाग की गतिविधियों को नियन्त्रित करता है। इसी कारण मस्तिष्क के बांयें भाग की नाड़ी में कभी अवरोध आने से शरीर के दाहिने भाग में पक्षाघात हो जाता है और इसी प्रकार मस्तिष्क के दाहिने भाग की नाड़ियों में अवरोध आने से शरीर के बांयें भाग में पक्षाघात हो जाता है। अतः शरीर के बांयें भाग के रोगों में चन्द्र स्वर एवं दाहिने भाग के रोगों में सूर्य स्वर का प्रभाव अपेक्षाकृत अधिक पड़ता है।

हमारे मस्तिष्क के चन्द कार्य दायें और बायें भाग से अलग-अलग भी होते हैं। परिणामस्वरूप चन्द्र स्वर की सक्रियता में हम दाहिने मस्तिष्क के कार्य अर्थात् चिन्तन, मनन, अध्ययन, लेखन, शांत, सौम्य, मानसिक एवं स्थायी कार्य पूर्ण क्षमता से कर सकते हैं, जबकि सूर्य स्वर की सक्रियता के समय बांयें मस्तिष्क से संबंधित जोश, साहसिक, दृढ़ता, उत्तेजना, शारीरिक श्रम वाले कार्य सही ढंग से प्रतिपादित कर सकते हैं। यदि सही स्वर में सही कार्य किया जाए तो हमें प्रत्येक कार्य में अपेक्षित सफलता सरलता से प्राप्त हो सकती है। **(शेषांश एवं प्रश्न आगामी अंक में द्रष्टव्य)**

स्वास्थ्य-आलेख प्रश्नोत्तर प्रतियोगिता का परिणाम

जिनवाणी के फरवरी-2013 के अंक में 'स्वास्थ्य-विज्ञान स्तम्भ' के अंतर्गत 'स्वास्थ्यवर्धक जैन जीवन-शैली' के प्रश्नों के उत्तर 54 प्रतियोगियों से प्राप्त हुए। उनमें से प्रतियोगिता के तृतीय विजेता का चयन लॉटरी द्वारा घोषित किया गया है।

पुरस्कार एवं राशि-	**नाम**
प्रथम पुरस्कार (1000/-रु.)	श्रीमती विद्या संघवी-बदनावर (मध्यप्रदेश)
द्वितीय पुरस्कार (750/-रु.)	श्री अरूण सुराणा-जयपुर (राज.)
तृतीय पुरस्कार (500/-रु.)	श्रीमती सुषमा राकेश सिंघवी-जोधपुर (राज.)

अन्य प्रतियोगी अपने अंक मालूम करना चाहें तो चंचलमल चोरड़िया-94141-34606 (मो.) से सम्पर्क कर सकते हैं। प्रतियोगी अपना नाम व पूरा पता उत्तरपुस्तिका एवं लिफाफे पर अवश्य लिखें।

परिचर्चा-स्तम्भ

संवाद

गत माह 'परिचर्चा' स्तम्भ में जो प्रश्न पूछा गया था उसके उत्तर अनेक प्रबुद्ध चिन्तकों ने प्रेषित किए हैं, जिनमें से कतिपय उत्तर यहाँ प्रकाशित किए जा रहे हैं।

प्रश्न 2. वर-वधू में परस्पर विश्वास कैसे उत्पन्न हो? उनमें विश्वास टूटने के क्या-क्या कारण हैं? उनका निराकरण किस प्रकार किया जा सकता है?

उत्तर (1)- वर-वधू के बीच विश्वास बना रहे, इसके लिए प्रेम, सौहार्द, आत्मीयता, सहभागिता, आदर-सत्कार, विचारों में शालीनता एवं आपसी सामजंस्य अति आवश्यक है।

एक माली अपने बागान में पौधे लगाता है, उनका सिंचन करता है, दिन-रात, सर्दी-गर्मी एवं वर्षा में उनका खयाल रखता है। मन में विश्वास रखता है कि उसकी मेहनत अवश्य रंग लायेगी तथा बगीचा हरा-भरा हो जायेगा। बगीचा हरा-भरा हो जाता है विश्वास के साथ मेहनत करने पर। वर-वधू को भी अपने रिश्तों को मजबूत एवं सुदृढ़ बनाने के लिए एक दूसरे का सहयोग करना चाहिए, एक दूसरे की भावनाओं को एवं आवश्यकताओं को समझकर चलना चाहिए।

वर-वधू दोनों अलग-अलग परिवार से होते हैं। लेकिन शादी की रस्म अदा करने के बाद वे एक परिवार के हो जाते हैं, सुख-दुःख में एक दूसरे के सहयोग का वादा करते हैं। अगर वे अपने वादे भी ईमानदारी से निभाएँ तो कभी भी आपसी तकरार न होगी और न ही आपसी मन-मुटाव होगा। मन-मुटाव की स्थिति ही अविश्वास पैदा करती है।

जिस प्रकार माता अपने पुत्र पर तथा पुत्र अपनी माता पर अन्तर्हृदय से विश्वास करता है। उसी प्रकार वर-वधू भी एक दूसरे के प्रति त्याग व समर्पण की भावना रखे, स्वार्थ को पनपने नहीं दे, अपने चरित्र को अच्छा बनाए, अपने जीवन को दूध मिश्री की तरह बनाए तो उनके जीवन में कभी अविश्वास की स्थिति उत्पन्न नहीं होगी।

हर इंसान का अपना अलग-अलग स्वभाव होता है, कार्य करने की शैली भी अलग-अलग होती है, परन्तु उनमें सामंजस्य बना रहे इसका हमें प्रयत्न करना चाहिए, जिससे आपसी समन्वय बना रह सकता है, विश्वास बना रह सकता है। विश्वास टूटने के कई कारण हो सकते हैं। एक दूसरे की बात न मानना, आत्म-विश्वास को ठेस पहुँचाना, परस्पर विरोधी कार्य करना, कथनी व करनी में एकरूपता न रखना, एक दूसरे से अपनी बातें छिपाना, गुस्सैल स्वभाव का होना, एक-दूसरे की उपेक्षा करना, गलतफहमियाँ होना, एक दूसरे के दोषों को दिखाना या प्रगट करना, विवाह करके गलती की- ऐसा बोलना इत्यादि।

विश्वास टूटने के कारणों का निराकरण आसानी से किया जा सकता है। एक-दूसरे की

भावनाओं का आदर कर, गलत-फहमी होने पर तुरन्त निवारण कर, गलती होने पर तुरन्त स्वीकार कर, तनाव-मुक्त जीवन बनाकर, एक दूसरे के साथ लचीला व्यवहार रखकर, अपने अंह का त्याग कर, एक-दूसरे की कमियाँ न देखकर, मनमुटाव होने पर तुरन्त समझौता कर लेने पर, विचारों के साथ समन्वय रखकर, एक-दूसरे की आवश्यकताओं की पूर्ति कर, हालात से समझौता कर तथा वर्तमान में जीकर पारस्परिक विश्वास को बनाये रखा जा सकता है। *-पुष्पा मेहता, पीपाड़शहर*

उत्तर (2)- वर-वधू में विश्वास कैसे उत्पन्न हो, यह जानने के लिए पहले यह जानना जरूरी है कि उनमें विश्वास टूटने के क्या-क्या कारण हैं?

विश्वास टूटने के कारणः- वर-वधू के रिश्ते में जिस दिन से आपस में झूठ बोलने की प्रवृत्ति घर कर जाती है, बस उसी दिन से विश्वास का किला टूटने लगा जाता है।

जीवन की सभी क्रियाएँ जैसे खाना-पीना-सोना-चलना-घूमना-देखना-सुनना-पढ़ना आदि हम सब करते हैं एवं इन्हीं क्रियाओं से संबंधित कोई भी बात यदि जीवन-साथी द्वारा पूछी जाती है तो उस समय यदि सही बात को छुपाते हुए झूठ बोला जाता है तो आपसी विश्वास उसी दिन से टूटना शुरू हो जाता है। यों तो विश्वास टूटने के कई अन्य कारण भी हो सकते हैं, लेकिन एक दूसरे से झूठ बोलना सबसे मुख्य कारण होता है। झूठ बोलने से दोनों एक दूसरे को शक की नज़र से देखने लग जाते हैं एवं आपस में लड़ाई-झगड़े होते-होते कई बार तलाक की स्थिति भी पहुँच जाती है।

झूठ बोलते वक्त बोलने वाले को भ्रम रहता है कि सामने वाले को सच का कभी पता नहीं लगेगा किन्तु ऐसा नहीं होता है, क्योंकि झूठ बोलने वाले की आँखें एवं भावभंगिमा अपने जीवन साथी को कुछ-कुछ आभास तो करवा ही देती है और यहीं से आपसी विश्वास टूटता हुआ शक के घेरे में आ जाता है।

निराकरणः- वर-वधू अपने जीवन में एक-दूसरे से केवल सच बोले, झूठ का सहारा कभी ना ले। वर-वधू का रिश्ता नाजुक एवं संवेदनशील होता है जो केवल विश्वास की नींव पर ही टिका होता है। घर, व्यवसाय एवं सामाजिक कार्य दोनों को ही साथ-साथ करने होते हैं तो कुछ अलग-अलग भी किये जाते हैं। अलग-अलग किये गये कार्य की जानकारी यदि जीवन साथी को सत्यता के साथ बतायी जाती है, तो आपस में विश्वास कायम रह सकता है।

आपस में विश्वास उत्पन्न करने एवं बनाये रखने के लिए जरूरी है कि वर-वधू प्रतिदिन एक-दूसरे द्वारा किए जाने वाले कार्यों की जानकारी संक्षेप में सत्यता के साथ आदान-प्रदान करें। *-राजेन्द्र संचेती, चार्टर्ड एकाउण्टेन्ट,*

135, मक्खन निवास, नसरानी सिनेमा के पास, जोधपुर (राज.)

बाल-स्तम्भ

किशोर मन की जिज्ञासाएँ (3)

श्री मनोहरलाल जैन

बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित इस रचना को पढ़कर अन्त में दिए गए प्रश्नों के उत्तर 20 वर्ष की आयु तक के व्यक्ति 15 मई 2013 तक जिनवाणी संपादकीय कार्यालय, श्रीमती शरद चन्द्रिका मुणोत सामायिक-स्वाध्याय भवन, कुमार छात्रावास के सामने, नेहरु पार्क, जोधपुर-342003(राज.) के पते पर प्रेषित करें। उत्तर के साथ अपनी आयु का भी उल्लेख करें। श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को श्री महावीरचन्द जी बाफना, जोधपुर द्वारा अपनी धर्मपत्नी एवं श्रीमती अरुणा जी, श्री मनोजकुमार जी, श्री कमलेश कुमार जी बाफना की माताश्री स्व. श्रीमती मोहिनीदेवी जी बाफना की पुण्य-स्मृति में पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-500 रुपये, द्वितीय पुरस्कार-300 रुपये, तृतीय पुरस्कार-200 रुपये तथा 150 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार।

(फरवरी-2013 के अंक के क्रम में तृतीय किश्त)

नवकार महामंत्र के पाँचों पदों में सिद्ध भगवान का पद श्रेष्ठतम है। हम सभी का लक्ष्य मोक्ष-प्राप्ति अर्थात् सिद्ध पद की प्राप्ति का ही होता है। यह बात अलग है कि हम संसारी कामना तो सिद्ध पद प्राप्ति की करते हैं, किन्तु आचरण उलटा ही करते हैं।

कतिपय नादान लोग यह कह देते हैं कि भाग्य में होगा तो सिद्ध पद भी प्राप्त हो जाएगा। यह भाग्य की बात करना वृथा है। क्या विद्यार्थी पढ़ाई न करे तथा यह चाहे कि भाग्य में होगा तो पास हो जाऊँगा, तो क्या यह संभव है? कदापि नहीं। महिला भोजन नहीं बनाये और सोचे कि घर वालों के भाग्य में होगा तो भोजन कर लेंगे। तो यह मात्र मूर्खता है।

भाग्य का निर्धारण करने वाली जो शक्ति है, उसे जैन परम्परा में पूर्वकृत कर्म कहते हैं। वैदिक धर्म में भी कर्म को माना है, किन्तु उसका फल देने वाला भगवान को माना गया है। जैन धर्म परमात्मा को तो मानता है, किन्तु उसकी फलदाता शक्ति को नहीं मानता है। भाग्य को भी मानता है, किन्तु मात्र कर्म फल के रूप में। कर्मफल व्यक्ति को स्वतः प्राप्त होता रहता है। जैसे मोबाइल फोन का नम्बर मिलाने पर अमुक मोबाइल बज उठता है, उसी प्रकार अमुक कर्म से आत्मा प्रभावित होती है। मोबाइल का बजना संचार व्यवस्था के कारण होता है वैसे ही प्राकृतिक विधान की व्यवस्था से कर्म द्वारा वही व्यक्ति प्रभावित होता है- इस कार्य में तीसरे व्यक्ति के रूप में ईश्वर की आवश्यकता नहीं है।

जैन धर्म पुरुषार्थ प्रधान धर्म है। व्यक्ति अपने पुरुषार्थ से बद्ध कर्मों को मंद अथवा क्षय कर सकता है। भाग्यवाद ने जहाँ व्यक्ति को अकर्मण्य बनाया वहाँ जैन धर्म ने व्यक्ति को अधिक से अधिक पुरुषार्थ करने को प्रेरित किया है। संसार में रहना है तो भी हमको पुरुषार्थ

तो करना ही होगा, किन्तु वह पुरुषार्थ यदि सम्यक् न हो तो उससे संसार में परिभ्रमण ही बढ़ता है। हमारा उद्देश्य संसार परिमित करना है इसके लिये जो पुरुषार्थ किया जाना है, उसको सम्यक् पुरुषार्थ कहा जाता है। सम्यक् पुरुषार्थ की यह विशिष्टता है कि उसमें पूर्वबद्ध कर्म क्षय होकर नये कर्म का बंध नहीं होता है। शुभ और अशुभ समस्त कर्मों का जब तक क्षय नहीं हो जाता है तब तक आत्मा सिद्ध पद प्राप्त नहीं कर सकती है। इसलिये हमारे समस्त प्रयास सम्यक् पुरुषार्थ की ओर ही लगने चाहिये।

जब तक सम्यक्त्व नहीं समझा जायेगा, सम्यक् पुरुषार्थ किया जाना संभव नहीं है। 'सम्यक्त्व' अर्थात् जड़ तथा चेतन का भेद। चेतन के साथ जो जड़ का घालमेल है वह संसार है। यह भी सच है कि जो चेतन है वह कभी जड़ हो नहीं सकता और जो जड़ है वह कभी चेतन हो नहीं सकता। जड़ और चेतन भिन्न हैं। इस भेद विज्ञान को केवल सम्यक्त्वी व्यक्ति ही समझ सकता है।

तत्त्व कौनसे हैं तो कहना होगा कि जीव, अजीव, पुण्य, पाप, आस्रव, बंध, संवर, निर्जरा और मोक्ष ये नौ तत्त्व हैं। इनमें जीव और अजीव दो तत्त्व मुख्य हैं। जीव के साथ अजीव का बंध ही संसार भ्रमण का कारण है। आस्रव का कारण शुभ व अशुभ भाव हैं। शुभ भाव हैं तो पुण्य तथा अशुभ भाव हैं तो पाप का आस्रव होता है। जब तक जीव का आस्रव द्वार खुला रहता है तब तक पुण्य पाप का आगमन होता रहता है। कषाय की उपस्थिति में कर्म का बंध होता है। आस्रव द्वार को रोकने की क्रिया को संवर कहा जाता है। पूर्व संचित कर्म को क्षय करने की क्रिया को निर्जरा कहते हैं। यदि सभी संचित कर्म क्षय कर दिये जाएं तथा आस्रव द्वार से नये कर्म नहीं आये तो सिद्ध पद प्राप्त हो जाता है, जिसे मोक्ष की अवस्था कहा जाता है।

इन तत्त्वों पर श्रद्धा करना अर्थात् अनुसरण करना ही मोक्षमार्ग है। इन तत्त्वों का सही ज्ञान 'सम्यग्ज्ञान', इन तत्त्वों पर श्रद्धा 'सम्यग्दर्शन' तथा सम्यग्ज्ञान व सम्यग्दर्शन के अनुरूप जो आचरण किया जाता है, वह सम्यक् चारित्र है। चारित्र के अन्तर्गत तप का भी समावेश हो जाता है। पूर्व संचित्त कर्मों के क्षय के लिए सम्यक् तप करना आवश्यक है। सम्यग् ज्ञान, सम्यग् दर्शन, सम्यक् चारित्र तथा सम्यक् तप ही मोक्ष मार्ग है, जो सिद्ध पद प्रदाता है।

यद्यपि हमारा लक्ष्य तो मोक्ष ही है, किन्तु आज के वातावरण में पूर्ण मुक्ति के प्रयास संवभ नहीं हैं। अतः हम प्रारम्भ में यह प्रयास करें कि हम व्रतों को न केवल ग्रहण करें अपितु उनका दृढ़ता के साथ पालन भी करें। हो सकता है कि प्रारम्भ में हम ऊँची छलांग नहीं लगा सकते, किन्तु एक छोटा कदम तो अवश्य ही उठा सकते हैं। कदम भी नहीं उठा सकते तो केवल खड़े होना ही सीखो। चाहे छलांग लगाओ, छोटा कदम उठाओ या खड़े हो जाओ, किन्तु यह सुनिश्चित कर लें कि जो कदम उठाया है उससे पीछे नहीं हटेंगे तो चाहे चींटी की चाल हो मंजिल अवश्य ही प्राप्त होगी।

निश्चय ही जिज्ञासा हो सकती है कि सिद्ध भगवान कहाँ विराजते हैं, वहाँ क्या करते हैं आदि। सिद्ध भगवान् इस लोक के अग्रभाग पर सिद्ध शिला पर विराजमान हैं। वहाँ अनन्त सिद्ध भगवान हैं। वहाँ का सुख अनन्त सुख है। वह सुख कल्पनातीत है, क्योंकि हमारी सुख की कामना केवल इन्द्रिय आधारित है। हम केवल इन्द्रिय सुख को ही सुख कहते हैं, जबकि सिद्ध भगवान तो इन्द्रियातीत हैं। वहाँ ज्ञान, दर्शनरूप शुद्ध चैतन्य आत्मा है।

इन्द्रिय सुख से परे हम इन्द्रियातीत सुख की कल्पना ही नहीं कर सकते, फिर भी कभी-कभी हमको भी अनुभव हुआ होगा कि जब हम बहुत थके हुए हों, एकाध रात को जागरण भी हो, तब हमको खाना-पीना आदि कुछ भी याद नहीं आता और बिस्तर पर पड़ते ही गहरी निद्रा में सो जाते हैं। जब उठते हैं तब बहुत हल्का अनुभव करते हैं। बताइए कौनसी इन्द्रिय का भोग हुआ, फिर भी जो सुख मिला उसका वर्णन करना संभव नहीं है, केवल अनुभव की वस्तु है। वैसे ही सिद्ध भगवान का सुख वर्णनातीत है, वह केवल अनुभव की वस्तु है।

-74, महावीर मार्ग, धार-454001 (मध्यप्रदेश)

प्रश्न:-

1. क्या आप भाग्य को मानते हैं? समझाइये।
2. सम्यक् पुरुषार्थ किसे कहा गया है?
3. विलोम शब्द लिखिए-मोक्ष, जड़, शुभ, आस्रव, पाप, सम्यक्, कर्म-क्षय।
4. भेद विज्ञान किसे कहते हैं?
5. मोक्ष का मार्ग कौनसा है?
6. आपको सबसे अधिक सुख किसमें मिलता है और क्यों?

बाल-स्तम्भ [फरवरी-2013] का परिणाम

जिनवाणी के फरवरी-2013 के अंक में बाल-स्तम्भ के अंतर्गत 'किशोर मन की जिज्ञासाएँ (2)' कहानी के प्रश्नों के उत्तर 35 बालक-बालिकाओं से प्राप्त हुए। पूर्णांक 30 हैं।

पुरस्कार एवं राशि	नाम	अंक
प्रथम पुरस्कार-500/-	भूमि सिंघवी-जोधपुर (राज.)	25.5
द्वितीय पुरस्कार-300/-	लक्की काकरिया-दौड्डबालापुर (कर्नाटक)	25
तृतीय पुरस्कार- 200/-	पूजा जैन-जोधपुर(राज.)	24.5
सान्त्वना पुरस्कार- 150/-	निशा जैन-खेरली (राज.)	24
	प्रखर गांधी-चितौड़गढ़ (राज.)	23
	अर्पित जैन-जोधपुर (राज.)	22.5
	दीपेश जैन-जयपुर (राज.)	17.5
	उदिता मेहता-मदनगंज-किशनगढ़ (राज.)	16.5

दीक्षा अर्द्धशती वर्ष

व्यसन-फैशन के त्याग की प्रेरणा

श्रीमती शांता नाहर

आगमज्ञ प्रवचन-प्रभाकर चारित्रमूर्ति आचार्यप्रवर 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. का व्यक्तित्व बड़ा ही आकर्षक और सम्मोहक है। गौरवर्ण, दीर्घ नेत्र, प्रशस्त ललाट, सौम्य कांति और मनमोहक आकृति से आकृष्ट होकर पिता श्री मोतीलाल जी गांधी तथा माता श्री मोहिनी बाई ने अत्यन्त स्नेह से आपका नाम हीरा रखा।

आचार्यप्रवर रत्नसंघ के आचार्यों की परम्परा के उज्ज्वल नक्षत्र हैं। आप निर्व्यसनता, चरित्र-निर्माण, रात्रि-भोजन-त्याग, सामायिक, स्वाध्याय एवं संयम-साधना हेतु प्रबल प्रेरणा करते हैं। निर्व्यसनता को आप सम्यक् आचरण का प्रथम सोपान मानते हैं।

रात्रि-भोजन त्याग को आप जैनत्व की पहचान, स्वास्थ्य के रक्षण, संयम और अहिंसा की पालना के लिये आवश्यक मानते हैं। समभाव की प्राप्ति हेतु सामायिक को, ज्ञानार्जन हेतु स्वाध्याय को, आस्रव-निरोध हेतु संयम को तथा कर्म-निर्जरा हेतु तप को, आधार रूप में प्रतिपादित करते हैं। आपकी प्रेरणा से सैकड़ों बारहव्रती एवं सैकड़ों ही ब्रह्मचर्यव्रती बने हैं और बन रहे हैं। निर्व्यसनता को जैनों और अजैनों में प्रसारित किया जा रहा है।

आचार्य श्री ने युवकों को सदा व्यसन-मुक्त जीवन जीने की प्रेरणा दी। बालोतरा-चातुर्मास में आपकी प्रेरणा से पाँच सौ युवाओं ने शराब आदि मादक पदार्थों का त्याग कर व्यसन मुक्त जीवन जीने का संकल्प लिया। आचार्य श्री शांत द्रष्टा महान् संत हैं, सामाजिक कुप्रथाओं और कुरीतियों में सुधार की आपने सदा प्रेरणा की। गुरु हीरा का है संदेश ''व्यसन मुक्त हो सारा देश'' श्रावक-श्राविकाओं की जुबान पर है।

आचार्यप्रवर के प्रभाव से ही मेरे पति जो भी कोई गुटखा खाता हुआ व्यक्ति दिखता है तो उसको हमेशा न खाने की प्रेरणा करते हैं। एक बार हम पाली गुरुदेव के दर्शन करने आये थे तब टेक्सी ड्राइवर गुटखा खा रहा था। उसको इन्होंने मना किया। अभी हम जयपुर दर्शन करने आये तब वही ड्राइवर मिल गया और उसने बताया कि मैंने जिस दिन आपने मना किया उस दिन से गुटखा छोड़ दिया है। यह प्रभाव गुरुदेव का ही है।

आचार्यप्रवर निस्पृही साधक हैं। वयसम्पन्न दंपतियों को शीलव्रत के खंध करवाने, समाज में आडम्बर-प्रदर्शन के बजाय परस्पर प्रेम मैत्री का संदेश देने जैसे अनेकानेक दायित्वों के बखूबी निष्पादन में पूज्य गुरुवर्य का योगदान सदा स्मरणीय रहेगा।

आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. मात्र आगमज्ञ और पंडित ही नहीं बल्कि संतों की वैयावृत्त्य करने में भी अग्रणी रहे हैं। आशा है आपके नेतृत्व में जैनशासन प्रगति के मार्ग पर अग्रसर होगा।

-ई-2/118, अरेरा कॉलोनी, भोपाल-462016 (मध्यप्रदेश)

अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा आयोजित
'आओ स्वाध्याय करें' त्रैमासिक प्रतियोगिता (31) का परिणाम

जिनवाणी के फरवरी-2013 के अंक में आयोजित त्रैमासिक प्रतियोगिता (31) में 217 प्रतियोगियों ने भाग लिया। यह प्रतियोगिता जिनवाणी के नवम्बर-दिसम्बर-2012 एवं जनवरी-2013 के अंकों पर आधारित थी। परिणाम लक्की ड्रॉ के आधार पर निकाला गया है। परिणाम इस प्रकार है-

प्रथम पुरस्कार– 1100/– रुपये सौ. हीरा कर्णावट-अहमदनगर (50)

द्वितीय पुरस्कार– 750/– रुपये अतिका मेहता-जोधपुर (50)

तृतीय पुरस्कार– 500/– रुपये जितेश कुमार जैन-जयपुर (50)

सान्त्वना पुरस्कार– 100/– रुपये (प्रत्येक)

सौ. सरोज रुणवाल-धूलिया (50)

पूर्णिमा तलेसरा-वापी (50)

बाबूलाल जैन-गोपालगढ़,भरतपुर (50)

नेणचंद बाफना-जोधपुर (50)

अरुणा जैन-होशियारपुर (50)

50 अंक प्राप्त करने वाले अन्य प्रतियोगी:-दर्शिका टाटिया–जलगांव, सरला छाजेड़–भुसावल, सुनीता कुमठ–ब्यावर, रोमा मेहता–जोधपुर, कमला देवी सेठिया–मसुदा, तनुजा कोठारी–धूलिया, पुखराज जैन–मसुदा।

49.5 अंक प्राप्त करने वाले प्रतियोगी:- बबीता जैन–गोपालगढ़, हेमराज सुराणा–जयपुर, उषा किरण अबानी–जोधपुर, बेबी जैन–गोपालगढ़, जया जैन–गोपालगढ़, सुनीता नवलखा–कोटा, आशा अग्रवाल–जयपुर, कंवलराज मेहता–जोधपुर, सेजल जैन–धूलिया, लता आंचलिया–धूलिया, अनील जैन–कोटा, विद्या संघवी–बदनावर, प्रमिला पोकरना–धूलिया।

49 अंक प्राप्त करने वाले प्रतियोगी:-सुन्दर कंवर दरड़ा–गोटन, मीनाक्षी जैन–सांगानेर, अनिल जैन–मैसुर, मदनकंवर लुणावत, तिलोकचन्द जैन–आचीणा, राजकुमार बांठीया–पाली, सुनील जैन–मैसूर, सुमन बांठीया–पाली, आयुषी लुणावत–जोधपुर, रविना लुणावत–जोधपुर, सुनील लुणावत–जोधपुर, सरोज खाबीया–मैसूर, आशीष जैन–जयपुर, दीपचंद पारख–गंगाशहर, मनीष जैन–आचीणा, शुभम जैन–जयपुर, पारसमल बाघमार–पाटोदी, शिल्पा सुराना–अजमेर, कपिल कोठारी–जयपुर, गीता जैन–जालन्धर, नीरा भण्डारी–ब्यावर, सी.एम.पालरेचा–जोधपुर, विजयलक्ष्मी–अजमेर, विरेन्द्र कुम्भठ–जोधपुर, किरण कुम्भठ–जोधपुर, देवीलाल भानावत–कानोड़, ज्ञानचंद कोठारी–अजमेर, महेन्द्र लुणावत–पालदा, सुनील जैन–हिण्डौनसिटी, अमी बरड़िया–मदनगंज, बबीता बाफना–जलगांव, पुष्पा जैन–पाली, जयमाला कांकरिया–पाली, रेखा कांकरिया–पाली, सुनीता मेहता–जोधपुर, मनस्वी भंडारी–रायपुरिया, मंजु कटारिया–अजमेर, ऋषभ जैन–सुमेरगंज मण्डी।

48. 5 अंक प्राप्त करने वाले प्रतियोगी:-भूमि जैन–जोधपुर, मधु डोसी–ब्यावर, पदमचंद मुणोत–जयपुर, अक्षत गोलेच्छा–सोडाला, बी.एस. चोरड़िया–झालरापाटन, ममता रालछेड़ा–बुलडाणा, फूलकंवर भण्डारी–रायपुरिया, संगीता मेहता–जोधपुर, उषा बरड़िया–धुलै, शशि जैन–लश्कर, कुणाल मेहता–जोधपुर, विजयलक्ष्मी मोहनोत–जयपुर।

48 अंक प्राप्त करने वाले प्रतियोगी:-महेन्द्र जैन–चौथ का बरवाड़ा, दीपक जैन–मण्डावरा, शशिकला लुणावत–नासिक, जितेन्द्र जैन–चौथ का बरवाड़ा, मोनिका देशलहरा–सिकन्दराबाद, कल्याणमल जैन–झालरापाटन, भारती मंडलेचा–पुना, रमिला कर्णावट–वणी–नासिक, रेखा कोठारी–अजमेर, अनुराग सुराणा–अजमेर, रजनी भण्डारी–गुडगांव, समकित चोरडिया–भोपालगढ़, रीना जैन–लुधियाना, पुष्पा गोलेच्छा–ब्यावर, प्रमिला बोहरा–जैतारण, दिव्या डागा–जयपुर, तारा रूणवाल–जयपुर, अमरचंद चोरड़िया–भोपालगढ़, पुष्पा मेहता–पीपाड़,

हेमलता जैन–ब्यावर, उत्कर्ष जैन–हिण्डौन सिटी, अंजली जैन–हिण्डौन सिटी, भरतसिंह जैन–सांगानेर, संगीता पगारिया–मदनगंज, कमलेश गेलड़ा–अजमेर, अंजली पितलिया–उदयपुर, जया भण्डारी–ब्यावर, राजेश लुणावत–आचीणा, भाग्यवंती तातेड़–जोधपुर, रक्षिता जैन–कुचेरा, अंकिता चोरड़िया–भोपालगढ़, चित्रा भण्डारी–जोधपुर, सुमन ओस्तवाल, संजना ओस्तवाल, मनीष ओस्तवाल–गोटन। **(शेष प्राप्तांकों की सूची नहीं दी जा रही है।)**

सही उत्तर

उपर्युक्त त्रैमासिक प्रतियोगिता (31) के प्रश्नों के सही उत्तर जिनवाणी अंक एवं उसके पृष्ठ के साथ यहाँ दिए जा रहे हैं –

प्र.	उत्तर	माह/पृष्ठ संख्या	प्र.	उत्तर	माह/पृष्ठ संख्या
1.	रत्न	जनवरी/96	2.	संघ	नवम्बर/58
3.	के	जनवरी/119	4.	प्राणवान	नवम्बर/29
5.	गणिवर	नवम्बर/34	6.	आचार्यप्रवर	जनवरी/41
7.	श्री	नवम्बर/63	8.	हीराचन्द्र जी	जनवरी/75
9.	गुरुवर्या/म.सा./वे	दिसम्बर/95	10.	वाले	दिसम्बर/35
11.	सर्व	नवम्बर/27	12.	काल	जनवरी/105
13.	सुख	दिसम्बर/43	14.	शांति	नवम्बर/79
15.	रहे	दिसम्बर/92	16.	हाथी	जनवरी/17
17.	ध्यान	नवम्बर/21	18.	स्वप्निका	दिसम्बर/कवर पृष्ठ
19.	श्रद्धा	जनवरी/95	20.	नजर	दिसम्बर/100
21.	शाकाहार	नवम्बर/90	22.	निष्ठा	नवम्बर/114
23.	सेवाभावी	दिसम्बर/12	24.	प्रतियोगिता	जनवरी/97
25.	दस	जनवरी/29	26.	नौ	दिसम्बर/58
27.	वचन	दिसम्बर/26	28.	संस्कार	नवम्बर/49
29.	पीपल	जनवरी/65	30.	वैराग्य	नवम्बर/28
31.	जीव	नवम्बर/5	32.	सुन्दर	नवम्बर/34
33.	अविस्मरणीय	नवम्बर/कवर पृष्ठ	34.	शरण, मुक्ति	दिसम्बर/45
35.	बोधि	दिसम्बर/64	36.	आवरण	नवम्बर/51
37.	करणी	दिसम्बर/88	38.	दोषा	जनवरी/48
39.	अधिवेशन	दिसम्बर/97	40.	व्यक्ति	जनवरी/52
41.	सूर्यास्त	जनवरी/82	42.	सम्प्रदाय के श्रावकों	जनवरी/68
43.	चमक-दमक	नवम्बर/80	44.	इरोस, थाय नोट्स	जनवरी/77
45.	महापुरुषों	जनवरी/कवर पृष्ठ			

46. राढामणी वेरुलियप्पगासे, अमहग्घए होइ हु जाणएसु।। दिसम्बर/11
47. अणवज्जेसणिज्जस्स, गेण्हणा–अवि दुक्करं।। नवम्बर/11
48. अन्ने य एयप्पभवे विसेसे, कारुण्णदीणे हिरिमे वइस्से।। जनवरी/11
49. सव्वारंभ-परिच्चाओ, निम्ममत्तं सुदुक्करं।। नवम्बर/11
50. अत्थे य संकप्पयओ तओ से, पहीयए कामगुणेसु तण्हा।। जनवरी/11

–नमन सुमतिचन्द मेहता, पीपाड़ (राज.)

श्राविका-मण्डल

मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता (36)

(अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा संचालित)

अ. भा.श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.) से प्रकाशित पुस्तक **जैन धर्म का मौलिक इतिहास (भाग तीन-सामान्य श्रुतधर खण्ड-प्रथम)** के आधार पर संचालित मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता की यह नवमीं किश्त है। प्रतियोगी के उत्तर लाइनदार पृष्ठ पर मय अपने नाम, पते (अंग्रेजी में), दूरभाष न. सहित Smt. Vajainti Ji Mehta, C/o Shri Anil Ji Mehta, 91, 5th main, 5th A cross, III Block, Tayagraj Nagar, Banglore-560028 (Karnataka) Mobile No. 09341552565 के पते पर 10 मई 2013 तक मिल जाने चाहिए।

सर्वश्रेष्ठ तीन प्रतियोगियों को क्रमशः राशि 500, 300, 200 तथा 100-100 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार दिए जायेंगे। इसके अतिरिक्त वर्ष के अन्त में 12 माह तक प्रतियोगिता में भाग लेने वाले और सर्वश्रेष्ठ रहने वाले प्रतियोगी को विशेष पुरस्कार दिए जायेंगे। - *पूर्णिमा लोढ़ा, अध्यक्ष*

जैनधर्म का मौलिक इतिहास (भाग-3)

(पृष्ठ सं.501 से 560 तक से प्रश्न)

प्रश्नों का उत्तर संख्या में दीजिए:-

1. सिद्धान्तों का बोध कराने वाले.......प्रकरण ग्रन्थों की रचना की।
2. ....गच्छों के आचार्य, साधु-साध्वी एवं श्रावक-श्राविका गण भिन्नमाल में एकत्रित हुए।
3. आचार्य पुण्यमित्र.......पदों वाले भगवती सूत्र के अंतिम धारक हुए।
4. सन्.....से प्रारम्भ हुआ वह संकट सुसंगठित और देशव्यापी था।
5. राजा भोज द्वारा प्रश्न किये जाने पर....... ब्राह्मण मुख्यों ने स्वीकार किया।
6. शिवार्य आचार्य ने 'आराधक' नामक....... गाथाओं के विशाल ग्रन्थ की रचना की।
7. प्रभाकरवर्द्धन ई. सन्....... के आस-पास महाराजाधिराज बना।
8. नरसिंह वर्मन........वर्ष तक शासन किया।

9. हर्षवर्द्धन ने.....फीट ऊँचा एक स्तूप बनवाया।

10. हरिभद्रसूरि ने लगभग.....प्रकरणों की रचना की।

प्रश्नों के उत्तर जो गलत हैं, उन्हें अन्डरलाइन करें और सही उत्तर लिखें-

11. आपके नाम का हमने अल्पकाल तक जाप किया है।

12. क्या मेरे यही लिखा है कि मैं शिष्य-सम्पत्ति विहीन ही रहूँगा।

13. शारीरिक की शक्ति कार्य मात्र के प्रकट करने में है।

14. भैया! आज संसार को आप जैसे विद्वान् की आवश्यकता है।

15. कुमारिल भट्ट बड़े ही समृद्ध एवं सम्पन्न साधु थे।

रिक्त स्थान की पूर्ति 'र' अक्षर से करें:-

16. महेन्द्र वर्मन ने उसके साथ सन्धि की और अपनी राजधानी की शत्रु से.......की।

17. .....आदि उत्कृष्ट गुण भारत के इतिहास में अंकित हैं।

18. अकलंक कलिंग के.....नगर में पहुँचे।

19. विजयन्त लोहियाण......... के पुत्र व्रजसिंह के पास रहने लगा।

20. स्वयं हर्ष ने........ प्रियदर्शिका आदि नाटकों की रचना की।

21. दोनों भाई अपने माता-पिता के साथ आचार्य.......के दर्शनार्थ गये।

22. ....वेषधारी परमहंस ने ग्राम्यभाषा में बोलते हुए विकृत स्वर में उत्तर दिया।

23. अकलंक-परमागमसार नामक कन्नड़ ग्रन्थ के.........थे।

24. आप वेदों के गूढ़.........को नहीं समझ पाये हैं।

25. हर्षवर्द्धन.........में विशारद और शान्ति का पुजारी भी था।

मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता (34) का परिणाम

जिनवाणी फरवरी, 2013 में पूछे गए प्रश्नों के उत्तर 205 व्यक्तियों से प्राप्त हुए। 25 अंक प्राप्तकर्ता विजेताओं का चयन लॉटरी द्वारा किया गया है।

प्रथम पुरस्कार- भगवानराज अखेराजजी सिघंवी-पाली मारवाड़ (राज.)

द्वितीय पुरस्कार- चन्दादेवी धर्मपत्नी गौतमचन्द जी 'मधुर'-बालोतरा (राज.)

तृतीय पुरस्कार- अंजना राजेन्द्र जी जैन-देवास (मध्यप्रदेश)

सान्त्वना पुरस्कार-

1. प्रमीला कैलाश जी कोठारी-जोधपुर (राज.)
2. रेखा कोठारी-अजमेर (राज.)

3. संगीता प्रवीण रांका-फरीदाबाद (हरियाणा)

4. भोपालचन्द सेठिया-जोधपुर (राज.)

5. निर्मला कोठारी-दूदू-जयपुर (राज.)

अन्य 25 अंक प्राप्तकर्ता– Sou.Basanta Madanlalji Sanklecha-Dhulia, Vimla .N. Mehta-Jodhpur, Anil Kumar Jain-Kota, Hans Raj Mohnot-Jaipur, Pramila Mehta-Dudu, Sou.Bharati .S.Mandalecha-Poona, Pramila Pokhrana-Dhulia, Kanwal Raj Mehta-Jodhpur, Sou.Sangita .A.Singhvi-Dhule, Misses.Shanta Mahendra Bafna-Nashik, Sushila Tater-Bhilwara, Devi Lal Bhanawat-Udaipur, Mrs.Hemlata Daga-Jaipur, Munnalal Bhandari-Jodhpur, Smt.Vidhya Sanghvi-Badnawar, Jugan Chand Chajjed-Jodhpur, Kanchan Lodha-Nashik, Rajkumari Lodha-Jaipur, Pramilaji .B.Pokhrana-Dhulia, Vijay Laxmi Mohnot-Jaipur, Suman Chajjed-Jaipur, Manila Parakh-Jaipur, Rajani Jain-Jaipur, Uma Agrawal-Jaipur, Tara Kumari Runiwal-Jaipur, Sonu Kothari-Jaipur, Jeth Mal Jain-Jodhpur, Sou.Sarala .Sha. Kankaria-julgaon, Sou.Saroj Parasmalji Runwal-Dhulia, Sou.Reena Kothari-Balod, Smt.Siddhi Kothari-Balod, Nathmal Kothari-Balod, Gyan Chand-Ajmer, Kapil Kothari-Jaipur, Pushpa Devi Bardia-Jaipur, Raj kumar Banthiya-Pali, Smt.Pista Gulecha-Jaipur, Vandana .Dr.Anil khicha-Surat, Pramila Mehta-Ajmer, Shilpa Surana-Ajmer, Jagadish Prasad Jain-Kota, Siddhi Kothari-Balod, Hema Jain-Jaipur, Mrs.Renu Virendra Jain-Mumbai, Ugam Mulchandji Dosi-Secunderabad, Shobha Nahar-Secunderabad, Suresh Kumar Saand-Pali, N.Mahaveer Chand Tater-Madras, Chitra Shreemal-Merta City, Sou.Leela Bai Prakash Chandji Munot-Ichalkaranji, Khimji .R. Shah-Mumbai, Suresh Chand Jain-Kherli, Dharam Chandra Dhammani-Ahmedabad, Lalita Ajit Bafna-Nagpur, Smt.Narendra Gopichand Bamb-Mumbai, Prasan Kothari-Jodhpur, Sunil Kumar Jain-Karauli, Vikas Bamb-Mumbai, Meena Vijay Bora-Mumbai, Sapna Jain-Mysore, Indu Tated-Merta City (Naguor), Dilkhush Raj jain-Baroda, Amita Tambi-Jaipur, Sudha Daga-Bikaner, Vandana Lodha-Bhilwara, Smt.Kalpana Dhakad-Gurgaon, Pushpa Jain-Jaipur, Smt.Manoj Kothari-Udaipur, Paras Chand Jain-Bharatpur, Smt.Chandrakala Mehta-Bangalore, Bhavika .M.Shah-Belgaum, Anita Atul Munot-Ichalkaranji, Smt.Kamal Chordia-Jaipur, Sou.Prakash Bai-Bhandara, Hem Kishora Bagmar-Secunderabad, Smt.Kamla Modi-Jodhpur, Manju Dilip Jain-Mumbai, Mohan Bai Prakash Mal Lodha-Ajmer, Shernik .R.Jain (Chhajed)-Jalgoan, Y.Sunita Singhvi-Chennai, Smt.Manju .N.Bafna-Jalgoan, Smt.Kamla Singhvi-Jaipur, Devendra Nath Modi-Jodhpur, Parasmal Daulat Rajji Baghmar-Barmer, Dr.Padam Chand Munot-Jaipur, V.Vasantha Bai-Hospet (K.T.A), Seema Jain-Aligarh, Nita kewal Chand Kanak-Bangalore, Neetu Gulecha-Secunderabad, Smt.Veena Tarunji Kimtee-Rampura, Vandana Punamia-Pali Marwar, Dharmesh Punamia-Pali Marwar, Deepmala Singhvi-Pali Marwar, Nilima Yogesh Chopra-Ichalkaranji, Kalyan Mal jain (Tatar)-Patan, Rajendra Tejmal Jain-Jalgoan, Abhilasha Hirawat-Mumbai, Vikram.M.Chopra-Coimbatore, Kuntal Kumari Jain-Jaipur, Sou.Kusum Pareshji Ponamia-Ichalkaranji, Chandrakala Dilipji Ranka-Jalgoan, Mrs.Chetana .B.Bothra-Mumbai, Miss.Kanak Jain-Delhi, Rajendra Kumar Chopra-Jabalpur, Mrs.Aruna Jain-Hoshiarpur, Gewar Chand Chajed-

Bellary, Smt.Premlata Lodha-Jaipur, Monika Jain-Indore, Madan Lal Sancheti-Hyderabad, Sou.Meena Bai Rajkumarji Nahar-Ichalkaranji, Kavita Jain-Mumbai, Padam Chand Gandhi-Jodhpur, Subhash Mahanlalji Dhadiwal-Thane, Lalita Jain-Hyderabad, R.Madanlal Baghmar-Sowcarpet, Nirmala .H. Surana-Bikaner, Vijaya Laxmi-Ajmer, Miss.Ratan Karnawat-Jaipur, Smt.Kamalesh Geilda-Ajmer, Smt.Meera Jain Lohiya-Sawai Madhopur, Gun Mala Jain-Mumbai, Ugama Devi Duggad-Bangalore, Mrs.Reema Jain .W/O.Mr.Dinesh Jain-Ludhiana, Anu Jain-Hoshiarpur, Smt.Meenakshi Lodha-Gurgoan, Sou.Shobha Rajendra Jain-Nasik, Hem Raj Surana-Jaipur, Balwant Singh Chordia-Jhalara Patan, Kiran Kothari-Jaipur, Hemlata Jain-Beawar, Milap .P. Lunawat-Ahmedabad, Smt.Vimla Bhansali-Surat, Laxmi Chand Chhajer-Balothra, N.Vijay Shankla-Coimbatore, Mrs.Seema Dhing-Udaipur, Babu Lal Jain-Bharatpur, Kanhaiya Lal Jain-Bhilwara, Paras Jain-Bellary, Indu Kamleshji Jain-Mumbai, Smt.Leena Mahendraji Jain-Chiplon, Prem Jain-Alwer, Chandra Munot-Mumbai, Smt.Shiromani Jain-Shajapur, Neelam Jain-Gurgoan, Anju Tater-Delhi, Indra Tated-Delhi, Anurag Surana-Ajmer, Smt.Sushila Begani-Bikaner, Vinod Jain-Shimoga, Rajni Bhandari-Gurgoan, Pushpa Surana-Jaipur, Sushila Jain-Mysore, Mrs.Tanuja Prashant Kothari-Udaipur, Smt.usha Lunawat-Ajmer, Pankaj Jain-Jaipur, Sou.Shakuntala Bai Khushal Chandji Khivsara-Jalgoan, Sou.Shashikala Lunawat-Nasik, Dimple .W/O.Rajesh Ostwal-Pali, Nen Chand Bafna-Jodhpur, Mr.Tushar Rameshji Chhajed-Jalgoan, Mrs.Rajul Rameshji Kothari-Dhulia, Chandan Mal Palrecha-Jodhpur, Sunita Oswal-Jaipur, Rohit Oswal-Jaipur, Mrs.Nutan Ajitji Bhandari-Kolhapur, Miss.Pooja Nitin Bora-Ichalkaranji, Suvarna Nitinji Bora-Ichalkaranji, Sou.Nirmala Vijayji Gundecha-Ichalkaranji, Nirmala Rajendraji Bora-Ichalkaranji, Dal Chand Jain-Jaipur, Meenu Jain (Mehta)-Jaipur, Bhagyawanti Tater .D/O.Parasmal Tater-Jodhpur, Chitra Bhandari .W/O.Pankaj Bhandari-Jodhpur, Smt.kusum Singhvi-Jodhpur, Jyoti Bhansal-Bangalore, Kamla Surana-Jodhpur, Nilima Yogesh Chopra-Ichalkaranji, Sou.Shobha Nandalalji Gugale-Ichalkaranji, Punam Ritesh Chopda-Ichalkaranji, Priyanka Mukesh chopda-Ichalkaranji.

25 अंक से कम अंक प्राप्तकर्ताओं की सूची नहीं दी जा रही है।

लोकोक्तियाँ पूर्णतः सच नहीं होती

आचार्य श्री कनकनन्दी जी

टेढ़ी अंगुली से घी निकालना

टेढ़ी अंगुली से भले ही घी निकले, टेढ़ापना से सत्य शान्ति न मिले।
मन वचन काय से जो सरल होता, उसका आर्जव धर्म सही पलता।
कपट भाव छिपा नहीं रहता। दुर्योधन रावण के सम मरता।।

अकेली मछली सारे तालाब को गन्दा करती है

मछली एक से तालाब गन्दा न होता, एक व्यक्ति से समाज गन्दा न होता।
एक चना से भाण्ड फूटता नहीं, एक हाथ से ताली बजती नहीं।
एक पापी से सब न होते पापी, पापी का अनुकरण करते पापी।

कृति की 2 प्रतियाँ अपेक्षित हैं

नूतन साहित्य

डॉ. धर्मचन्द जैन

अहिंसा दर्शन (एक अनुचिन्तन)- डॉ. अनेकान्त कुमार जैन., ***प्रकाशक***- श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ (मानित विश्वविद्यालय), कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, नई दिल्ली-110016, ***पृष्ठ***- 28+180, ***मूल्य***-160 रुपये, सन् 2012

विश्व में प्राणिजगत् के शान्तिपूर्ण सह अस्तित्व के लिए अहिंसा आवश्यक है। अहिंसा की अवधारणा वैदिक वाङ्मय से लेकर विश्व के सभी धर्म-दर्शनों में सम्प्राप्त है, किन्तु जैन धर्म-दर्शन में इसका सूक्ष्म विवेचन हुआ है। युवा विद्वान् डॉ. अनेकान्त कुमार जैन ने 'अहिंसा दर्शन (एक अनुचिन्तन)' पुस्तक में अहिंसा के स्वरूप की वैदिक, बौद्ध, सिक्ख, ईसाई, यहूदी, इस्लाम, सूफी एवं पारसी धर्मों के अनुसार चर्चा करने के अनन्तर जैनधर्म में उसके व्यापक विमर्श को स्पष्ट किया है। अहिंसा का प्रयोग हमारी दृष्टि एवं जीवन में जितना बढ़ता जाएगा, उतना हम स्वयं की एवं समाज की शान्ति एवं समरसता में सहभागी बनते जायेंगे, यह सच है। हिंसा के लिए दिए जाने वाले तर्कों का डॉ. जैन ने परिहार किया है। हिंसा का पूर्ण त्याग यद्यपि गृहस्थ के लिए सम्भव नहीं है तथापि वह अनर्थक हिंसा का त्याग करता हुआ प्रयोजनभूत हिंसा में भी कमी ला सकता है। पांच व्रतों में अहिंसा समायी हुई है। शाकाहार, पानी छानना, रात्रि-भोजन त्याग आदि का प्रयोग भी अहिंसा मूलक है। पूर्ण अहिंसा तो राग-द्वेषादि के उत्पन्न न होने पर सधती है। डॉ. जैन ने गाँधीदर्शन में अहिंसा के प्रयोग की विशद चर्चा करने के साथ आचार्य शान्तिसागर, आचार्य भिक्षु, दलाईलामा, महर्षि अरविन्द, स्वामी विवेकानन्द, आचार्य रजनीश, सीमान्त गाँधी, आचार्य विनोबा के अनुसार भी अहिंसा के महत्त्व को स्थापित किया है।

दश अध्यायों में निबद्ध इस पुस्तक के अन्तिम तीन अध्यायों में अहिंसा के प्रशिक्षण की आवश्यकता, सामाजिक जीवन में अहिंसा की उपयोगिता तथा शाकाहार और पर्यावरण की चर्चा की है। लेखक ने अहिंसा प्रशिक्षण के चार आयामों को स्पष्ट किया है- 1. हृदय परिवर्तन, 2. दृष्टिकोण परिवर्तन, 3. जीवन शैली परिवर्तन, 4. व्यवस्था परिवर्तन। अहिंसा का प्रयोग व्यवसाय, राजनीति, कानून, चिकित्सा, शिक्षा आदि सबमें सम्भव है। आहार में भी अहिंसा का प्रयोग आवश्यक है। मांसाहार मानवता के विरुद्ध है। लेखक ने अन्त में परिशिष्ट के अन्तर्गत 'मध्यकालीन भारतीय संत और अहिंसा', 'इस्लाम पर अहिंसा का प्रभाव' तथा 'आतंक के नये चेहरे और शान्ति अहिंसा' अध्याय योजित किए हैं। उल्लेखनीय है कि 'जिनवाणी मासिक' पत्रिका का सन् 1993 में 'अहिंसा' विशेषांक प्रकाशित हुआ था,

जिसका उल्लेख लेखक ने अपनी सहायक ग्रन्थ सूची में नहीं किया है, सम्भव है यह पुस्तक लेखक ने न देखी हो। लेखक की पुस्तक अहिंसा पर व्यापक चिन्तन एवं अहिंसा के प्रशिक्षण व प्रयोग की दृष्टि से आवश्यक दिशा प्रदान करती है।

गुणामृतम् (श्री गुणवन्तमुनि रचित)- संकलयित्री- मीना बोहरा, ***प्रस्तुति***- अमृत लालवाणी, ***प्रकाशक***- श्री नूतन ज्ञान कोष सेवा संस्था (प्रकाशन समिति), जोधपुर, ***प्राप्ति स्थान***- श्री श्रुताचार्य चौथ स्मृति भवन, महिला बाग, जोधपुर-342002, फोन- 0291-2546321,09314210620, ***पृष्ठ***-488, ***मूल्य***-70 रुपये, नवम्बर 2012

जयगच्छ में वरिष्ठ तपस्वी साधक सन्त श्री गुणवन्तमुनि जी एक श्रेष्ठ कवि भी हैं, यह उनकी इस काव्य रचना से विदित होता है। तपसाधिका ब्रह्मचारिणी सुश्री मीना बोहरा ने श्री गुणवन्त मुनि जी की रचनाओं को स्तुति, पर्व, उपदेश, दीक्षा-प्रसंग, चारित्र-प्रक्षेप, सज्झाय एवं कविता खण्डों में विभक्त किया है। पुस्तक में 222 रचनाएँ हैं, जिसमें सुभाषित शीर्षक के अन्तर्गत पृथक् से 450 लघु रचनाएँ हैं। रचनाओं को पढ़कर/गाकर आनन्द का अनुभव होता है, क्योंकि सभी काव्यरचनाएँ भावपूर्ण हैं, शब्दों का संयोजन समुचित है तथा अर्थ की दृष्टि से मर्म प्रकाशक हैं। उदाहरण के लिए 'श्रमण' शीर्षक कविता का पद्य पठनीय है-

श्रम करते हैं जो अन्दर का, वे श्रमण कहलाते हैं।
सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चरित से, जो निज को चमकाते हैं।
चमक-दमक बाहर की तजकर, भीतर दीप जलाते हैं।
ज्वालाओं को शान्त करन हित, उपशम-भावना भाते हैं।। -पृष्ठ 340

स्थानक के सम्बन्ध में मुनि श्री लिखते हैं-

सामायिक स्वाध्याय करें सब, समभावों में रहकर।
वात्सल्य भाव से धर्मक्रिया का अनुमोदन कह-सुनकर।
शिथिलों को भी मिले प्रेरणा, उनका जीवन धन हो।.. वह स्थानक ही पावन हो।

जिनवाणी पर अभिमत

मैं बहुत समय से जिनवाणी का सदस्य हूँ। हमें इस पत्रिका का बेसब्री से इन्तजार रहता है। मेरे विचार से इस पत्रिका में दिनोंदिन निखार एवं श्रेष्ठता बढ़ रही है।

आचार्य, उपाध्याय भगवन्तों के प्रेरक प्रवचन एवं संदेश बहुमूल्य होते हैं। साथ ही बाल स्तम्भ प्रतियोगिता, इतिहास की प्रतियोगिता भी काफी रोचक एवं ज्ञानवर्द्धक रहती है। डॉ. चंचलमल जी चोरडिया के स्वास्थ्य सम्बन्धी लेख भी वैज्ञानिक ढंग से उपयोगी जानकारी प्रदान करते हैं। अनेक प्रकार की प्रतियोगिता एवं निबन्ध का आयोजन भी प्रशंसनीय कदम है। मैं इस पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति चाहता हूँ।

-जेठमल चोरडिया, बसंत मेडिकल स्टोर्स, मेन रोड़, कवर्धा-491995 (छतीसगढ़)

समाचार-विविधा

विचरण-विहार एवं विहार दिशाएँ : एक नज़र में

(02 अप्रेल, 2013)

- जिनशासन-गौरव परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा 7 अलीगढ़-रामपुरा विराजित हैं। अग्रविहार सवाईमाधोपुर की ओर संभावित है।
- परमश्रद्धेय उपाध्यायप्रवर पंडितरत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा 5 जोधपुर पधार गये हैं। श्रद्धेय श्री जितेन्द्रमुनि जी म.सा. के ऑपरेशन के कारण अभी जोधपुर विराजने की संभावना है।
- तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. आदि ठाणा 4 रामपुरा बाजार स्थानक, कोटा में विराज रहे हैं।
- साध्वीप्रमुखा शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. आदि ठाणा 5 पावटा जोधपुर विराज रहे हैं।
- व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 10 रामपुरा बाजार, कोटा में विराजित हैं।
- तत्त्वचिन्तिका महासती श्री रतनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 6 कमला नगर अस्पताल के पास उपाध्यायप्रवर की सेवा में जोधपुर विराज रहे हैं।
- विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 5 बारह गणगौर, जयपुर के स्थानक में विराज रहे हैं।
- विदुषी महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा. आदि ठाणा 5 बजरिया-सवाईमाधोपुर पधारे हैं।
- व्याख्यात्री महासती श्री मनोहरकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 3 विजयनगर पधारे हैं।
- व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 7 अलीगढ़-रामपुरा विराज रहे हैं।
- व्याख्यात्री महासती श्री सरलेशप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा 3 महावीर भवन, मानसरोवर, जयपुर में विराजमान हैं।
- व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबाला जी म.सा. आदि ठाणा 5 बीकानेर में विराज रहे हैं।
- व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. आदि ठाणा 7 चेटपेट विराज रहे हैं। चेन्नई की ओर विहार संभावित है।
- व्याख्यात्री महासती श्री चारित्रलता जी म.सा. आदि ठाणा 4 कांचीपुरम विराज रहे हैं। चेन्नई की ओर विहार संभावित है।

- **व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवती जी म.सा. आदि ठाणा 5** औरंगाबाद विराजमान हैं। महाराष्ट्र में विहार संभावित है।
- **व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा 4** अलवर पधारे हैं।
- **व्याख्यात्री महासती श्री सुमतिप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा 4** कमला नगर अस्पताल के निकट, जोधपुर विराज रहे हैं।
- **सेवाभावी महासती श्री विमलेशप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा 4 रामपुरा बाजार, कोटा विराज रहे हैं।**
- **व्याख्यात्री महासती श्री रुचिता जी म.सा. आदि ठाणा 3** अलीगढ़-रामपुरा विराज रहे हैं।

आचार्यप्रवर के पदार्पण से पोरवाल क्षेत्र में उल्लास एवं उमंग के साथ भक्ति और धर्माराधना का संगम

चौथ का बरवाड़ा में प्रेरक उद्‌बोधन

अलीगढ़-रामपुरा में फाल्गुनी चौमासी पर 2500 की उपस्थिति

आचार्यप्रवर के 75 वें जन्म-दिवस (अमृत महोत्सव) के साधना-सप्ताह में तप-त्याग के प्रति उल्लास

आगममर्मज्ञ, जिनशासन गौरव, जन-जन की आस्था के केन्द्र परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा., महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा. आदि ठाणा 7 का 1 मार्च को पोरवाल क्षेत्र के **पांवडेढ़ा** गांव में ज्योंहि पदार्पण हुआ तो मानो भक्ति का सैलाब उमड़ पड़ा। छोटे से ग्राम में लगभग 500 की उपस्थिति से आचार्यप्रवर का स्वागत हुआ। 2 मार्च को **चौथ का बरवाड़ा** की ओर 6 किलोमीटर के विहार में पूज्य गुरुदेव एवं संतवृन्द के पीछे भक्तों की विशाल जनमेदिनी का दृश्य मनमोहक लग रहा था। मार्ग में श्रमण भगवान महावीर, सामायिक एवं स्वाध्याय के प्रबल प्रेरक आचार्य हस्ती, रत्नसंघ के अष्टम पट्टधर परमपूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. की जय-जयकार का सिंहनाद गूंज रहा था। स्थानक भवन में पधारने पर श्राविका मण्डल की बहनों द्वारा पूज्य आचार्यप्रवर की गुण गरिमा का स्वागत के रूप में संगान किया गया। श्रद्धेय श्री मनीषमुनि जी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री रुचिता जी म.सा., महान् अध्यवसायी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा. ने पोरवाल क्षेत्र की भक्ति पर प्रमोद अभिव्यक्त करते हुए तप-त्याग और व्रत प्रत्याख्यान की भावना को प्रबल बनाने की प्रभावी प्रेरणा की। पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने उद्‌बोधन में फरमाया- "**संवत् 2027 में**

गुरुदेव (आचार्य हस्ती) के साथ इस क्षेत्र में आया तब श्री लक्ष्मीचन्द जी म.सा. ने नियम कराते समय रात्रि-भोजन के त्याग की बात कही। इस नियम की बात सुनकर भाइयों ने कहा- अन्नदाता क्या जैन रात्रि में खाता है? यहाँ तो बच्चे भी दिन में भोजन कर लेते हैं। इसलिए यह नियम क्यों? ऐसी मजबूत नींव देखकर पूज्य गुरुदेव ने सामायिक स्वाध्याय का प्रासाद खड़ा किया और उस समय सैकड़ों स्वाध्यायी बने। रोट जैसी प्रथा के समय का परिवर्तन महान साधक के वचनों से सम्भव हुआ। आज उसी गौरव को पुनः स्थापित करने की भावना से पोरवाल क्षेत्र में आया हूँ। सामूहिक भोज में रात्रि भोजन न हो यह संकल्प पोरवाल क्षेत्र के हर गांव, नगर के स्तर पर हो, यह मेरी भावना है। सामूहिक रात्रि भोज का आयोजन न कोई व्यक्ति करे और न ही उसमें सम्मिलित हो। अलीगढ़ रामपुरा, चौथ का बरवाड़ा एवं पावडेढा क्षेत्र से इस नियम के पालन की भावना का संकल्प पत्र आ चुका है। सभी क्षेत्र के पोरवाल बंधु संघ स्तर पर यह नियम बनावें ऐसी मेरी भावना है।'' ''दूसरी बात रख रहा हूँ कम से कम हर घर का एक सदस्य प्रतिक्रमण का जानकार हो इस लक्ष्य से दो पंक्ति प्रतिदिन यादकर प्रतिक्रमण पूरा किया जाये तो स्वाध्यायियों की कमी की पूर्ति इस क्षेत्र से पुनः हो सकेगी।''

पूज्य आचार्यप्रवर चौथ का बरवाडा में 2 से 12 मार्च तक विराजे। प्रतिदिन वीतराग वाणी का वर्षण हुआ तथा दर्शन-वन्दन हेतु आगतों का नियमित क्रम बना रहा। प्रार्थना प्रवचन में अच्छी उपस्थिति रही। ध्यान के पश्चात् दोपहर 2 बजे की मांगलिक में ऊपर का हॉल खचाखच भर जाता था। बरवाड़ा में विदुषी महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री विमलेशप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा का सान्निध्य भी प्राप्त था। अतः चतुर्विध संघ की उपस्थिति से चौथ का बरवाड़ा धन्य हो उठा। 10 मार्च को संघाध्यक्ष श्री ज्ञानेन्द्र जी बाफना, महामंत्री श्री आनन्द जी चौपड़ा आदि दर्शन-लाभ हेतु उपस्थित हुए। 9 व 10 मार्च को स्वाध्यायियों की गुणवत्ता में वृद्धि हेतु स्वाध्याय संघ के संयोजक श्री कुशल जी गोटेवाला के संयोजन में दो-दिवसीय शिविर आयोजित हुआ, जिसमें 100 से अधिक उपस्थिति रही। 10 एवं 11 मार्च को धर्मचक्र की आराधना हुई।

13 मार्च को प्रातः चौथ का बरवाड़ा से विहार कर पोरवाल संघ के पूर्व अध्यक्ष श्री रामप्रसाद जी रेंजर की विनति से पूज्यप्रवर **भैडोला** पधारे। यहाँ पर जैन का मात्र एक घर होने पर भी 500 से अधिक श्रद्धालु भक्तों की उपस्थिति रही। यहाँ से 14 मार्च को बनजारी, 15 को **एकडा** होते हुए 16 मार्च को **डेकवा** पधारे। यहाँ जैनेतर भाइयों ने

पूज्यप्रवर के प्रवचनामृत का अच्छी संख्या में पूरा लाभ लिया। 17 मार्च को दीर्घ विहार कर **मूई** ग्राम पधारे, जहाँ खेड़ली संघ विनति लेकर उपस्थित हुआ। 18 मार्च को **बगावदा** में धर्मप्रभावना करते हुए 19 को **सोप** पधारे। यहाँ पर जैन भाई दो गुटों में विभक्त थे। पूर्व में कई बार प्रयास करने पर भी सफलता नहीं मिली। संघनायक आचार्य श्री हीरा के विराजने का ऐसा अचिन्त्य प्रभाव पड़ा कि यहाँ का जैन संघ एकजुट हो गया और समरसता का संचार होने से वातावरण प्रमोदजन्य बन गया। श्री सुरेशचन्द जी जैन-कुश्तला की इस कार्य में महती भूमिका रही। 20 मार्च को सोलतपुरा पधारने पर मीणा समुदाय के लोगों ने भक्ति का अच्छा लाभ लिया। इस विचरण के दौरान ज्ञात हुआ कि **डेकवा एवं सोलतपुरा ऐसे दो गाँव हैं जहाँ कोई भी व्यक्ति शराब नहीं पीता, न ही ताश (जुआ) खेलता है। यदि कोई ऐसा करता है तो उस पर 1100 रुपये का अर्थदण्ड किया जाता है।** सोलतपुरा की एक वृद्धा बहन दो युवकों को गुरुचरणों में लेकर उपस्थित हुई और निवेदन किया कि महाराज ये दोनों चोरी-छिप कर शराब का सेवन करते हैं। पूज्य गुरुदेव के समझाने पर उन दोनों ने आजीवन शराब का त्याग कर दिया। 20 मार्च को ही सायंकाल यहाँ से विहार कर **चांपोला** पधारे, जहाँ पर रात्रि साधना की। चेन्नई से एम.सी.रोड संघ विनति लेकर उपस्थित हुआ।

फाल्गुनी चौमासी पर अलीगढ़ में उल्लास

21 मार्च को प्रातः पूज्य आचार्यप्रवर का विहार **अलीगढ़-रामपुरा** की ओर हुआ। भक्तजन विहारलाभ की भावना से प्रातःकाल ही चांपोला पहुँच गये थे। श्रमण भगवान महावीर, जैन धर्म, आचार्य हस्ती, पूज्य आचार्यप्रवर हीरा, उपाध्यायप्रवर मान आदि के जय-जयकार के साथ भक्त श्रावक-श्राविकाएँ आचार्यप्रवर एवं संतवृन्द के साथ हर्षित उल्लसित मन से जयनाद कर रहे थे। मार्ग में धार्मिक पाठशाला के नन्हें-नन्हें बालक सामायिक वेश में आगे चल रहे थे। जिनको देखकर भावी पीढ़ी में धर्म भावना का साकार रूप दृष्टिगोचर हो रहा था। पूज्य गुरुदेव के पावन चरण अलीगढ़ रामपुरा की भूमि की ओर ज्यों-ज्यों आगे बढ़ रहे थे त्यों-त्यों जन सैलाब उमड़ रहा था। पूज्य आचार्य भगवन्त का वर्षों पश्चात् मंगल पदार्पण अलीगढ़ एवं पोरवाल क्षेत्र के लिए आह्लादकारी था। अलीगढ़ स्थानक भवन धर्मराधना की दृष्टि से अनुकूल स्थान है। पूज्यप्रवर के समूचे विहार में अलीगढ़-रामपुरा के साथ बजरिया, सवाईमाधोपुर, कुश्तला, चौथ का बरवाड़ा आदि ग्राम नगरों की सेवाएँ निरन्तर बनी रही। 23 मार्च को जामोला संघ चातुर्मास की विनति लेकर उपस्थित हुआ। 24 मार्च को रविवार होने से लगभग 1000 श्रावक-

श्राविकाओं ने प्रवचन का लाभ लिया। जयपुर से श्री कैलाशचन्द जी हीरावत, डॉ. पी.एस. लोढ़ा आदि सपरिवार दर्शनार्थ पधारे। महावीर नगर एवं पद्मावती पोरवाल संघ, जयपुर तथा गुलाबपुरा संघ विनति लेकर उपस्थित हुआ।

अलीगढ़ में 26 मार्च को फाल्गुनी चौमासी को प्रवचन सभा का आयोजन विशाल परिसर में किया गया, जहाँ 2000 से भी अधिक भक्तजन उपस्थित थे। आचार्यप्रवर, संतवृन्द, महासतीवृन्द तथा श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति से समवशरण जैसा नजारा परिलक्षित हो रहा था। सभी श्रोता अनुशासित रूप में बैठकर प्रवचन श्रवण का लाभ ले रहे थे। यहाँ पर विदुषी महासती श्री सौभाग्यवती जी, व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवर जी, व्याख्यात्री महासती श्री रुचिता जी आदि ठाणा भी उपस्थित थे।

श्रद्धेय श्री योगेशमुनि जी म.सा. ने अपने प्रवचन में बाह्य रंगों से होली न खेलकर अपने अंतर में धर्म के गहरे रंग में रंगने की प्रेरणा की। आत्मा का रंग बदले उसके लिए संतों के संग की आवश्यकता बताई। **महासती श्री रुचिता जी म.सा.** ने आचार्यप्रवर के पदार्पण को अपनी चेतना के रूपान्तरण हेतु एक उत्तम अवसर बताया। सभा संचालक एवं श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन संघ के मंत्री श्री लड्डूलाल जी जैन ने कहा कि पूज्य आचार्यप्रवर के पदार्पण से अलीगढ़ संघ तो भाग्यशाली है ही, समूचा पोरवाल क्षेत्र बड़भागी है। सभा में विभिन्न ग्राम नगरों से आये संघों ने अपने विनति पत्र प्रस्तुत किए। सवाईमाधोपुर क्षेत्र की ओर से श्री पारसमल जी बोहरा ने आचार्य भगवन्त के चातुर्मास हेतु विनति प्रस्तुत करते हुए कहा कि हमारी विगत छह वर्षों से विनति चल रही है, इस वर्ष चातुर्मास से अवश्य ही क्षेत्र को लाभान्वित करें। अलीगढ़-रामपुरा संघ की ओर से श्री गोपाललाल जी जैन ने भी पुरजोर शब्दों में आचार्य भगवन्त के चरणों में अलीगढ़ चातुर्मास हेतु भावपूर्ण विनति-पत्र प्रस्तुत किया। कोसाणा संघ से श्री बुधमल जी बोहरा ने उपाध्यायप्रवर एवं व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबाला जी म.सा. के वर्षावास हेतु भावभीनी विनति प्रस्तुत की। श्री ताराचन्द जी जैन ने देई संघ की ओर से, कुश्तला संघ से श्री सुरेशचन्द जी जैन ने, चौरू संघ से श्री नरेन्द्र जी जैन ने, पचाला संघ से श्री कपूरचन्द जी जैन ने आचार्यप्रवर की सेवा में महावीर जयन्ती पर पधारने की विनति प्रस्तुत की। यवतमाल संघ से श्री विमलचन्द जी बोहरा ने, प्रतापनगर जयपुर से श्री सुशीलकुमार जी जैन ने, नदबई से श्री नरेश जी जैन ने चातुर्मास हेतु विनति प्रस्तुत की।

महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्र मुनि जी म.सा. ने अपने प्रवचन में फरमाया कि आज का दृश्य ऐसा लग रहा है जैसे मानो संवत्सरी महापर्व हो। आचार्य भगवन्त भक्ति और भक्तों की भावना को देखकर कृपा बरसाते हैं। जिस क्षेत्र में धर्म की प्रभावना की

संभावना अधिक होती है उस क्षेत्र को चातुर्मास से लाभान्वित करते हैं। आज का पर्व आत्म-शोधन का पर्व है। आप धर्माराधना की योजना बनाएँ एवं चातुर्मास प्राप्त कर अधिकाधिक जीवन निर्माण की दृष्टि से तत्पर बनें। आज की उपस्थिति का यह नज़ारा ऐसा लग रहा है जैसे मानो समवशरण की रचना हो रही है। आचार्यप्रवर एवं उपाध्यायप्रवर की दीक्षा अर्द्धशती के साथ आचार्यप्रवर की हीरक जयन्ती का प्रसंग उपस्थित हो रहा है। 28 मार्च से प्रारम्भ होने वाले साधना-सप्ताह में आप सब की भागीदारी रहे तथा अधिकतम साधना आराधना कर अपना अर्घ्य अर्पित करें।

पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने उद्बोधन में फरमाया कि जो बाहर से एवं भीतर से पवित्र करता है वह पर्व है। होली का पर्व काला मुँह करने के लिए अथवा रंजिश का बदला लेने के लिए नहीं है, अपितु अपनी आत्मा में संवर एवं निर्जरा का रंग चढ़ाने के लिए है। आप कषायों की होली जलायें तथा ज्ञान-दर्शन-चारित्र के मार्ग पर आगे बढ़ें। इस क्षेत्र में भक्ति एवं धर्माराधना तो है, किन्तु विगत चालीस वर्षों में एक मामले में कमजोरी देखी गई है। वह यह है कि यदि कोई वैराग्य के मार्ग में आगे बढ़ता है तो उसे प्रोत्साहित करने की बजाय डिगाने का प्रयत्न किया जाता है। आप इस दृष्टि को बदलें। इस दृष्टि को बदलने पर यह क्षेत्र अधिक दीप्तिमान हो सकेगा।

इस अवसर पर यवतमाल, कोसाना, नदबई, हिण्डौनसिटी, चौथ का बरवाड़ा, बजरिया, सवाईमाधोपुर, आदर्शनगर, मण्डी आलनपुर, हाउसिंग बोर्ड, पचाला, बगावदा, सोप, मुई, डेकवा, समीधी, उनियारा, कुण्डेरा, सुमेरगंज मण्डी, बाबई, इन्द्रगढ़, मण्डावर, दिल्ली, मुम्बई, चेन्नई, बीजापुर, जयपुर, बगावदा, जरखोदा, निमाड़ आदि क्षेत्रों से बहुत ही अच्छी उपस्थिति रही। विशाल पाण्डाल से जब सभा विसर्जित हुई तो आचार्यप्रवर के पीछे जब दर्शनार्थियों का रैला चल रहा था तो ऐसा लग रहा था मानो इसी बड़े शहर में दीक्षा की शोभा यात्रा निकल रही हो।

श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन संघ अलीगढ़ द्वारा समागत अतिथियों के भोजन आवास आदि की सुन्दर व्यवस्था की गई तथा स्थानीय संघ के सभी सदस्य भी फाल्गुनी चातुर्मासी के दिन भोज में सम्मिलित हुए।

आचार्यप्रवर के 75 वें जन्म-महोत्सव पर साधना-सप्ताह

परम पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. का चैत्रकृष्णा अष्टमी दिनाँक 3 अप्रेल, 2013 को 75 वाँ जन्म-दिवस उपस्थित हो रहा है। यह दिवस सम्पूर्ण देश में साधना-सप्ताह के रूप में मनाया जा रहा है। साधना-सप्ताह की रूपरेखा इस प्रकार है-

एकाशन दिवस	गुरुवार, 28 मार्च, 2013
सामायिक-स्वाध्याय दिवस	शुक्रवार, 29 मार्च, 2013
आयम्बिल दिवस	शनिवार, 30 मार्च, 2013
दया दिवस	रविवार, 31 मार्च, 2013
बीयासन दिवस	मंगलवार, 2 अप्रेल, 2013
उपवास/पौषध दिवस (चैत्रबदी 8)	बुधवार, 3 अप्रेल, 2013

दिनाँक 1 से 3 अप्रेल तक उपवास एवं एकाशन के तेले की विशेष कार्ययोजना है। 3 अप्रेल को आचार्यप्रवर के 75 वें जन्मदिवस पर अलीगढ़ ग्राम में अगता घोषित किया गया है। ज्ञानाराधन एवं धर्माराधन के भी विभिन्न कार्यक्रम क्रियान्वित किए जाने हैं। आचार्यप्रवर के सान्निध्य में अलीगढ़-रामपुरा में तो साधना-सप्ताह पूर्ण उत्साह एवं उमंग के साथ मनाया ही जा रहा है, अन्य ग्राम-नगरों में जहाँ संत-सती विराजित हैं, वहाँ भी इस सप्ताह के अनुसार धर्माराधन एवं तपाराधन के कार्यक्रम चल रहे हैं।

अलीगढ़-रामपुरा में 31 मार्च से 2 अप्रेल तक 'स्वाध्यायी महत्ता शिविर' भी आयोजित किया जा रहा है।

चातुर्मासों की घोषणा

आगममर्मज्ञ जिनशासन गौरव, परमपूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. ने फाल्गुनी पूर्णिमा के दिन 27 मार्च, 2013 को अलीगढ़ रामपुरा में साधु मर्यादा में रखने के योग्य आगारों के साथ निम्नांकित चातुर्मासों की घोषणा की है-

1. **सवाईमाधोपुर क्षेत्र**- परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. आदि ठाणा
2. **जामोला (अजमेर)**- व्याख्यात्री महासती श्री मनोहरकंवर जी म.सा.आदि ठाणा
3. **गुलाबपुरा (भीलवाड़ा)**- व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा
4. **निफाड़ (नासिक)**- व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवती जी म.सा. आदि ठाणा
5. **नदबई (भरतपुर)**- व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा
6. **मण्डावर (दौसा)**- व्याख्यात्री महासती श्री विमलेशप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा
7. **मदनगंज-किशनगढ़**- क्षेत्र खाली नहीं रहेगा

13 मई को अक्षयतृतीया सवाईमाधोपुर में

परम पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. ने अक्षय तृतीया 13 मई, 2013 पर सवाईमाधोपुर विराजने की स्वीकृति सवाईमाधोपुर श्रीसंघ को प्रदान की है। इससे सवाईमाधोपुर क्षेत्र हर्षित एवं प्रमुदित है। तप और दान के विशिष्ट पर्व अक्षय तृतीया पर

आचार्यप्रवर प्रभृति संत-सतीवृन्द के मुखारविन्द से तप और दान का माहात्म्य श्रवण कर तप-साधकों के साथ अनेक श्रद्धालुजन नवीन व्रत-प्रत्याख्यान अंगीकार करेंगे। सभी एकान्तर तप-साधक अपने नाम एवं अपने साथ आने वाले सदस्यों की संख्या का उल्लेख कर पूर्ण जानकारी एवं अपने पधारने की सूचना संघ के प्रधान कार्यालय घोड़ों के चौक, जोधपुर ई-मेल absjrhssangh@yahoo.com फोन-0291-2636763/ 2641445, श्री मानेन्द्र ओस्तवाल-अतिरिक्त महामंत्री, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ-9414132521 एवं सवाईमाधोपुर के सम्पर्क सूत्र पर भिजवाने का श्रम करावें। **सम्पर्क सूत्र**-1. श्री राधेश्याम जी जैन गोटावाले-94618-63233, 2. श्री गणपतराज जी जैन-94603-17013, 3. श्री पारसचन्द जी जैन-94130-23430, 4. श्री कुशलचन्द जी गोटावाला, आर.पी. ज्वैलर्स, टोंक रोड़, बजरिया-सवाईमाधोपुर (राज.) फोनः-94604-41570, 5. श्री रामदयाल उम्मेदचन्द जैन सर्राफ, लड्डा पेट्रोल पम्प के सामने, बजरिया, सवाईमाधोपुर-322001 (राज.)-9414404042, 9414030572

सवाईमाधोपुर एवं चेन्नई में 15 मई को तीन दीक्षाएँ

आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के मुखारविन्द से 15 मई को मुमुक्षु प्रभा एवं मुमुक्षु अन्तिमा जैन की जैन भागवती दीक्षा सवाईमाधोपुर में तथा इसी दिन मुमुक्षु शीतल आंचलिया की जैन भागवती दीक्षा चेन्नई में व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. के मुखारविन्द से सम्पन्न होना सुनिश्चित हुआ है। मुमुक्षु बहनों का परिचय एवं कार्यक्रम की सूची इसी जिनवाणी अंक के मध्य में स्थित आमन्त्रण-पत्रिका में दी गई है। सवाईमाधोपुर में दीक्षा-दिवस पर अगता घोषित किया गया है। **सवाईमाधोपुर सम्पर्क सूत्रः**- अक्षय तृतीया के समाचार में ऊपर दिए गए हैं। **आवास-व्यवस्था प्रभारीः**- श्री मुकेश जी जैन-पान वाले-9414204721, श्री मोहन जी सर्राफ-9414404042, श्री मनोज जी जैन-9414030583

चेन्नई के सम्पर्क सूत्रः- श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, 24-25 बेसिन वाटर वर्क्स स्ट्रीट, साहुकार पेट, चेन्नई-600079 (तमिलनाडु), 1. श्री गौतमराज जी सुराणा-संयोजक, दीक्षा आयोजन समिति-9940558888, 2. श्री महेन्द्रकुमार जी कांकरिया, अध्यक्ष, श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, चेन्नई-9444051313, 3. श्री सुधीर कुमार सुराणा, मंत्री- श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, चेन्नई-9150640000, 4. श्री गौतमचंद जी बाघमार, क्षेत्रीय प्रधान, तमिलनाडु सम्भाग-9940083434

उपाध्यायप्रवर के 79 वें जन्म-दिवस पर गुणानुवाद

मेड़तासिटी (राज.)- रत्न संघ के ज्येष्ठ संत रत्न, आत्मार्थी-प्रबल पुरुषार्थी, परम श्रद्धेय पूज्य उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. का "79 वां पावन जन्म-दिवस" अपार श्रद्धा-भक्ति, धर्म-आराधना व साधना के साथ त्याग-तप पूर्वक 'वीर भवन' के प्रांगण में माघ कृष्णा चतुर्थी 31 जनवरी 2013 को सोत्साह मनाया गया।

सर्वप्रथम श्री जितेन्द्र मुनि जी म.सा. ने आत्म-वैभव, गुण-वैभव, संयम-वैभव से जीवंत आचारनिष्ठ श्रद्धेय उपाध्याय श्री मानचन्द्र जी म.सा. के जीवन की महिमा-गरिमा का बखूबी बखान किया। सेवा सन्निधि में विराजित महासतीद्वय ने उपाध्यायप्रवर के जीवन को आचारांग व सूत्रकृतांग के वचनों पर घटित करते हुए मुक्ति की मौज में रहने वाला 'संत रत्न' बताया। प्रखर व्याख्यात्री तत्त्व चिन्तिका महासती श्री रतनकंवर जी म.सा. ने कहा उपाध्यायश्री का त्याग-वैराग्य पूर्ण जीवन सूर्य की भांति चमक रहा है। आज 79 वाँ पावन जन्म-दिवस बड़ा ही मंगलकारी है।

भजनानंदी श्रद्धेय श्री दर्शनमुनि जी म.सा. ने अपने उद्‌गार व्यक्त करते हुए कहा कि उपाध्यायश्री बड़े सरल, सहज संत हैं। आपकी कृपादृष्टि को श्रद्धालुगण अपलक नज़र से निहारते हुए निहाल हो जाते है। आत्म-चिंतन में रत रहने वाले, सतत स्वाध्यायी श्रद्धेय श्री लोकचन्द्रमुनि जी म.सा. ने बड़े विनम्र भावों से 'णमोत्थुणं' के माध्यम से पूज्य उपाध्यायश्री के जीवन की झांकी प्रस्तुत की। सजगता के साथ पुरुषार्थी स्वयं को बनना पड़ता है। विराजित महासती मण्डल द्वारा गुरु गुण गीतिका प्रस्तुत की गई।

मधुर व्याख्यानी कविवर्य श्रद्धेय श्री गौतममुनि जी म.सा. ने सुन्दर भाव गीतिका से अपने उद्‌गार प्रकट करते हुए "मान निर्ग्रन्थ" की महिमा बताते हुए, उपाध्यायश्री को संत ही नहीं महासंत कहा। उपाध्यायश्री की जीवन झांकी प्रस्तुत करते हुए मुनिश्री ने कहा कि इनके जीवन में नाम की भूख नहीं है, यहाँ सदा सरलता झलकती है, आपकी मुस्कान भी बड़ी निर्दोष है। ऐसे श्रद्धेय को पाकर, भला, कौन श्रद्धालु नहीं होगा।

उपाध्यायश्री मानचन्द्र जी म.सा. ने इस अवसर पर अपने संक्षिप्त मार्मिक उद्‌बोधन में कहा कि दिल्ली का वर्षावास आज भी याद है, क्योंकि "गौतम" जैसे संत मेरे साथ थे। संतों की शालीनता, सादगी व सहजता से यह जिनशासन देदीप्यमान होता है। पूज्य आचार्य भगवंत का दिया हुआ संबल, आज भी मेरी साधना में काम आता है। आज की गई "गुणगाथा" को मैं आचार्य प्रवर को समर्पित करता हूँ।

अनेक वक्ताओं की शृंखला में स्थानीय "महिला मण्डल" ने गुरु गुण गीतिका

प्रस्तुत की। कोसाना-चेन्नई निवासी गुरु भक्त युवाबंधु श्री ज्ञानचन्द जी बाघमार ने उपाध्याय श्री मानचन्द्र जी म.सा. को सरलता की विभूति बताया। साथ ही साथ "कोसाना श्री संघ" की ओर से सन् 2013 के चातुर्मास की विनति को दोहराया। भोपालगढ़-बैंगलोर निवासी गुरुभक्त, स्वाध्यायी पत्रकार श्री गौतमचन्द जी ओस्तवाल ने अपने प्रभावी उद्गारों में पूज्य उपाध्यायश्री की महिमा को बड़ी ओजस्वी शैली में प्रस्तुत करते हुए कहा कि श्रद्धेय श्री मानचन्द्र जी म.सा. इस युग के सरलमना "भगवान तुल्य" महापुरुष हैं। पूज्य आचार्य श्री भूधर जी म.सा. की 'क्षमा', पूज्य प्रवर्तक श्री पन्नालाल जी म.सा. की 'स्वाध्याय प्रेरणा', युवाचार्य श्री मधुकरमुनि जी म.सा. की 'आगम विवेचना', श्रमण सूर्य मरुधर केसरी श्री मिश्रीमल जी म.सा. की 'निष्कपटता', आचार्य श्री जयमल जी म.सा. की 'भीष्म प्रतिज्ञा' एवं पूज्य आचार्य भगवंत श्री हस्तीमल जी म.सा. व पूज्य आचार्य श्री आनन्दऋषि जी म.सा. की 'सरलता-सजगता' आज भी उपाध्याय श्री मानचन्द्र जी म.सा. के जीवन में देखी जा सकती है।

श्रीमती बसन्ता जी सुराणा व महिलाओं ने प्रासंगिक गीत व उद्गार प्रकट किए। इस प्रसंग पर श्री गौतमराज जी सुराना (मेड़ता सिटी-चेन्नई निवासी) ने प्रवचन सभा का शानदार संचालन करते हुए "गुरु उपाध्याय श्री मान" महिमा का बखान किया।

अन्त में श्रद्धेय श्री गौतममुनि जी म.सा. ने उपसंहार में कहा कि- जो सबको मान देते हैं एवं सबकी समुचित बात बड़ी सहजता से मान लेते हैं उन्हें कहते हैं-श्रद्धेय उपाध्याय श्री मानचन्द्र जी म.सा.। कार्यक्रम पूज्य उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. के द्वारा मंगलपाठ श्रवण कराने के साथ सानन्द सम्पन्न हुआ। मेड़तासिटी श्री संघ का आतिथ्य सत्कार व स्वधर्मी-भक्ति सराहनीय रही। *-गौतमराज सुराना*

युगद्रष्टा आचार्य श्री हस्ती की दीक्षा जयंती

बैंगलोर (कर्नाटक)- हुक्मगच्छाधिपति पूज्य आचार्य श्री विजयराज जी म.सा. के पावन सान्निध्य में माघ शुक्ला द्वितीया 12 फरवरी, 2013 को युगद्रष्टा पूज्य आचार्य भगवंत श्री 1008 श्री हस्तीमल जी म.सा. की 93 वीं दीक्षा जयंती सामूहिक सामायिक-साधना पूर्वक मनाई गई।

सर्वप्रथम श्री कौशलमुनि जी म.सा. ने अपने संक्षिप्त उद्बोधन में आचार्य श्री हस्ती की महिमा का बखान किया। श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, बैंगलोर-कर्नाटक के सहमंत्री श्री गौतमचन्द जी ओस्तवाल ने अपने वक्तव्य में आचार्य श्री हस्ती के बहुआयामी व्यक्तित्व पर अनेक संस्मरणों के साथ ओजस्वी भाषा में प्रकाश डाला। विदुषी महासती श्री

वैभवश्रीजी म.सा. ने अपने प्रभावी उद्बोधन में कहा कि आचार्य दीपक के समान होते हैं और जिनशासन को निरन्तर प्रकाशमान करते रहते हैं।

पूज्य आचार्य श्री विजयराज जी म.सा. ने अपने मंगल उद्बोधन में कहा कि आज का दिन महापुरुषों को समर्पित स्मृति का दिन है। आज आचार्य श्री हस्ती का 93 वां दीक्षा जयंती दिवस है। महापुरुष आते हैं व चले जाते हैं उनकी प्रभावी पावन स्मृतियाँ सदैव याद रहती हैं। अपने संकल्प, साधना, संयम के प्रति पूर्ण समर्पित संत ही महापुरुष कहलाते हैं। मैंने स्वयं साक्षात् उनके दर्शन गुरुदेव आचार्य श्री नानेश के चरणों में रहते हुए किए हैं, उनकी तेजस्वी छवि आज भी मेरी आँखों के सामने परिलक्षित हो रही है। भोपालगढ़ की क्रांतिकारी भूमि पर आचार्य श्री हस्ती के मुझे प्रथम दर्शन हुए। दोनों आचार्यों का महामिलन व मैत्री सम्बन्ध का दृश्य आज भी स्मरण है। वे संगठन, साधना व अनुशासन के हिमायती थे। मुझे आज भी आचार्य श्री हस्ती के बताए तीन सूत्र याद हैं- (1) तीर्थंकर भगवान के वचनों में कभी शंका नहीं करना, (2) तुम गुणानुरागी बनो, (3) सम्प्रदाय के मोह में मत डूबना। सम्प्रदाय तिराने वाली नहीं, मात्र धर्म तिराने वाला है। प्रवचन सभा का संचालन श्री महावीर जी गुलेच्छा ने किया। *-ओमप्रकाश लुणावत, बैंगलोर*

114 दम्पती बने ब्रह्मचारी

व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभा जी म.सा. की प्रेरणा से आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. एवं उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. की दीक्षा अर्द्धशताब्दी के उपलक्ष्य में पल्लीवाल क्षेत्र में 114 दम्पतियों ने आजीवन शीलव्रत अंगीकार किया है, जो एक विशेष उपलब्धि है। नामावली का प्रकाशन बाद में किया जाएगा।

सम्पूर्ण भारत से प्रवेशार्थ आवेदन-पत्र आमन्त्रित

आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान में अध्ययन की उत्कृष्ट सुविधा

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर 1008 श्री हस्तीमल जी म.सा. की प्रबल प्रेरणा से सन् 1973 में संस्थापित एवं गजेन्द्र चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा संचालित आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान, जयपुर में आध्यात्मिक एवं नैतिक शिक्षा के साथ विद्यालय, महाविद्यालय, प्रोफेशनल एवं प्रशासनिक स्तर का उच्च शिक्षण प्राप्त करने की सुविधा है। सुविधा सम्पन्न इस संस्थान में सम्पूर्ण भारतवर्ष के जैन विद्यार्थियों से वर्ष 2013 में प्रवेश हेतु आवेदन आमंत्रित हैं। विगत 38 वर्षों में यहाँ से अध्ययन कर लगभग 110 विद्यार्थी वर्तमान में प्रशासनिक, राजकीय एवं व्यावसायिक क्षेत्रों में सेवारत हैं।

संस्थान में प्रवेश हेतु प्रक्रिया-

1. विद्यालय अथवा महाविद्यालय के सभी संकाय में अध्ययनरत विद्यार्थियों को प्रवेश

दिये जायेंगे। न्यूनतम दसवीं कक्षा उत्तीर्ण होना आवश्यक है।

2. संस्थान में प्रवेश हेतु विद्यार्थी का शैक्षणिक स्तर पर 70 प्रतिशत या उससे अधिक अंक होना प्राथमिकता में रहेगा।
3. बालकों में नैतिक आचरण स्वच्छ पाये जाने पर ही उन्हें प्रवेश दिया जाना संभव है।
4. प्राप्त आवेदनों में से शैक्षणिक व आध्यात्मिक योग्यतानुसार छात्रों का चयन किया जाएगा।
5. संस्थान में चयन के लिए शिविर आयोजित किया जायेगा, जिसकी सूचना दूरभाष के माध्यम से दी जायेगी।

नियम एवं सुविधाएँ-

1. संस्थान में अध्ययनानुकूल उचित आवास एवं भोजन की व्यवस्था।
2. विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु अँग्रेजी एवं विविध विषयों पर विशेष आमंत्रित महानुभावों द्वारा अभिप्रेरणा एवं कार्यशाला का आयोजन।
3. सुसज्जित पुस्तकालय एवं कम्प्यूटर शिक्षण की उत्तम व्यवस्था।
4. विद्यार्थियों को स्कूल एवं महाविद्यालय के अध्ययन के साथ संस्थान द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम का अध्ययन अनिवार्य है।
5. संस्थान द्वारा निर्धारित अन्य नियमों एवं उपनियमों का पालन अनिवार्य।

प्रवेश आवेदन हेतु सम्पर्क सूत्रः- दिलीप जैन, अधिष्ठाता, *आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान, ए-9, महावीर उद्यान पथ, बजाज नगर, जयपुर-302015 (राज.), दूरभाषः- 0141-2710946, 094614-56489, ईमेलः-* ahassansthan@gmail.com

क्षेत्रीय स्वाध्यायी-संगोष्ठियों का आयोजन

कुशतला- परम पूज्य आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. के 103 वें जन्म-दिवस पर विदुषी महासती श्री सौभाग्यवती म.सा. आदि ठाणा 8 के सान्निध्य में प्रातः 8 बजे क्षेत्रीय स्वाध्यायी संगोष्ठी आयोजित की गई, जिसमें 'स्वाध्याय महिमा-गान' के साथ 'स्वाध्याय एवं स्वाध्यायी की महत्ता' विषय पर विद्वान् स्वाध्यायियों ने प्रकाश डाला, जिसमें निकटवर्ती क्षेत्रों के 70 स्वाध्यायियों ने भाग लिया।

सवाईमाधोपुर- विदुषी महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा. के सान्निध्य में पुनः फरवरी 2013 को प्रातः 8.30 से 11 बजे तक क्षेत्रीय स्वाध्यायी संगोष्ठी आयोजित की गई। प्रो. रतनलाल जी जैन की अध्यक्षता एवं वरिष्ठ स्वाध्यायी श्री माणकचन्द जी जैन के मुख्य आतिथ्य में आयोजित संगोष्ठी 'सामायिक की महत्ता एवं शुद्ध स्वरूप' विषय पर केन्द्रित

रही। गोष्ठी का संचालन श्री धर्मेन्द्र कुमार जैन, व्याख्याता एवं शाखा संयोजक द्वारा किया गया।

द्वि-दिवसीय स्वाध्यायी शिविर सम्पन्न

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर तथा चौथ का बरवाड़ा संघ के संयुक्त तत्त्वावधान में परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के पावन सान्निध्य में 9-10 मार्च 2013 को द्वि-दिवसीय स्वाध्यायी शिविर का आयोजन चौथ का बरवाड़ा में किया गया। शिविर में बजरिया, चौथ का बरवाड़ा, आदर्श नगर, जयपुर, कुश्तला, चकेरी, सवाईमाधोपुर, आलनपुर, अलीगढ, आवासन मण्डल आदि स्थानों के स्वाध्यायियों ने भाग लिया। शिविर में आचार्यप्रवर एवं संत-मण्डल ने स्वाध्यायियों को आत्मबोध कराते हुए विभिन्न विषयों पर सारगर्भित विवेचन प्रस्तुत किया। चौथ का बरवाड़ा संघ ने आतिथ्य सेवा का लाभ लिया। *-धर्मेन्द्रकुमार जैन, संयोजक, शाखा पोरवाल क्षेत्र*

द्वि-दिवसीय स्वाध्यायी-शिक्षक संगोष्ठी सम्पन्न

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर तथा चौरू संघ के संयुक्त तत्त्वावधान में परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के पावन सान्निध्य में 22-23 फरवरी 2013 को स्वाध्यायी एवं शिक्षकों की गुणवत्ता में अभिवृद्धि हेतु संगोष्ठी का आयोजन चौरू ग्राम में किया गया। संगोष्ठी में तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. ने अपनी सहज, सरल शैली में 'जागरणा का थोकड़े' के माध्यम से पृच्छा शैली में सभी स्वाध्यायियों की ज्ञान-अभिवृद्धि की। गोष्ठी में अलीगढ, चौथ का बरवाडा, आलनपुर, सवाईमाधोपुर, कुश्तला, बजरिया, चौरू, जयपुर, सांगानेर, आवासन मण्डल, देई, इन्द्रगढ, सुमेरगंजमण्डी आदि स्थानों से स्वाध्यायियों ने भाग लिया।

-धर्मेन्द्रकुमार जैन, संयोजक, शाखा पोरवाल केन्द्र

सूरत में 28 अप्रेल से नैतिक एवं धार्मिक शिक्षण शिविर

रत्नसंघ के अष्टम पट्टधर आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी महाराज एवं उपाध्यायप्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी महाराज के 50 वें दीक्षा अर्द्धशती वर्ष के उपलक्ष्य में 'श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ' एवं 'श्री जैन रत्न युवक परिषद्' सूरत व 'सगरामपुरा 6 कोटी संघ' तथा 'श्री दरियापुरी आठ कोठी संघ' के संयुक्त तत्त्वावधान में सूरत में विशाल नैतिक संस्कार व धार्मिक शिक्षण शिविर का आयोजन 28 अप्रेल से 5 मई 2013 को हो रहा है। उम्र सीमा 12 से 25 वर्ष, समय सुबह 7.30 से दोपहर 1.00 बजे तक है। स्थलः- सगरामपुरा 6 कोटी व दरियापुरी 8 कोठी उपाश्रय, बैंक ऑफ बड़ौदा के ऊपर, नवसारी बाजार पुतली, सगरामपुरा- सूरत। शिविर में खंभात सम्प्रदाय के आचार्य कान्तिऋषि जी म.सा. के आजीवन अंतेवासी जितेन्द्रमुनि जी म.सा. व उचितऋषि जी म.सा. तथा खंभात सम्प्रदाय

साध्वी प्रमुखा श्री वसुबाई महासती जी आदि ठाणा का सान्निध्य प्राप्त होगा।

- राजीव नाहर, शिविर प्रभारी, 9375165765

डॉ. डी.एस.कोठारी के नाम से पुरस्कार की घोषणा

विश्वविख्यात वैज्ञानिक डॉ. दौलतसिंह कोठारी की स्मृति में राजस्थान सरकार की ओर से प्रतिवर्ष 5 लाख रुपये का 'विज्ञान श्रेष्ठता पुरस्कार' प्रदान किया जायेगा। राजस्थान बजट 2013-2014 में मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने यह घोषणा की। पद्मविभूषण जैन श्रावक डॉ. कोठारी अहिंसा और विज्ञान के समन्वय पर बहुत बल देते थे।

जलगांव में वीतराग ध्यान-शिविर सम्पन्न

9 से 20 मार्च तक जलगाँव में आयोजित वीतराग ध्यान शिविर में 62 शिविरार्थियों ने भाग लिया। शिविर की विशेष उपलब्धि यह रही कि श्रीमान रतनलाल जी बाफना एवं श्रीमती नयनताराजी बाफना पूर्णकाल तक शिविर में उपस्थित रहे। उन्होंने कहा कि इस शिविर में आने के बाद ही हमें इसकी अत्यन्त आवश्यकता समझ में आयी। इस शिविर की उपयोगिता यदि पहले समझ में आती तो और 50 लोगों को यहाँ शिविर में आने की प्रेरणा करते। यह जीवन परिवर्तन की साधना है।

पूज्य श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. द्वारा प्रशिक्षित सुश्री नेहा जी चोरडिया, जलगांव ने सैद्धान्तिक विश्लेषण का तथा दिशा-निर्देशन का कार्य किया तथा साधक रत्न श्री नरेन्द्र जी सुराणा, बीकानेर ने परीक्षण का तथा कभी-कभी दिशा-निर्देश का कार्य संभाला।

शिविर में श्रीमान आर.सी.बाफना का सभी प्रकार की व्यवस्थाओं के लिए सहयोग प्राप्त हुआ। साधकों की सेवा में श्री दिनेश जी भंसाली-बैंगलोर, सौ. सीमाजी भंसाली-बैंगलोर, मुमुक्षु सुश्री शीतल जी, श्री निपुण जी डागा-मुम्बई का योगदान सराहनीय रहा। साधकों को प्रेरणा करने में सौ. मंगला चोरडिया-जलगांव का भी सहयोग प्राप्त हुआ।

वीतराग ध्यान साधना शिविर की संयोजिका श्रीमती शान्ता जी मोदी स्वास्थ्य में असमाधि होते हुए भी शिविर में पधारीं तथा यथाशक्य शिविर की सफलता में योगदान दिया।

मेवाड़ क्षेत्र में प्रचार यात्रा सम्पन्न

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर द्वारा 01 से 05 मार्च 2013 तक मेवाड़ क्षेत्र में प्रचार कार्यक्रम आयोजित किया गया। उक्त कार्यक्रम में स्वाध्याय संघ के सचिव श्री राजेश जी भण्डारी-जोधपुर, मेवाड़ शाखा के परामर्शदाता तथा वरिष्ठ साधक स्वाध्यायी श्री फूलचन्द जी मेहता-उदयपुर, अ.भा. श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल की महासचिव

श्रीमती बीना जी मेहता, मेवाड़ शाखा के संयोजक श्री कन्हैयालाल जी जैन-भीलवाड़ा, आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड के प्रचारक श्री सुरेश जी हींगड़-पहुँना तथा स्वाध्याय संघ के कार्यालय सहायक श्री धीरज जी डोसी-जोधपुर की महनीय सेवाएं प्राप्त हुईं। उक्त कार्यक्रम मेवाड क्षेत्र के आजादनगर, भीलवाड़ा, चान्दरास, सहाड़ा, दरीबामाइन्स, जूणदा, खांखला, पहुंना, छोटा भटवाड़ा, सुरपुर, मण्डपिया, नवाणिया, नीमच, प्रतापगढ, मोरवनबांध, सिंगोली, बेगूं, रेलमगरा तथा अरनोदा में आयोजित हुआ। प्रचार कार्यक्रम में पर्युषण पर्वाराधना में स्वाध्यायी बुलाने की प्रेरणा की गई, जिसके फलस्वरूप 8 मांगें प्राप्त हुईं। नये स्वाध्यायी बनने की प्रेरणा से 4 महानुभावों ने स्वाध्यायी सदस्यता ग्रहण की। सभी स्थानों पर बालक-बालिकाओं हेतु रविवारीय संस्कार शिविरों की प्रेरणा की गई तथा चल रहे शिविरों की समीक्षा की गई। एक स्थान पर श्राविका मण्डल तथा एक स्थान पर युवक परिषद् की भी स्थापना की गई। शिक्षण बोर्ड की आगामी परीक्षा की जानकारी देते हुए नये केन्द्र प्रारम्भ किए गए तथा लगभग 63 फार्म भरवाए गए। जिनवाणी के आजीवन सदस्य भी बनाए गए। प्रचार के दौरान आजाद नगर, भीलवाड़ा में व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा के दर्शन-वन्दन का लाभ भी प्राप्त हुआ।

-कुशलचन्द जैन गोटेवाला, संयोजक

राष्ट्रीय निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन

परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. का 75वाँ जन्म-दिवस 03 अप्रेल 2013 को उपस्थित हो रहा है। इस अवसर पर स्वाध्याय संघ द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है। निबन्ध का विषय **"व्यसनमुक्ति, फैशन निवारण एवं रात्रिभोजन-त्याग : सुखी जीवन का आधार"** रखा गया है। उक्त निबन्ध मौलिक, तथ्यात्मक तथा 1000 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए। इस प्रतियोगिता में सभी आयु वर्ग के बालक, बालिका, श्रावक एवं श्राविकाएं भाग ले सकते हैं। प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय स्थान प्राप्त करने वालों को क्रमशः 1100/-, 500/- एवं 250/- का नकद पुरस्कार तथा 100/- के 10 सान्त्वना पुरस्कार प्रदान किये जायेंगे। निबन्ध भिजवाने की अन्तिम तिथि 13 मई (अक्षय तृतीया) निर्धारित है। निबन्ध कार्यालय के पते पर भिजवाएं- **राजेश भण्डारी**, सचिव-स्वाध्याय संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.), फोन नं. 0291-2624891, 9460081112

जोधपुर में ग्रीष्मकालीन शिक्षण शिविर 26 मई से

श्री जैन रत्न युवक परिषद्, जोधपुर द्वारा बालक-बालिकाओं में संस्कारों के बीजारोपण हेतु विगत 19 वर्षों से ग्रीष्मकाल में नैतिक एवं धार्मिक शिक्षण शिविर आयोजित किया जाता है। इस वर्ष भी यह शिविर 26 मई से 9 जून तक आयोजित किया

जायेगा। शिविर में लिखित परीक्षा देने वाले शिविरार्थियों को ही प्रवेश दिया जायेगा।

-विनोद मेहता, अध्यक्ष

मांसाहार से बीमारी एवं ग्लोबल वार्मिंग

नई दिल्ली- 20 मार्च 2013 को 'ग्लोबल मीट आउट डे' पर दिल्ली में 'एनिमल्स राइट्स मार्च' निकाला गया। जंतर मंतर पर निकाले गए मार्च में 20 से अधिक स्वैच्छिक संस्थाओं ने भाग लिया तथा इसके समर्थन में भारी संख्या में विद्यार्थी एवं बुद्धिजीवी सम्मिलित हुए। पशु अधिकार यात्रा में यह बात उभरकर आयी कि मांसाहार (नॉनवेज) खाने से बीमारी अधिक आती है। राष्ट्रीय मांस खपत में यदि एक प्रतिशत भी कमी हो तो हर साल करोड़ों जानवरों की जान बचाई जा सकती है। यू एन फूड एण्ड एग्रीकल्चर ऑर्गेनाइजेशन के मुताबिक 18 प्रतिशत ग्लोबल वार्मिंग केवल मांस-उत्पादन की वज़ह से होती है। नॉनवेज से बचें तो ग्लोबल वार्मिंग को कम किया जा सकता है। शाकाहार की तुलना में मांसोत्पादन में दस गुना तक अधिक पानी की आवश्यकता होती है।

लन्दन विश्वविद्यालय में 'जैन न्याय' पर संगोष्ठी

डॉ. धर्मचन्द जैन, जोधपुर द्वारा भी व्याख्यान

लन्दन विश्वविद्यालय, लन्दन के 'स्कूल ऑफ ओरियण्टल एण्ड अफ्रीकन स्टडीज' के अन्तर्गत संचालित सेण्टर ऑफ जैन स्टडीज द्वारा 21-22 मार्च 2013 को जैन लॉजिक (जैन न्याय) विषय पर एक कार्यशाला (संगोष्ठी) का आयोजन किया गया। इस सेण्टर द्वारा यह 15 वीं कार्यशाला आयोजित थी, जिसमें 21 मार्च को सायंकाल 6 बजे 13 वीं वार्षिक व्याख्यान माला में "Jain Logic and Epistemology. Is This How it All Began" विषय पर पौलेण्ड के प्रोफेसर पियोत्र बलसेरोविज़ ने सम्बोधित किया। ब्रुनेई गैलेरी में आयोजित इस कार्यक्रम में विभिन्न देशों से उपस्थित विद्वानों एवं लन्दन के लगभग 150 श्रोताओं ने भाग लिया। 22 मार्च को प्रातः 9 बजे से सायंकाल 6 बजे तक चले 5 सत्रों में निम्नांकित विद्वानों ने उनके समक्ष अंकित विषयों पर शोध-पत्र प्रस्तुत किए-

First Session : Jain Perspectivism (9.15 to 10.45)

Johannes Bronkhorst (Switzerland)	Anekantavada, the Central Philosophy of Ajivikism?
Masahiro Ueda (Japan)	Niksepa in Akalanka's Works
Peter Flugel (London)	Prolegomena to a Phenomenology of Jaina Time-Consciousness

Second Session : Jain theory of pramana (11.15 to 12.45)

Dharmchand Jain (Jodhpur-India)	An Appraisal of Jaina Epistemology and Logic
Olle Qvarnstrom (Sweden)	Haribhadrasuri on Samkhya : Jain Criticism of Samkhya Epistemoloty

Marie-Helene Gorisse (Belgium)	Jain Theory of Inference in the Pariksamukham

Third Session : Jain theory of nayas (14.00 to 15.00)

Anne Clavel (France)	Arthanayas and Sabdanayas : A Structural Analysis
Laurent Keiff (France)	Jaina's naya-vada as Presupposition Analysis

Fourth Session : Jain theory of saptabhangi (15.30 to 16.30)

Fujinaga Shin Miyakonojo (Japan)	Origin and value of Saptabhangi
Fabien Schang (France)	A One-valued Logic for Non-one-Sidedness

Fifth Session : Other lights on Jain epistemology (16.40 to 18.10)

Jayendra Soni (Austria)	Prabhacandra's Status in and Contribution to the History of Jaina Philosophical Speculation
Himal Trikha (Austria)	Kathancit and other Key Terms of Jain Perspectivism in Vidyanandin's Satyasasanapariksa
Andrew More (USA)	The Logic of Legitimation of Jain Lay Life in Suyagadamga 2.2 and the Uvavaiya

सभी शोध-पत्रों की प्रस्तुति के अनन्तर चर्चा भी हुई। यह उल्लेखनीय है कि फ्रांस, बेल्जियम आदि देशों से कतिपय विद्वान् एवं शोधार्थी इस संगोष्ठी के शोधपत्रों को सुनने के लिए उपस्थित हुए। संगोष्ठी के आयोजन में घेण्ट विश्वविद्यालय एवं एर्फ़्रट विश्वविद्यालय से भी सहयोग प्राप्त हुआ। संगोष्ठी के अवसर पर 'Jain Studies' न्यूज लेटर का वितरण किया गया, जिसमें वर्षभर में विभिन्न देशों में सम्पन्न संगोष्ठियों एवं शोधकार्यों की उपयोगी सूचनाएँ विद्यमान हैं।

संक्षिप्त-समाचार

भवानी मण्डी- व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 10 उज्जैन चातुर्मास सम्पन्न कर मार्गवर्ती ग्रामों को उपकृत करते हुए 23 फरवरी, 2013 को भवानी मण्डी पधारे। यहाँ आपके सान्निध्य में चार दिन अच्छा धर्म आराधन हुआ। वहाँ पूर्व से ही विराजित महासती श्री अरविन्द कुंवर जी म.सा. आदि ठाणा से पारस्परिक सुखसाता के पृच्छा की चर्चा हुई।

उदयपुर- श्रमणसंघीया उपप्रवर्तिनी महासती श्री चारित्रप्रभा की शिष्या साध्वी महिमाश्री को मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर द्वारा पीएच्.डी. की उपाधि प्रदान की गई है। उन्होंने डॉ. एच.सी.जैन के निर्देशन में 'अंग आगम की प्राकृत कथाएँ : एक अनुशीलन' विषय पर अपना शोधकार्य पूर्ण किया है।

गुलाबपुरा- प्रतिभाशाली युवाओं, किशोरों एवं बालकों के लिए ''अ.भा.श्री प्राज्ञ जैन महिला समिति, प्रधान कार्यालय, बोहरा मेनसन, बापूनगर, अजमेर'' ने एक छात्रवृत्ति योजना प्रारम्भ की है, जिसका कोई भी जैन छात्र लाभ उठा सकता है। शिक्षा के लिए सहयोग प्राप्त करने के इच्छुक विद्यार्थियों को श्री नानक जैन छात्रालय, गुलाबपुरा में रहकर स्थानीय या निकटवर्ती विद्यालयों/महाविद्यालयों में अध्ययन करना होगा। उनके भोजन-आवास, विद्यालय शुल्क आदि सभी प्रकार का खर्चा यह संस्था वहन करेगी। उनके लिए सारी व्यवस्थाएँ निःशुल्क होंगी। शिक्षार्थी छात्रालय में रहकर प्रतिदिन स्वाध्याय करते हुए योग्य विद्वानों के मार्ग-दर्शन में धार्मिक अध्ययन कर सकेंगे। प्रवेश के लिए संपर्क करें-श्रीमती पारसमणि खींचा-9413344422, श्री रतनलाल जैन-08955482090

रायचूर- मुमुक्षु सुश्री अक्षिता की भागवती दीक्षा 23 फरवरी, 2013 को उपप्रवर्तक श्री नरेशमुनि जी म.सा. के मुखारविन्द से सम्पन्न हुई। आप डॉ. प्रतिभा श्री जी म.सा. की शिष्या बनीं।

बैंगलोर- श्री जैन संघ राज राजेश्वरी नगर-बैंगलोर के तत्त्वावधान में हुक्मगच्छाधिपति, आचार्य श्री विजयराज जी म.सा. का '41 वाँ दीक्षा जयंती दिवस' 23 फरवरी, 2013 को तीन-तीन सामायिक की सामूहिक साधना के साथ मनाया गया।

चेन्नई- श्री जैन रत्न युवक परिषद्, चेन्नई के तत्त्वावधान में 3 मार्च, 2013 को आचार्यप्रवर श्री रामलाल जी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी महासती श्री हितैषी श्रीजी म.सा. के सान्निध्य में रविवारीय मासिक सामूहिक सामायिक-स्वाध्याय साधना का आयोजन स्वाध्याय भवन के प्रांगण में रखा गया। महासतियांजी म.सा. ने फरमाया कि आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. ने जन-जन को सामायिक स्वाध्याय से जोड़ा एवं आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. भी जन-जन को इसकी विशेष प्रेरणा कर रहे हैं, उसी का परिणाम है कि आज कार्यक्रम में करीब 250 से 300 श्रावक-श्राविकाओं ने भाग लिया।

नदबई- 21 फरवरी 2013 को ज्ञान रत्न सीनियर सैकण्डरी विद्यालय में पल्लीवाल क्षेत्रीय सम्मेलन अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् के अध्यक्ष श्री जितेन्द्र जी डागा की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। इस कार्यक्रम में खोह, खेरली, हरसाना, अलवर, मण्डावर, हिण्डौन सिटी, गंगापुर सिटी, महवा, दहरामोड, पहरसर आदि के युवा रत्न एवं विशेष आमंत्रित 125 सदस्यों ने भाग लिया। सम्मेलन में ग्रीष्मकालीन शिविरों के आयोजन एवं राष्ट्रीय कार्यक्रमों पर सार्थक चर्चा हुई।

चेन्नई एवं जयपुर- डॉ. दिलीप धींग सीईओ, आनन्दतीर्थ प्रतिष्ठान के गीतों और कविताओं की सीडी 'संस्कार सरिता' का विमोचन 26 मार्च, 2013 को आशीषमुनि के सान्निध्य में राजस्थान-रत्न मोहनलाल चोरड़िया ने किया। सी.डी. प्राप्ति हेतु सम्पर्क सूत्र-

श्री माणकचन्द कोटेचा (9840061542) इसी प्रकार श्री पदमचन्द गाँधी, जयपुर के द्वारा विभिन्न गेय भजनों की सी.डी. तैयार की गई जो वैराग्य, भक्ति आदि भावों से पूरित है। सी.डी. प्राप्ति हेतु सम्पर्क सूत्रः- पदमचन्द गाँधी (9414967294)

दिल्ली- भोगीलाल लहेरचन्द इंस्टीट्यूट ऑफ इण्डोलॉजी द्वारा आई.सी.पी.आर के सौजन्य से 19 से 30 अप्रेल 2013 तक दस दिवसीय जैन न्याय अध्ययनशाला का आयोजन किया जा रहा है। इस कार्यशाला में प्रसिद्ध विद्वानों द्वारा स्याद्वादरत्नाकर और अष्टसहस्री जैसे दुर्बोध ग्रन्थों का अध्ययन करवाया जाएगा। प्रवेश के इच्छुक अपना परिचय-विवरण (जन्मदिन, पता, टेलीफोन, ईमेल, शैक्षणिक योग्यता, अध्यापन अनुभव, प्रकाशन आदि सहित) भेजें। सम्पर्क सूत्र- प्रो. फूलचन्द जैन 'प्रेमी', फोनः 011-27202065, Email- director@blinstitute.org

अहमदाबाद- "हेवी मेटल और ट्यूब लिमिटेड" द्वारा 15 मार्च 2013 को सातवां रक्तदान शिविर आयोजित किया गया। शिविर में 51 लोगों ने रक्त दान किया।

बधाई

जलगाँव- चि. श्रेयांस सुपुत्र श्री पारसजी सांखला ने औरंगाबाद के एम.जी.एम. मेडिकल कॉलेज से एम.बी.बी.एस. डिग्री प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की।

बालोतरा- सुश्री रैना सुपुत्री श्रीमती अनिता-जितेन्द्र कुमार छाजेड़ एवं सुपौत्री श्रीमती कमला-मीठालाल जी 'मधुर' ने B.Tech. (ECE) प्रथम श्रेणी में I.P. University, दिल्ली से उत्तीर्ण कर M.B.A. (Marketing) M.D.I. गुडगांव से किया तथा MOGAE MEDIA में Sales & Marketing Manager पद पर नियुक्त हुईं।

जोधपुर- कुमारी विनिका भण्डारी सुपुत्री श्री महिपालचन्द जी भण्डारी सुपौत्री श्री वीरेन्द्रचन्द जी भण्डारी ने सी.ए. की परीक्षा एवं सी.एस. की परीक्षा प्रथम प्रयास में उत्तीर्ण करने के साथ सी.एस. में जोधपुर में तीसरा स्थान प्राप्त किया है। आप वीर भ्राता श्री भोपालचन्द जी सेठिया की दौहित्री हैं।

श्रद्धाञ्जलि

बालोतरा- श्रीमती निर्मलादेवी धर्मपत्नी श्री मुकेश कुमार जी वैदमुथा का स्वर्गवास 17 मार्च, 2013 को 29 वर्ष की अल्पायु में हो गया। एक सप्ताह पहले आपके दादा श्वसुर का 25 दिन के संथारे के साथ देवलोक गमन हो

गया था। श्रीमती निर्मलादेवी के पीहर पक्ष का गोलेछा परिवार रत्नसंघ के प्रति समर्पित है।

निझर- गुरुभक्त समर्पित सुश्रावक श्री भंवरलाल जी कांकरिया का 3 फरवरी, 2013 को

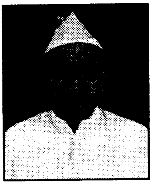

बेले की तपस्या के साथ सागारी संथारा पूर्वक देवलोकगमन हो गया। आपके नित्य दो सामायिक करने, थाली धोकर पीने आदि कई नियम थे। आपकी आचार्य श्री हस्ती, आचार्य श्री हीरा के प्रति अगाध श्रद्धा थी। आचार्य श्री से प्राप्त समता का उपदेश आपने जीवन में उतारने का प्रयास किया। उपाध्याय श्री मानचन्द्र जी म.सा. के निझर पधारने पर आपने सेवा का खूब लाभ लिया।

जयपुर- उपाध्याय श्री रवीन्द्र मुनि जी के साथ विराजित मुनि श्री अश्विनी कुमार जी का आकस्मिक देवलोकगमन 23 मार्च 2013 को जयपुर में हो गया। उनकी स्मृति में गुणानुवाद सभा आयोजित की गई।

सवाईमाधोपुर- धर्मपरायणा सुश्राविका सुश्री मंजू जी जैन पुत्री श्री चौथमल जी जैन (बैंक वाले) का स्वर्गगमन 14 फरवरी 2013 को हो गया। आप सरल स्वभावी, मिलनसार एवं विनयशीलता आदि गुणों से ओतप्रोत थीं।

खोह- धर्मनिष्ठ, उदारहृदय, सुश्रावक श्री मनोहरलाल जी जैन का 4 मार्च,2013 को 86 वर्ष की वय में संथारे सहित मरण हो गया। आपका धर्ममय जीवन सरलता, मधुरता, उदारता आदि विविध सद्गुणों से युक्त था।

चेन्नई- सुश्रावक श्री सोहनलाल जी दुगड़ (कुचेरा निवासी) का 25 फरवरी, 2013 को 73 वर्ष की आयु में स्वर्गवास हो गया। श्री भगवान महावीर जैन सेवा ट्रस्ट के विकास में आपकी मुख्य भूमिका रही और आपने तीस वर्षों तक इस संस्था में मंत्री के रूप में अविस्मरणीय सेवाएँ प्रदान कीं। आप तन-मन-धन से संघ-सेवा व जरूरतमंद संस्थाओं को दान-पुण्य करते थे। आपने अपने जीवनकाल में अनेक व्रत-नियम, अठाई तप आदि किए।

जयपुर- कर्मनिष्ठ, गुरुभक्त श्री शिव सिंह जी गलुण्डिया सुपुत्र श्री हिम्मत सिंह जी

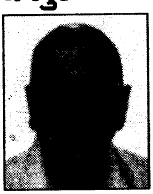

गलुण्डिया का 78 वर्ष की आयु में 02 मार्च 2013 को देहावसान हो गया। अपने जीवन काल में उन्होंने जरूरतमंद लोगों के लिए खूब दान दिया व सहयोग एवं सेवा प्रदान की। वे समाज के प्रति तन, मन धन से समर्पित रहे। मृत्यु से पूर्व वे अपनी देह को मेडिकल कॉलेज (NIMS) को दान कर गये।

जोधपुर- धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती सुमन जी मेहता धर्मपत्नी श्री लक्ष्मीकान्त जी मेहता

का स्वर्गगमन 02 मार्च, 2013 को बैंगलोर में हो गया। आप नियमित रूप से सामायिक स्वाध्याय की साधना करती थीं। आपका सम्पूर्ण परिवार श्रद्धानिष्ठ एवं धर्मनिष्ठ है। आपके सुपुत्र श्री कमल जी मेहता, बैंगलोर रत्नसंघ के सक्रिय कार्यकर्ता हैं।

मुम्बई- धर्मपरायणा सुश्राविका श्रीमती रेणुजी मेहता धर्मपत्नी श्री रमेश जी मेहता का 31 जनवरी, 2013 को देहावसान हो गया। आप शांत, शालीन, मिलनसार तथा उदार हृदयवाली श्राविका थीं। आपका जीवन धर्मयुक्त एवं श्रद्धायुक्त था। आप जोधपुर के संघ सेवी सुश्रावक स्व. श्री मनोहरमल जी गांग की सुपुत्री थीं।

जोधपुर- वात्सल्यमयी सुश्राविका श्रीमती शोभा जी डागा धर्मसहायिका श्री चन्द्रप्रकाश जी

डागा (सुपुत्री स्व. श्री विश्वम्भर नाथ जी मोदी एवं सुपौत्री पूर्व न्यायाधीश स्व. श्री इन्द्रनाथ सा मोदी) का 56 वर्ष की वय में 3 मार्च, 2013 की रात्रि में असामयिक चिरवियोग हो गया। आप मृदुभाषी, मिलनसार, परोपकारी, सेवाभावी एवं स्फटिक की भांति पारदर्शी उदारहृदया श्राविकारत्न थीं।

जयपुर- श्रीमती मूर्तिदेवी धर्मपत्नी श्री मूलचन्द जी जैन (जरखोदा वाले) का 94 वर्ष की वय में 31 दिसम्बर, 2012 को निधन हो गया।

वाघली- धर्मशीला स्वाध्यायी सुश्राविका सुनीता घेवरचन्द जी पारख का नवकार जपते-जपते स्वर्गवास हो गया। आपका जीवन सरल और सहज था।

नासिक- तपस्वी व्रतशीला स्वाध्यायी सुश्राविका विजया रिखबचन्द जी बाफना का स्वर्गवास हो गया। आपने कई तपस्याएँ कीं।

ब्यावर- स्नेहमयी, मृदुभाषी, सरलमना सुश्राविका श्रीमती कंचनकंवर मेहता धर्मपत्नी स्व. श्री मंगलचंद जी मेहता का स्वर्गवास 01 मार्च, 2013 को हो गया। आप नियमित तीन-चार सामायिक करती थीं। आप सन्त-सतियों की सेवा में सदैव अग्रणी रहती थीं।

नई दिल्ली- स्पष्ट वक्ता, कार्य के प्रति समर्पित एवं बुलन्द आवाज के धनी श्री भंवरलाल जी मुणोत का 13 फरवरी, 2013 को देवलोक गमन हो गया। आप सन् 1997 में श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कांफ्रेंस की राष्ट्रीय युवा शाखा के अध्यक्ष बने और कांफ्रेंस को एक नई दिशा प्रदान की। आपकी दूरदर्शिता के कारण ही जोन अध्यक्ष प्रणाली जैन कांफ्रेंस में प्रारम्भ हुई।

बारां- सुश्रावक श्री नरेन्द्र भाई पतीरा सुपुत्र स्व. श्री हीराभाई पतीरा का निधन 11 मार्च, 2013 को 68 वर्ष की आयु में हो गया। आप कर्तव्यनिष्ठ, दृढ़धर्मी, सेवाभावी श्रावक थे। संत-सतियों के दर्शन-वन्दन एवं उनकी विहार व्यवस्था में सदैव अग्रणी रहते थे।

उपर्युक्त दिवंगत आत्माओं के प्रति सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जिनवाणी-परिवार तथा अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके परिवारजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते हैं।

जोड़ लीजिए

श्री निर्मल कुमार जामड़

ज़िन्दगी को ज़िन्दगी से जोड़ लीजिये।
आदमी हो आदमी से, प्यार कीजिये।।1।।

चल रही हैं, आँधियाँ, ज़मी पे द्वेष की।
मिल के आँधियों के, मुँह मोड़ दीजिये।।2।।

लाज़ आज मिट रही, हमारे हाथ से।
किस कदर गिरे हैं हम, सोच कीजिये।।3।।

हो रहा है पानी यहाँ, मँहगा खून से।
पानी वालों, पानी का ना मोल कीजिये।।4।।

चींटियों को देखिये, और गौर कीजिये।
फिर नये समाज का निर्माण कीजिये।।5।।

कौन जाने किस घड़ी, बुलावा आयेगा।
आज वक्त है, सुकर्म कर लीजिये।।6।।

आने वाली पीढ़ियाँ, करें जिस नमन।
इस धरा महान् को पवित्र कीजिये।।7।।

-2/175, जवाहर नगर, जयपुर-302004 (राज.)

जिनवाणी के पाठकों से विनम्र अनुरोध

जिनवाणी हिन्दी मासिक के पाठकों से अनुरोध है कि यदि आपके यहाँ एक ही पते पर एक से अधिक जिनवाणी पत्रिका आ रही है और उनका वहाँ उपयोग/स्वाध्याय नहीं हो रहा हो तो आप इससे जिनवाणी कार्यालय को अवगत करावें, जिससे आपके यहाँ अनुपयोगी पत्रिका किसी अन्य पाठक के लिए उपलब्ध हो सके। **अनुरोधकर्ता-कैलाशमल दुगड-अध्यक्ष, विनयचन्द डागा-मंत्री**-*सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, दुकान नं. 182-183 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर (राज.)*

स्वप्निका : Busy Life में Easy धर्म

महान् साधक धर्मगुरुओं पूज्य श्री आचार्यप्रवर एवं उपाध्यायप्रवर के दीक्षा अर्द्धशती वर्ष को हमारा गौरवशाली रत्नसंघ विविध आयामों के साथ मना रहा है। इन आयोजनों में 'नमन मेहता' द्वारा लिखित ''स्वप्निका'' अनुमोदनीय है। इसमें:-

''वर्तमान में अर्थ से अधिक जीवन का तत्त्व है,
शिक्षा से अधिक संस्कारों का महत्त्व है,
विद्या से अधिक गुणों का प्रभुत्व है।''

चौदह स्वप्नों पर आधारित त्याग प्रत्याख्यान से परिपूर्ण यह पुस्तिका श्रावक-श्राविका के जीवन-निर्माण एवं कर्म-निर्जरा की हेतु है। **-श्रीमती पूर्णिमा लोढ़ा**

अध्यक्ष, अ.भा. श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल

छोटे-छोटे नियमों से होता जीवन में परिवर्तन

स्वप्निका का प्रकाशन हर व्यक्ति के जीवन में प्रकाश की किरणें प्रसारित करने वाला है। छोटे-छोटे नियम भी व्यक्ति के जीवन को एक नई दिशा दे सकते हैं। ऐसे कई छोटे-छोटे नियम स्वप्निका में दिये गये हैं, जिनका पालन कर मुझ जैसी कई अबोध बालिकाओं की आत्मा में परिवर्तन होगा। जीवन को एक नया मार्गदर्शन मिलेगा।

व्रतों का आचरण पर से हटकर निज की ओर ले जाने वाला है।
स्वप्न से हटाकर स्व की ओर ले जाने वाला है।
कल्पना से हटाकर कल्याण मार्ग पर चलाने वाला है।
प्रमत्त भावों से हटाकर अप्रमत्तता की ओर बढ़ाने वाला है।
सुप्त अवस्था से जाग्रत अवस्था में पहुँचाने वाला है।

विरक्ता-प्रभा जैन, अन्तिमा जैन

जय नानेश **जय रामेश**

दीक्षा अर्द्धशताब्दी वर्ष पर आयोजित स्वप्निका प्रतियोगिता हेतु 'स्वप्निका' पुस्तिका पाकर परम हर्ष एवं प्रमोद भाव उत्पन्न हुआ। यह प्रतियोगिता सही अर्थों में परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा. एवं परम श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. के चरण कमलों में बहुत ही श्रेष्ठ उपहार एवं व्रत-प्रत्याख्यान के सौरभमय पुण्य समर्पित करेगी।

13 मार्च 2013 *जेठमल चोरडिया, कवर्धा*

साभार-प्राप्ति-स्वीकार

4000/- मंडल के सत्साहित्य की आजीवन-सदस्यता हेतु प्रत्येक

755 श्री रजनीकांत चपलोत स्मृति जैन पुस्तकालय, प्रताप नगर, सांगानेर (राजस्थान)

500/- की सदस्यता शुल्क द्वारा गत माह जिनवाणी पत्रिका के 24 आजीवन सदस्य बने।

250/- की अर्द्धमूल्य योजना के अन्तर्गत श्री प्रसन्नचन्दजी, पुनवानचन्दजी, ओस्तवाल परिवार (भोपालगढ़-जोधपुर-मुम्बई-चेन्नई) के सौजन्य से 73 आजीवन सदस्य तथा श्री लाभचन्द जी कोठारी-जयपुर के सौजन्य से उनकी धर्मपत्नी श्रीमती किरणजी के सिद्धि तप के उपलक्ष्य में 12 आजीवन सदस्य बने हैं।

जिनवाणी हेतु साभार प्राप्त

5100/- श्रीमती मनोहरबाईजी जवाहरलालजी लूणिया (निमाज वाले), पल्लीपट, पूज्य आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा., उपाध्याय श्री मानचन्द्रजी म.सा. के दर्शन-वन्दन करने के उपलक्ष्य में।

5000/- श्री शान्तिलालजी लोढ़ा (नाड़सर वाले), बेंगलुरू, चि. विनीत का शुभविवाह सौ.कां. शीतलजी सुपुत्री श्री पदमचन्दजी धोका, मैसूर के साथ सम्पन्न होने पर।

3100/- श्रीमती रतनजी, प्रशान्तजी कर्णावट, जयपुर, स्व. श्री मोतीचन्दजी कर्णावट की पुण्य स्मृति में।

2500/- श्री ज्ञानचन्द जी धारीवाल, अपने सुपुत्र आशीष संग मोनाली के शुभ विवाह के उपलक्ष्य में।

2500/- श्री गौतम चन्द जी धारीवाल, अपने सुपुत्र गौरव संग शारदा के शुभ विवाह के उपलक्ष्य में।

2100/- श्री सुमेरसिंहजी गलुण्डिया, जयपुर, श्री शिवसिंहजी गलुण्डिया का 2 मार्च, 2013 को देहावसान हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में।

2100/- श्री महिपालचन्द जी भण्डारी, जोधपुर, श्रीमती सोहनकंवर जी भण्डारी धर्मपत्नी स्व. श्री उत्सवचन्द जी भण्डारी का 31 जनवरी, 2013 को देहावसान होने पर उनकी पुण्य स्मृति में।

2100/- श्रीमती तनुजाजी समदडिया, जयपुर सप्रेम भेंट।

2000/- श्री चंचलमलजी कोकिलाजी खींवसरा, जयपुर सप्रेम।

1101/- श्री प्रकाशचन्द जी मुथा, अपने सुपुत्र चि. भरत (सी.ए) का शुभ विवाह सौ. कां. पायल (एमबीए) सुपुत्री श्री सुरेशचन्द जी गांधी के साथ सानन्द सम्पन्न होने के प्रसंग पर।

1100/- श्री केवलचन्दजी, पुखराजजी, देवेन्द्रजी जैन, जयपुर, श्रीमती मूर्तिदेवीजी धर्मपत्नी स्व. श्री मूलचन्दजी जैन (जरखोदा वाले) का देहावसान हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

1100/- श्रीमती उषा जी एवं नरेन्द्रकुमार जी सिंघवी, जोधपुर, चि. धीरज का शुभ विवाह सौ. कां. आभा के संग 28 जनवरी, 2013 को सम्पन्न होने पर।

1100/- श्री मीठालाल जी 'मधुर', बालोतरा, सुपौत्री सुश्री रैना छाजेड़ सुपुत्री श्रीमती अमिता-जितेन्द्र कुमार जी के B.Tech, M.B.A. के पश्चात् नियुक्ति होने पर।

1100/- श्री महावीरचन्द जी सुनयना जी मेहता, जोधपुर, अपने पुत्र श्री प्रवीण जी के गृहप्रवेश एवं सुपौत्र अक्षय के जन्मदिवस पर।

1100/- श्री हरीशजी, मयंकजी मेहता, चेन्नई, चि. नमनजी सुपुत्र श्री हरीशजी मेहता का शुभ विवाह सौ.कां. पूजाजी सुपुत्री श्री सोमचन्दजी नाहर के संग सुसम्पन्न होने पर।

1100/- श्री चन्द्रपालजी महनोत (सरवाड़ वाले), मातुश्री श्रीमती चाँदकँवरजी का दिनांक 20 फरवरी, 2013 को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में।

1100/- श्रीमती विद्याजी कोठारी, जयपुर, स्व. श्री शान्तिचन्दजी कोठारी की पुण्य स्मृति में।

1100/- श्री रघुवीरजी जैन, महारानी फार्म-जयपुर, सुपुत्र श्री रीतेशजी जैन के अपैक्स बैंक, जयपुर में सहायक प्रबन्धक के पद पर पदोन्नत होने की खुशी में।

1100/- श्री हुकमीचंदजी, अनिल कुमारजी, ब्यावर-अजमेर, श्रीमती कंचन कँवरजी धर्मपत्नी स्व. मंगलचन्दजी मेहता का 1 मार्च 2013 को स्वर्गवास होने की पुण्यस्मृति में।

1100/- श्री गौतमचन्द जी सुपुत्र स्व. पूनमचन्दजी चोरडिया, जयपुर, साध्वी प्रमुखा महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा., महासती श्री रतनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा के दर्शन-वन्दन के उपलक्ष्य में।

1100/- श्री नौरतनचन्द जी, रजत जी ओस्तवाल, पीपाड़शहर, श्रुति ओस्तवाल का शुभविवाह चि. शशांक सुपुत्र श्रीमती रेणूजी-राजेश जी कटारिया, इंदौर के साथ सम्पन्न होने के प्रसंग पर।

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर को साभार प्राप्त

5000/- श्री जौहरीमल जी, गजराज जी छाजेड, जोधपुर।

अ.भा.श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड को साभार प्राप्त

50000/- श्री एस. प्रतापचन्द जी वैद-मंडावली, चेन्नई, श्राविकारत्न श्रीमती पारसकंवर जी भण्डारी धर्मपत्नी श्री इन्दरचन्द जी भण्डारी के 26 दिवसीय संथारे के साथ समाधिमरण प्राप्त करने पर।

मंडल के सत्साहित्य प्रकाशन हेतु साभार प्राप्त

30000/- श्री सोहनलालजी, बुधमलजी बाघमार, मैसूर, श्री बुधमलजी-श्रीमती चंचलदेवीजी बाघमार के वैवाहिक जीवन की रजत जयन्ती के उपलक्ष्य में पुस्तक नैतिकता के विकास के नवीन संस्करण के प्रकाशन हेतु।

30000/- श्री राजेन्द्रजी कोठारी, अजमेर, पुस्तक 'दुःख रहित सुख' के नवीन संस्करण के प्रकाशन हेतु।

21000/- श्री बसंतीलालजी, रंगलालजी डांगी, जामनेर, पूज्य भाईसाहब श्री पीरूलालजी गणपतलालजी डांगी (बोराना वाले), रायपुर की द्वितीय पुण्य स्मृति में।

गजेन्द्र निधि द्वारा संचालित आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

(अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा क्रियान्वित)

दानदाता एवं दान एकत्रित करने वालों की सूची

500000/- श्री मोफतराज जी मुणोत, मुम्बई, पूज्य आचार्यश्री हीराचन्द्र जी म.सा. एवं पंडितरत्न उपाध्यायश्री मानचन्द्र जी म.सा. के दीक्षा अर्द्धशती वर्ष के उपलक्ष्य में।

50000/- श्री पदमचन्द जी कोठारी, अहमदाबाद, पूज्य आचार्यश्री हीराचन्द्र जी म.सा. एवं पंडितरत्न

उपाध्यायश्री मानचन्द्र जी म.सा. के दीक्षा अर्द्धशती वर्ष के उपलक्ष्य में।

50000/- श्री ज्ञानेन्द्र जी बाफना एवं परिवार, जोधपुर, पूज्य आचार्यश्री हीराचन्द्र जी म.सा. एवं पंडितरत्न उपाध्यायश्री मानचन्द्र जी म.सा. के दीक्षा अर्द्धशती वर्ष के उपलक्ष्य में।

24000/- श्री चिमनलाल जी, आशीष जी डांगी, मुम्बई, पूज्य आचार्यश्री हीराचन्द्र जी म.सा. एवं पंडितरत्न उपाध्यायश्री मानचन्द्र जी म.सा. के दीक्षा अर्द्धशती वर्ष के उपलक्ष्य में।

24000/- श्री अमरचन्द जी सांड, विजयनगर, पूज्य आचार्यश्री हीराचन्द्र जी म.सा. एवं पंडितरत्न उपाध्यायश्री मानचन्द्र जी म.सा. के दीक्षा अर्द्धशती वर्ष के उपलक्ष्य में।

12000/- श्रीमती सुधाजी जैन सुपुत्री श्री ज्ञानेन्द्र जी बाफना, जोधपुर, आचार्यश्री हीराचन्द्र जी म.सा. एवं पंडितरत्न उपाध्यायश्री मानचन्द्र जी म.सा. के दीक्षा अर्द्धशती वर्ष के उपलक्ष्य में।

12000/- श्री प्रकाश जी, सुभाष जी, जवाहरलाल जी मुथा, गुलेजगढ़ वाले, अहमदनगर, पूज्य आचार्यश्री एवं उपाध्यायश्री के दीक्षा अर्द्धशती वर्ष के उपलक्ष्य में।

12000/- श्री रंगरूपमल जी चोरडिया, चेन्नई, की ओर से।

छात्रवृत्ति-योजना में इच्छुक दानदाता एक छात्र के लिए 12000/- रु. अथवा उनके गुणक में जितनी छात्रवृत्तियाँ देना चाहें तदनुसार दानराशि 'गजेन्द्र निधि आचार्य श्री हस्ती स्कॉलर शिप फण्ड' योजना के नाम चैक या ड्राफ्ट(Donations to Gajendra Nidhi are exempted u/s 80G of IncomeTax Act 1961) से निम्नांकित पते पर भेजने का कष्ट करें- *श्री अशोक जी कवाड़,* 33, *Montieth Road, Egmore, Chennai-600008 (Mob. 9381041097)*

संशोधन

गतमाह पृष्ठ सं. 124 पर प्रकाशित साभार-प्राप्त-स्वीकार सूची में श्री बादलचन्द जी सुनीलकुमार जी बोहरा जोधपुर वाले 'चेन्नई' के स्थान पर 'मुम्बई' पढ़ा जाए एवं इसी पृष्ठ पर श्री महावीरप्रसाद जी जैन (जुवाड़ वाले)के साभार को '5501' के स्थान पर '501' रुपये की राशि पढ़ी जाय।

आगामी पर्व

चैत्र शुक्ला 7 बुधवार	**17.04.2013**	**आयंबिल ओली प्रारम्भ**
चैत्र शुक्ला 8 गुरुवार	**18.04.2013**	**अष्टमी**
चैत्र शुक्ला 13 बुधवार	**24.04.2013**	**भगवान महावीर जन्म कल्याणक**
चैत्र शुक्ला 15 गुरुवार	**25.04.2013**	**पक्खी व आयंबिल ओली पूर्ण**
वैशाख कृष्णा 8 गुरुवार	**02.05.2013**	**अष्टमी**
वैशाख कृष्णा 14 बुधवार	**08.05.2013**	**चतुर्दशी**
वैशाख कृष्णा 30 बुधवार	**09.05.2013**	**पक्खी**
वैशाख शुक्ला 3 सोमवार	**13.05.2013**	**अक्षय तृतीया (वर्षीतप पारणा) एवं आचार्य पूज्य श्री कजोड़ीमल जी म.सा. की134 वीं पुण्य तिथि**
वैशाख शुक्ला 8 शनिवार	**18.05.2013**	**आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा. की 22 वीं पुण्यतिथि**

पर्युषण पर्वाराधना हेतु स्वाध्यायी आमन्त्रित कीजिए

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर विगत 67 से भी अधिक वर्षों से सन्त-सतियों के चातुर्मासों से वंचित गाँव/शहरों में 'पर्वाधिराज पर्युषण पर्व' के पावन अवसर पर धर्माराधन हेतु योग्य, अनुभवी एवं विद्वान् स्वाध्यायियों को बाहर क्षेत्र में भेजकर जिनशासन एवं समाज की महती सेवा करता आ रहा है। इस वर्ष भी उन क्षेत्रों में जहाँ जैन सन्त-सतियों के चातुर्मास नहीं हैं, स्वाध्यायी बन्धुओं को भेजने की व्यवस्था है। इस वर्ष **पर्युषण पर्व 02 से 09 सितम्बर 2013** तक रहेंगे। अतः देश-विदेश के इच्छुक संघ के अध्यक्ष/मंत्री निम्नांकित बिन्दुओं की जानकारी के साथ अपना आवेदन पत्र दिनांक **30 जुलाई 2012** तक इस कार्यालय को अवश्य प्रेषित करने का श्रम करावें। पहले प्राप्त आवेदन पत्रों को प्राथमिकता दी जायेगी।

1. गांव/शहर का नाम......................जिला.............प्रान्त..............
2. श्री संघ का नाम व पूरा पता...
3. संघाध्यक्ष का नाम, पता मय फोन नं...
   ....
4. संघ मंत्री का नाम, पता मय फोन नं..
   ....
5. संबंधित जगह पहुंचने के विभिन्न साधन..
   ....
6. समस्त जैन घरों की संख्या...
7. क्या आपके यहाँ धार्मिक पाठशाला चलती है?..................................
8. क्या आपके यहाँ स्वाध्याय का कार्यक्रम नियमित चलता है?......................
9. पर्युषण सेवा संबंधी आवश्यक सुझाव...
10. अन्य विशेष विवरण...

आवेदन करने का पता-संयोजक/सचिव, श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, प्रधान कार्यालय-घोड़ों का चौक, जोधपुर- 342001 (राज.) फोन नं. 0291-2624891, फैक्स- 2636763, मो.-98280-32215 (संयोजक), 94610-13878 (सचिव), 9460081112 (का. प्रभारी) ,ईमेल-**swadhyaysanghjodhpur@gmail.com**

विशेष- दक्षिण भारत के संघ अपनी मांग श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ शाखा चेन्नई 24/25, **Basin Water Works Street,Sowcarpet, Chennai-600079** के पते पर भी भेज सकते हैं। सम्पर्क सूत्र- श्री सुधीर जी सुराणा, फोन नं. 09380997333 (मोबाइल)044-25295143 (स्वाध्याय संघ)

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

क्रोध पर विजय प्राप्त करनी हो तो क्षमा धारण करें।

– आचार्यश्री हस्ती

जोधपुर में प्लॉट, मकान, जमीन, फार्म हाउस खरीदने व बेचने हेतु सम्पर्क करें।

पद्मावती

डेवलपर्स एण्ड प्रोपर्टीज

महावीर बोथरा 09828582391

नरेश बोथरा 09414100257

292, सनसिटी हॉस्पिटल के पीछे, पावटा, जोधपुर 342001 (राज.)

फोन नं. : 0291-2556767

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

अहंकार की तुष्टि ही सबसे बड़ी विकृति है।
- आचार्य श्री हीरा

C/o CHANANMUL UMEDRAJ
BAGHMAR MOTOR FINANCE
S. SAMPATRAJ FINANCIERS
S. RAJAN FINANCIERS

 # 218, Ashoka Road, Lashkar Mohalla, Mysore-570001 (Karanataka)

With Best Compliments from :

C. Sohanlal Budhraj Sampathraj Rajan
Abhishek, Rohith, Saurav, Akhilesh Baghmar

Tel. : 821-4265431, 2446407 (O)
Mo. : 9845126407 (B), 9845580407 (S), 9845113334 (R)

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

सामायिक वह महती साधना है, जिसके द्वारा जन्म-जन्मान्तरों के संचित कर्म-मल को नष्ट किया जा सकता है।

BALAJI AUTOS

(Mahindra & Mahindra Dealers)
618, 619, Old No. 224, C.T.H. Road
Padi, Mannurpet, Chennai - 600050
Phone : 044-26245855/56

BALAJI HONDA

(Honda Two Wheelers Dealers)
570, T.H. Road, Old Washermenpet, Chennai - 600021
Phone : 044-45985577/88
Mobile : 9940051841, 9444068666

BALAJI MOTORS

(Royal Enfield Dealers)
138, T.H. Road, Tondiarpet, Chennai - 600081
Maturachaiya Shelters,
Annanagar
Mobile : 9884219949

BHAGWAN CARS

Chennai - 600053
Phone : 044-26243455/66

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

With Best Compliments from :

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

Parasmal Suresh Kumar Kothari

Dhapi Nivas, 23, Vadamalai Street,
Sowcarpet, Chennai - 600079
Phone : 044-25294466/25292727

Gurudev

SURANA™
yes, the best TMT RE-BARS

DRI Plant

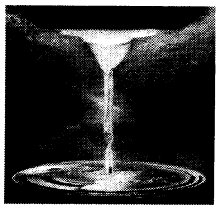
Electric Arc Furnace

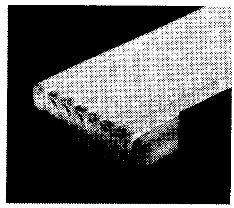
Billets

Rolling Mill

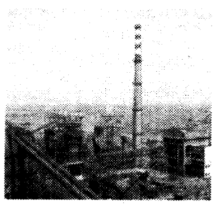
Captive Power Plant

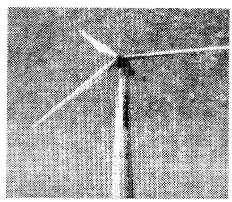
Windmill

With best wishes from

ISO 9001-2008

SURANA INDUSTRIES LIMITED

INTEGRATED STEEL PLANT

MANUFACTURE OF TMT BARS AND ALL KIND OF ALLOY STEEL

29, Whites Road, II Floor, Royapettah, Chennai 600 014/ Ph : 044-28525127 (3 lines) 28525596. Fax: 044-28521143

Email: steelmktg@suranaind.com / www.surana.org.in

STEEL I POWER I MINING

।। श्री महावीराय नमः ।।

हस्ती-हीरा जय जय ! हीरा-मान जय जय !

छोटा सा नियम धोवन का।
लाभ बड़ा इसके पालन का।।

अखण्ड बाल ब्रह्मचारी चारित्र चूड़ामणि, भक्तों के भगवान् 1008
श्री हस्तीमल जी म.सा. के चरणों में हृदय की असीम आस्था से समर्पण
उनके अनमोल खजाने के हीरे-मोती जन-जन के तारणहार
पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा.,
पण्डित रत्न उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा.
एवं समस्त
रत्नाधिक साधु साध्वी मण्डल
के चरण कमलों में भावभरा कोटिशः वन्दन एवं समर्पण...

OUR HUMBLE SALUTATIONS TO THE MOST NOBLE SOULS

PRITHIVIRAJ PREM KUMAR KAVAD
690, Trunk Road, Poonamallee, Chennai - 600 056
Ph. 044-26272196 Mob. : 93810-07273

MANGILAL HARISH KUMAR KAVAD
GURU HASTI THANGA MAALIGAI
(JEWELLERS & BANKERS)
5, Car Street, Poonamallee, Chennai-600 056
Ph. : 044-26272609 Mob. : 95-00-11-44-55

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

प्यास बुझाये, कर्म कटाये
फिर क्यों न अपनायें
धोवन पानी

Narendra Hirawat & Co.

Flat No. 1, Building No. 2, Navjeevan Society,
Senapati Bapat Marg, Matunga (West), MUMBAI-400 016

Trin-Trin

Matunga Office : 022-24370713, 24380713, 66669707
Opera House Office : 022-23669818
Mobile : 09821040899

गजेन्द्र निधि द्वारा संचालित

आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

(संरक्षक – अ.भा.श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ)

अपने विचारों को दे नया आयाम.... 50वें दीक्षा वर्ष के पावन प्रसंग पर शुभ कार्य की करें शुरुआत.....

आचार्य प्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. एवं पंडित रत्न उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. के दीक्षा अर्द्धशती के शुभ अवसर पर छात्रवृत्ति योजना में 50,000/- रुपये या एक छात्र के लिए 12,000/- रुपये अथवा उनके गुणक में छात्रवृत्ति राशि का अतिशीघ्र अर्थ सहयोग करावें।

ज्ञान का एक दीप जलाइये, सहयोग के लिए आगे आइए
दीक्षा अर्द्धशती वर्ष में लाभ उठाकर आनन्द पाईये

अनन्य गुरुभक्त, जो भी इस योजना में अर्थ सहयोग करना चाहते हैं, वे चैक, ड्राफ्ट या नकद राशि द्वारा जमा या भेज सकते हैं। कोष का खाता विवरण इस प्रकार है–

A/c Name - Gajendra Nidhi Acharya Hasti Scholarship Fund
A/c No. - 168010100120722
Bank Name & Address - AXIS BANK LTD. Anna Salai, Chennai (TN)
IFSC Code - UTIB0000168
PAN No. AAATG1995J
Note : Donation to Gajendra Nidhi are exempted u/s 80G of Income Tax Act 1961.

सहयोग के लिए चैक या ड्राफ्ट कार्यालय के इस पते पर भेजें–

B.BUDHMAL BOHRA
No.-53,Erullappan street, Sowcarpet, Chennai - 600079 (T.N.)
Telefax No - 044-42728476

अधिक जानकारी एवं सहयोग करने के लिए सम्पर्क करें–

Name	Place	Contact No.	Name	Place	Contact No.
Ashok Kavad	Chennai	9381041097	Sumatichand Mehta	Pipar	9414462729
Mahendra Surana	Jodhpur	9309087760	Budhmal Bohra	Chennai	9444235065
Rajkumar Golecha	Pali	9829020742	Manoj Kankaria	Jodhpur	9414563597
Praveen Karnavat	Mumbai	9821055932	Kushalchand Jain	Sawai Madhopur	9460441570
Jitendra Daga	Jaipur	9829011589	Mahendra Bafna	Jalgaon	9422773411
Harish Kavad	Chennai	9500114455	Manish Jain	Chennai	9543068382

जय गुरु हस्ती

जय गुरु हीरा जय गुरु मान

अगर व्यक्ति प्रभु के मार्ग पर चले तो कहीं भी अशान्ति नहीं हो सकती।

- आचार्य श्री हीरा

सांखला परिवार की ओर से निवेदन

हम :

चौबीसों तीर्थंकरों के चरण
कमलों पर मस्तक रखते हैं
और
विनम्रता तथा गौरव के साथ
जाहिर करते हैं कि
"जिनवाणी" के
उत्कर्षदायी तथा पुण्यात्मक कार्यों में
हमारा सहर्ष
सदैव सहकार रहेगा।

मदन मोहन सांखला,
सौ. हेमलता मदन सांखला
मेहुल मदन सांखला
सौ. प्रणिता मेहुल सांखला और
बेबी बुणम मेहुल सांखला

MAXHEAL

MAXHEAL Group of Companies

Jai Guru Hasti

Jai Guru Heera *Jai Guru Maan*

शाश्वत सुख के लिए प्रतिपल प्रयत्न करने वाले जीव मुमुक्षु कहलाते हैं। ये जीव साधक भी हो सकते है और श्रावक भी ।

- आचार्य श्री हीरा

BHANSALI GROUP

Dhanpatraj V. Bhansali

BHANSALI DEVELOPERS

Sharda Bhawan, 2nd Floor, Nandapatkar Road,
Vile Parle (E), Mumbai - 400 057
Tel. : (O) 26185801 / 32940462
E-MAIL : bhansalidevelopers@yahoo.com

JAI GURU HASTI JAI GURU HEERA JAI GURU MAAN

प्यास बुझाये, कर्म कटाये फिर क्यों न अपनायें धोवन पानी

With best compliments from :

SOHANLAL UMEDRAJ SURENDER HUNDIWAL

S.UMEDRAJ JAIN (HUNDIWAL)
098407 18382
2027 'H' BLOCK 4th STREET,12TH MAIN ROAD,
ANNA NAGAR, CHENNAI-600040
044-32550532

BRANCHES

APPOLO BRIGHT STEELS PVT LTD.
S.P.59, 3 rd MAINROAD
AMBATTUR ESTATE CHENNAI-600058
044-26258734, 9840716053, 98407 16056
FAX: 044-26257269
E-MAIL: appolobright@yahoo.com

APPOLO CORRUGATORS PVT LTD.
NO.400 NORTH PHASE, SIDCO INDUSTRIAL ESTATE,
AMBATTUR CHENNAI-60098
FAX: 044-26253903, 9840716054
E-MAIL:appolocorrugators@yahoo.com

SAPNA PACKAGING INDUSTRIES
NO.410 NORTH PHASE INDUSTRIAL ESTATE
AMBATTUR, CHENNAI-600098
044-26241041

PENINSULAR PACKAGINGS
NO.25 SIDCO INDUSTRIAL ESTATE
AMBATTUR CHENNAI-600098
044-26250564

आर.एन.आई. नं. 3653/57 डाक पंजीयन संख्या RJ/JPC/M-21/2012-14
मुद्रण तिथि दिनांक 5 से 8 अप्रेल, 2013
वर्ष : 71 ★ अंक : 04 ★ मूल्य : 10 रु.
डाक प्रेषण तिथि 10 अप्रेल, 2013 ★ चैत्र, 2069

।।जय गुरु हीरा।। ।।जय गुरु मान।।

परीक्षा दिनांक 23.05.2013

स्वप्निका

खुली किताब परीक्षा
OPEN BOOK EXAM.

परीक्षा समय दोपहर 12.00 से 12.45 तक

:: निवेदन ::

1. स्वप्निका की **23 मई, 2013 दोपहर 12.00 बजे से 12.45** के मध्य खुली किताब प्रतियोगिता रखी गई है। जो भी महानुभाव इस परीक्षा में भाग लेना चाहें वे **30 अप्रेल, 2013** तक निम्नलिखित 5 व्यक्तियों में से किसी एक के पास अपना रजिस्ट्रेशन करा, **रजिस्ट्रेशन नं.** अवश्य प्राप्त करें ।

I. नमन मेहता - 09414116766
II. तरूण जैन - 09166190574
III. डॉ. मंजुला बम्ब - 09314292229
IV. उर्मिला बोथरा - 09314501856
V. मीना गोलेछा - 09314466039

2. परीक्षा में स्वयं के उपयोग के लिये ब्ल्यू (Blue) पेन साथ में लावें। पेंसिल का उपयोग वर्जित है।

:: नियम ::

1. प्रत्येक प्रश्न का उत्तर स्वप्निका में से ही देना है ।
2. परीक्षा-स्थल पर अपनी-अपनी स्वप्निका साथ में लाना अनिवार्य है।
4. रजिस्ट्रेशन नं. प्राप्त करने के पश्चात् ही परीक्षा स्थल में प्रवेश मिलेगा अन्यथा परीक्षा के मनोवांछित फल से वंचित रहना होगा।

:: निर्णय ::

1. इस खुली किताब परीक्षा में भाग लेने वाले प्रत्येक प्रतिभागी को पुरस्कार प्रदान किया जायेगा।
2. प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले को ₹ 11,000, द्वितीय स्थान प्राप्तकर्ता को ₹ 9,000 एवं तृतीय स्थान प्राप्तकर्ता को ₹ 5,000 की सम्मान राशि प्रदान की जायेगी।

:: नोट ::

स्वप्निका की मुख्य परीक्षा **10 नवम्बर, 2013 को दोहपर 12.00 से 2.00 बजे** के मध्य आयोजित होगी । इसके **अविस्मरणीय, अद्वितीय, अलौकिक एवं अचम्भित** पुरस्कार नियत/उचित समय पर ही घोषित किये जायेंगे।

विज्ञापन सौजन्य : कल्पतरू ग्रुप

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक - विनय चन्द डागा द्वारा दी डामयण्ड प्रिंटिंग प्रेस, जौहरी बाजार, जयपुर से मुद्रित व सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर - 302003 से प्रकाशित । सम्पादक - डॉ. धर्मचन्द जैन